विदेह

मैथिली पद्य २००९-१०

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (http://www.videha.co.in/)

१५ जनबरी २०१० वर्ष:३ मास:२५ अंक ५०

विदेह: सदेह:३ (विदेह ई पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकक दस प्रतिशत चुनल रचनाक संग)

दाम: १०० टाका (व्यक्तिगत क्रय लेल) आ $40 (for institutions and library India and Abroad)

सम्पादक- गजेन्द्र ठाकुर

सहायक सम्पादक- श्रीमती रश्मि रेखा सिन्हा, श्री उमेश मंडल

भाषा सम्पादन- श्री विद्यानन्द झा आ श्री नागेन्द्र कुमार झा

ISBN: 978-93-80538-08-2

(c)२००८-१०.सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन। रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@videha.com कैँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित रचना प्रकाशित कएल जाइत अछि। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

(c) २००४-१० सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। रचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किंवा आर्काइवक उपयोगक अधिकार किनबाक हेतु ggajendra@videha.com पर संपर्क करू।

© श्रुति प्रकाशन- विदेह:सदेह:३-प्रिंट वर्सन- DISTRIBUTORS: AJAY ARTS, 4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, DARYA GANJ, New Delhi-110002 Ph. 011-23288341, 09968170107 Website: http://www.shruti-publication.com e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

http://www.videha.co.in/ एहि साइटकेँ प्रीति झा ठाकुर, मधूलिका चौधरी आ रश्मि प्रिया द्वारा पाक्षिक रूपेँ डिजाइन कएल जाइत अछि।

(कार्यालय प्रयोग लेल)

विदेह:सदेह:१ (तिरहुता/ देवनागरी)क अपार सफलताक बाद विदेह:सदेहक आगाँक अंक लेल वार्षिक/ द्विवार्षिक/ त्रिवार्षिक/ पंचवार्षिक/ आजीवन सद्स्यता अभियान।

ओहि बर्खमे प्रकाशित विदेह:सदेहक सभ अंक/ पुस्तिका पठाओल जाएत। नीचाँक फॉर्म भरू:-

विदेह:सदेहक देवनागरी/ वा तिरहुताक सदस्यता चाही: देवनागरी/तिरहुता सदस्यता चाही: ग्राहक बनू (कूरियर/रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित):-

बर्ख	YEAR	INDIA	NEPAL	Abroad
एक	(२०१०ई.)	रु.२००/-	INR ६००/-	US$25
दू	(२०१०-११ ई.)	रु.३५०/-	INR १०५०/-	US$50
तीन	(२०१०-१२ ई.)	रु.५००/-	INR १५००/-	US$75
पाँच	(२०१०-१३ ई.)	रु.७५०/-	INR २२५०/-	US$125
आजीवन (२००९ आ ओहिसँ आगाँक अंक)		रु.५०००/-	INR १५०००/-	US$750

हमर नाम:

हमर पता:

हमर ई-मेल:

हमर फोन/मोबाइल नं.:

हम Cash/MO/DD/Cheque in favour of AJAY ARTS payable at DELHI दऽ रहल छी। वा हम राशि Account No. 21360200000457 Account holder (distributor)'s name: Ajay Arts, Delhi, Bank: Bank of Baroda, Badli branch, Delhi क खातामे पठा रहल छी।

अपन फॉर्म एहि पतापर पठाऊ:- shruti.publication@shruti-publication.com वा AJAY ARTS, 4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, DARYAGANJ, Delhi-1100002 Ph. 011-23288341, 09968170107, Website: http://www.shruti-publication.com

(ग्राहकक हस्ताक्षर)

विदेह

मैथिली पद्य २००९-१०

(विदेह:सदेह:३ विदेह ई-पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीछल आ सम्पादित कएल)

प्रिय पाठकगण, विदेहक नव अंक ई प्रकाशित होइत अछि पाक्षिक रूपेँ- लॉग ऑन करू http://www.videha.co.in । ई प्रिंट वर्सन माने विदेह:सदेह:३ विदेह ई-पत्रिकाक २६म (१५.०१.२००९) सँ ५०म (१५.०१.२०१०) अंक धरिक चुनल रचना (मोटा-मोटी दस प्रतिशत)क संग प्रस्तुत अछि। मुदा विदेहमे ई-प्रकाशित पाखलो (मूल कोंकणी उपन्यास तुकाराम रामा शेट आ मैथिली अनुवाद डॉ. शम्भु कुमार सिंह), ज्योति झा चौधरीक कविता संग्रह अर्चिस् आ नताशा (मैथिली चित्र-शृंखला- देवांशु वत्स) अलगसँ पुस्तकाकार प्रकाशित कएल जा रहल अछि।

विदेह द्वारा प्रारम्भ भेल मैथिली (तिरहुता आ देवनागरी) साहित्य आन्दोलनमे २००सँ बेशी लेखक जुड़ि चुकल छथि, ५० टा अंक (देवनागरी, तिरहुता आ ब्रेल तीनूमे) ई-प्रकाशित भऽ गेल अछि आ पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल विदेह आर्काइवमे राखल गेल अछि। दू टा सदेह अंक (देवनागरी आ तिरहुतामे) सेहो प्रकाशित भऽ गेल अछि। विविध विषयपर ६००० पृष्ठक नूतन मैथिली साहित्य आ ५० लाख शब्दक मैथिली कॉर्पोरा अन्तर्जालपर विश्वक सम्मुख प्रस्तुत कएल गेल अछि। ११०० पृष्ठक भोजपत्र-तालपत्रक आ अन्यान्य पत्रक पाण्डुलिपिक मिथिलाक्षरमे अंकण आ मिथिलाक्षरसँ देवनागरी लिप्यंतरण कएल गेल अछि। विदेह आर्काइवमे मात्र शाब्दिक कॉर्पोरा नहि अछि वरन् १००सँ बेशी मैथिली ऑडियो फाइल, १०० घण्टासँ बेशीक मैथिली वीडियो फाइल जाहिमे कैकटा सम्पूर्ण मैथिली नाटक सेहो अछि, आधुनिक कला, चित्रकला, छायाचित्रक संग मिथिला चित्रकलाक फोटो आ पी.डी.एफ. रूपमे सएसँ बेशी मैथिली पोथी सेहो देखबा, पढ़बा आ डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। संगमे बच्चा सभक साहित्य आ कार्टून सभ सेहो निर्मित आ प्रदर्शित कएल गेल अछि आ पढ़बा लेल आ डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी उपन्यास- सहस्त्रबाढ़नि (हमर पोथी कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक मे संकलित हमर उपन्यास) सेहो प्रिंट रूपमे आबि गेल अछि। मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक मैथिलीमे संस्कार,

विधि-व्यवहार आ श्रमगीत विदेह ऑडियो आ वीडियोमे राखल गेल अछि। मैथिलीक लेल भाषा सम्पादन पाठ्यक्रमकेँ अन्तर्जालक विदेहक ३००० सँ बेशी सदस्य द्वारा अन्तिम रूप सेहो प्रदान कएल गेल अछि। मिथिलाक्षरक यूनीकोड आवेदनमे विदेहक योगदानकेँ आवेदनकर्ता द्वारा आवेदनमे वर्णित कएल गेल अछि।संगहि विदेह आर्काइवक आधारपर यूनीकोडमे २००८ सँ पोथीक प्रकाशन शुरु भेल (नचिकेताक नो एण्ट्री:मा प्रविश पहिल यूनीकोड प्रिंट मैथिली पोथी छी) मुदा हिन्दीमे पहिल यूनीकोड प्रिंट पोथी फरबरी २०१० मे वाणी प्रकाशनसँ आएल। संगहि हमर लिखल सहस्त्रबाढ़नि जे मैथिलीक पहिल ब्रेल पुस्तक अछि (ISBN:978-93-80538-00-6) २००९ मे रिलीज भेल आ पुअर होम दरभंगा स्थित ब्लाइन्ड स्कूलकेँ पठाओल गेल अछि। मुदा ई तँ मात्र प्रारम्भ अछि।

एहि खण्डमे कुछु चुनल *मैथिली पद्य (विदेह:सदेह:३ विदेह ई-पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीछल आ सम्पादित कएल)* देल जा रहल अछि, आ एहिमे कविता-गीत-अकविता-गद्य-कविता सभटा अछि आ एतए मैथिलीमे दोसर भाषासँ अनूदित पद्य सेहो अछि।

सूचना: पंकज पराशर उर्फ अरुण कमल उर्फ डगलस केलनर उर्फ उदयकान्त उर्फ ISP 220.227.163.105, 164.100.8.3, 220.227.174.243 उर्फ....केँ डगलस केलनर आ अरुण कमलक रचनाक चोरिक पुष्टिक बाद (http://www.box.net/shared/75xgdy37dr) बैन कए विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनसँ निकालि देल गेल अछि।केलनरक संदेश नीचाँ अछि। विशेष जानकारी मैथिली *प्रबन्ध:निबन्ध:समालोचना २००९-१०* (विदेह : सदेह : २ (विदेह ई-पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीछल) मे देल गेल अछि।

kellner@ucla.edu" <kellner@ucla.edu.Dear Gajendra
thanks for the detective work. was there a response?
best regards, Douglas Kellner, Philosophy of Education Chair, Social Sciences and Comparative Education, University of California-Los Angeles, Box 951521, 3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax 310 206 6293, Phone 310 825 0977

-गजेन्द्र ठाकुर

अनुक्रम

महेन्द्र कुमार मिश्र

पूर्व सांसद, नेपाल

चेला चमच आ दलाल राखू अपनेटा संग
सेबाक सुविधा मिलत जनतामे रहत रंग
जनतमे रहत रंग चम्चा बहुत जरुरी
चम्चा जौं होए संग होएत सभ आशा पुरी
चर्चा अछि ओहि महा पुरुषक जे रामक वरण करए
जनता सबहक बात नहि बूझए अपने खुट्टा धरए
अपने खुट्टा धरै विवेकक रति नहि लेस
संवेदनाक स्वर कतौ नहि, जड़ै रहए मधेश
गिरीजा माधव आ हो प्रचण्ड, किएक चाही लोकतन्त्र।
लोकतन्त्र आब लोप भेल भोग तन्त्र ला लड़ू
जनता सबहक हक-हीत की, अपन झोड़ा भरु
अपन भरु नहि तँ पछतावा होएत
वैर विरोधक चिन्ता नहि अपन परार कतै जाएत
जुड़ल रहू एहि जोगारमे अपन परिजन नहि छुटए
लुटब अछि संस्कारि हमर लुइट सकी से लुटए
गाथ कथमैप नहि छोड़ू धएने रहू झोड़ा
पात्र अपने वैह लाएक छी जेना सल्हेसक घोड़ा
मंत्री नहि महामंत्री एहि धरतीक द्रुय पुत
शरमसँ मिथिला कानि रहल, देख हिनक करतुत
देख हिनक करतुत जनता धिक्कारि रहल अछि
लोभ लालचमे फसल नेताकेँ आब जनता झटकारि रहल अछि
संविधान सभा निर्वाचनमे देखल एहन ताल
जनतासभ आराम करैछ, नेता अछि बेहाल
पैसा सबहक लोभमे फसल, बिकाएल मधेशी नेता
टेण्डर भरि भरि मधेशक टिकट एतऽ देता
गुन्डा बदमास आ उचक्का पौलक मधेशक टिकट
जेकरा विरोधमे मरल पचासो वैह मांग सिटत
आबहु जागू, जागू औ मधेशी भैया
जिनगी भरि पछतावि रहब, करब हाय दैया

रोशन जनकपुरी

चप्पल आ सड़क

तहिया
सडक गर्म कएने रहै
ओ चप्पल सभ
जकर चुल्हा तँ रहै ठंढा
आ पेट रहै खाली,
अपन चुल्हाक पक्षमे
चप्पलक चापसँ
आ ठंढा चुल्हाक तापसँ
जनमलै एकटा ज्वालामुखी
आ एकटा भूकम्प,
आ हमर चप्पलवाली मायक आँखिमे
आश भरि गेल रहै
गर्म चुल्हाक
आ एखन,
चप्पल सभ तँ अखनो सड़केपर अछि
मुदा जुत्ता सभ
जे तहिया चप्पल संगे सड़केपर दौड़ैत रहै,
दिशा बदलि लेने आबि
हमर चप्पल वाली मायक पेट
अखनो खालिए अछि
चुल्हा अखनो ठंडे अछि
आ हम्मर
चप्पलवाली मायक आँखिमे
आक्रोश भरि गेल अछि
तैं,
आक्रोशक गीत
लिखाइते रहबाक चाही
अग्नीत गीत गबैते रहबाक चाही
आ चप्पल सभकेँ
सड़क गर्म करिते रहबाक चाही ।

ओम कुमार झा

थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर

रे खसवादी तोँ बाजल छँ मधेशिया होइत अछि कायर
मुदा मधेशियाक जोस देखि थरथर काँपि रहल छौ तोहर पएर।

जागि गेल छै मधेशी अपन अधिकार हथियाबऽ लेल
घर घरसँ उमरल छै मधेशी मधेशी सरकार बनाबऽ लेल

पचीस शहीदक खुन कहि रहल छै, उठ मधेशी उठ उठ
धोखा, फरेब देखा रहल छौ, गिरिजा कोइराला उँट ।

हिरण्य कश्यप प्रचण्डसँ बाजल ओ बन्दुक उठाओल मधेशीकँ मारऽ लेल
मधेशीक बच्चा बच्चा प्रहलाद बनि खनत गड़दा ओकरो गारऽ लेल

मधेशक भुमिसँ आन्दोलनक ज्वाला धधकल छै
जे आओत ओकरा मिझाबऽ ओ ओहि जरि मरलै

झुकल गिरजा, झुकल प्रचण्ड झुकल मधेशी दलाल सभ
पएर पकड़ि गिरगिरेनै गिरजा दलाल सभ ।

बहुत खएले मधेशीक कमाइ आब नहि तोरा पचतौ रे
मधेशी अप्पन हिस्सा नेने आब तोरा नहि छोड़तौ रे।

दू सए अड़तीस बरिससँ मधेशियाकँ वड़ ठकले रे
छद्म रुप तोहर देखार भऽ गेलौ आब तोँ नहि बचबे रे ।

लोकतंत्रक नकाब लगा राक्षसी रुप तों नुकओले रे
हमरे घर फुटाकऽ हमरे भाइकँ बंधुआ बहिया बनौले रे

खबरदार आब सुने नङटा आब नहि चालि चलतौ रे
अप्पन अधिकार लेबऽ लेल मधेशिया सिंह दरबार बँटतौ रे ।

जनसंख्याक आधारमे चुनावी क्षेत्र लऽ छोड़बौ रे
तोहर नाक रगड़ि संघीय व्यकवस्था लऽ लेबौ रे ।

आइ मधेशीया हुनकर सुन
जन जन वजै छै एके बात
मधेशी एकता जिन्दाबाद
मधेशी एकता जिन्दाबाद।

प्रेम विदेह ललन

एकइसम सदीक नाम

अजगूत एकइसम सदी अछि कऽ रहल
होएबाक ने चाही जे सएह अछि भऽ रहल

करैत छल धनिक यौ शोषण गरीबक
गरीबे गरीबपर जुलुम आइ कऽ रहल

बदलि गेल अछि आब अपनक परिभाषा
अपन तँ अपने के घेंट अछि काटि रहल

दहेजक बेपार अछि बनल विवाह
प्रेमक नाटक आइ फैसन अछि भऽ रहल

करैत रहू मंचपर जाति पाति अंत
जातीय संगठन अछि दिन दिन बढ़ि रहल

एखने अछि अनपढ़मे भाइ इमानदारी
पढ़लहबा जिलासँ देशधरि लूटि रहल

चीउजे नै, मनुक्खो आब भेटैए नकली
नाङट उघार ललन सदी अछि भऽ रहल ।

सुदिप कुमार झा

दूटा पद्य

गामक सिमानपर फाटल दरारि
चिबाबऽ बबलगम लाबऽ कोदारि

मनमे छऽ पोसने किए गनगुआरि
बाँटि लेब मसुरी तोड़ऽ ई आरि

एक पत्र प्रेमक लिखिकऽ तँ भेजऽ
सांठब हम भार अपन आंचर पसारि

उठबऽ मानवता, छोड़ि अड़ारि
तों हमरा दुवारि हम तोड़ा दुवारि

२

पहाड़क उचाइपर सँ
एकटा गुम्बाक खिड़की दने
एकटा लड़की निचा देखैत छै
उपत्यकामे
बहुत रासे गुड्डीसभ
आकाशमे झुलुवा झूलि रहल छै
अस्तामइत सुरुजक कातमे
एकटा गुड्डी डुबकी मारैछ
धरतीकेँ चुम्मा लैत उठैछ आकाश दिस
जखन घन्टी बजै छैक
निस्तब्धतामे हेराइत
ओकर पपनी भीजि जाइत छैक
नइ जानि किए
उपर आकाशक लेल
वा निचा संसारक लेल ।

अयोध्या नाथ चौधरी

एक भ्रम जोड़ एक सत्य। बराबर दू क्षण

१

कौखन हमरा सभक मौन आक्रामक बनि जाइछ
आ विवेक सहजहि कोनो खिड़कि दऽ उड़िया गेल रहैछ तावत धरि
किछु निराश क्षणक प्रतीक्षा फेर ओकरा बजा लैछ
आ तावते ओकर काया कल्प भऽ जाइछ
सभ मनुपुत्र मोम भऽ जाइत छथि एक दू क्षणक जिनगीमे ।

कहियो चौंकल अछि अहाँक दुनू तरहत्थी?
आ तदुपरान्त किताब बनाकऽ पढ़लहुँ अछि ओकरा :
तहिए गिरह बान्हि गेल हमर बातक
निर्जीब भेल आँखिकेँ निहारैत रहि जाएब अहाँ
पलक टो टो कऽ फुसियाही आवेश करैत ।
मोने मोने गुनैत ।।

एक क्षण बाद
हाथ अपनाकेँ समेटि कऽ अहाँक माथपर चढ़िकऽ बाजत नियामकसँ
चकित छी अहाँक दुष्ट व्यवहारपर
आ ओ ओहि एक दिन सभसँ बजै छथि
भ्रम आ प्रवंचनाक कथा सएह पुछलक अछि की?
केहन टाँट सत्यक राखि देलियह अछि सोझामे
एकोबेर चुमि लैह टाँट भेल गर्दनि, आ माथ, आ मुँह
एहिना बुझबहक की
जीबैत मुस्किआइत गुलाबमे कांट ने होइछ किदन ।

करन्तमे गछारल अहाँक हीरक, मुक्ता, रुपरानी वा जे किछु
ठीके बड़ कोमल आ सुन्दर अइ
मुदा ततबे सत्य छैक विधान आ परम्परा
ततबे कटु आ अनिवार्य ।
उधियाइत विवेककें गछारिकऽ

मनुपुत्र सुखी भऽ पाएब निर्बिवाद ।
दुष्टता, भ्रम, प्रवंचना
आ एकरा सभक संज्ञामात्र
उधियाइत कोनो गैस थिक ।

२

एक परिवोधन आ शेष कविता

एक मुट्ठी अखरा बालु फँकबाक बाध्यता जतबे छोट भऽ सकैछ,
ततबे विराट आ डूबल अछि हमरा घरमे एक_एकटा सीताक आक्रोश,
आब बुझल जे सीता माने कोन दुःख ।

एकटा दृष्टान्त
आ आओर किछु नहि
मात्र एकटा निर्मम दृष्टान्त
चाहिए कऽ एहि लोककेँ, समाजकेँ
ओहि एकटाक पाछाँ सहस्त्रो कत्ले आम होइत रहै निर्विध्नक....

जीह नहि टकसैत छैक एखनि ।
एकटा दूरन्ति परम्परा किंबा रीति सहैत,
बकार बन्न केने छी हम_अहाँ आ सभ
अयाची हड़डी लुटौलनिहैं, सेहो ठीक
एकाएकी घाब बनाओल जाइत अंग अंगकैँ निर्निमेष तकैत रहू

तखनि, सभटा ठीके_ठीके
समाज चाहैए जे ओकरामे रहनिहार लोथ भऽ जाए
ओकर एक एकटा प्राणी बीत राग बनल रहए आजीव,
आ संघर्ष करैत रहए अपना गराक घेघसँ ।

अहाँ अपनाकें अपने परिबोधि लिअ एहिना
कतेक छोट_छीन जीवन सामान्य रुपैँ बितैत_बितैत
कौखन मनोरंजन हेतु आ कौखन अज्ञात, अनचेकामे
कतेक कीड़ा_फतिंगा पोसि वा पीचि देल जाइछ ।
सरिपहुँ तन्नुक अइ ई जीब । लजबिज्जी ।

कोनो ने,
ई सब कोनो बात छैक,
एतेक निश्चय राखू जे परिबोधि नहि रहल छी हम अहाँकेँ,
किएक तँ अहाँ आरो भयाक्रान्त कऽ देब
अहूँ सएह कहैत छी कहि ।
एतबे बुझि राखू जहियासँ अहाँ दृष्टान्ते बनल छी
हमरा अहाँसँ सहानुभूति अछि ।

मनुक्खक पीड़ासँ मनुक्खक सहानुभुति होइ
ककरो दूटा आँखि पनिछा जाइ
एहिसँ पैघ जीवनक कोन उपलब्धि भऽ सकैछ ?

हम किछुटा नहि कहब ।
आत्म हत्या दूबेर प्रायः नहि भऽ सकैछ ,
ई तँ महज मामुली बोध थीक
ओना अहाँक कोनो बिकल्प हमरा नीक लागत ।

जखन जीवन माने तनुक
तँ की हर्ज एकटा दृष्टान्ति बनल रही ?
ओना हम पुछबाक व्याज मात्र करैत छी ।

/

क्षणिका

प्रशांत मिश्र

हड़ाहि

एकटा हड़ाहि जे रातिमे पटकलन्हि साँए के
तोड़लन्हि चौकी
भोरे-भोर पड़ोसनीकेँ गरिअबैत कहलखिन्ह
हँ, चुप्प रह गे सत्तबरती
राँड़ी, छुच्छी, सँएखौकी

कुमार मनोज कश्यप[1]

वसंती दोहा

गेंदा-गुलाब-पलाश संग, फूलल फूल कचनार।
चिहुकय आहटपर गोरी, आबि गेला पिया द्वार॥

भरल वसंती मासमे, पिया निर्दय बसल परदेश।
अल्हड़-मस्त वसंत, फेर बढ़ा देने अछि क्लेश॥

धरतीसँ मिलनक अछि, व्याकुल भेल आकाश।
पिया विरहमे राति-दिन, पीयर पड़ल पलाश॥

रंग-अबीर-गुलालसँ, धरती भऽ गेल लाल।
गोरीक गालपर जेना, मलल चुटकी भरि गुलाल॥

एम्हर-ओम्हर मटकि रहल, पीबि कऽ भांग वसंत।
मन चंचल आइ भऽ रहल , कि योगी की संत॥

पीबि कऽ भांग बसातो आब, लागल करय उत्पात।
धूड़ा उड़ा कऽ पड़ा गेल, देमय कान ने कोनो बात॥

सखि वासंती तोँहि हुनका, जा दय दिहनु संदेश।
जी भरि मलबनि रंग हम, भेटता पिया जखन जे भेष॥

ककरा सँ मोनक व्यथा कही, बुझत के मोर टीस ।
सुनि कऽ सभ हँसबे करत, बनत के मन-मीत ॥

1 कुमार मनोज कश्यप ।जन्म-१९६९ ई मे मधुबनी जिलांतर्गत सलेमपुर गाम मे। स्कूली शिक्षा गाम मे आ उच्च शिक्षा मधुबनी मे। बाल्य काले सँ लेखन मे अभिरुचि। कैक गोट रचना आकाशवाणी सँ प्रसारित आ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित। सम्प्रति केंद्रीय सचिवालय मे अनुभाग आधकारी पद पर पदस्थापित।

नहि सुति रहब अहाँ चद्दरि तानि

अमर देशक अमर पुत्र अहाँ, भारत माताक संतान।
मातृभूमिक सजग प्रहरी, नहि सुति रहब अहाँ चद्दरि तानि॥

भगवान रामक धनुष चढ़ा लिअ, गुंजय तीनू लोक टंकार।
साम-गानसँ जग अनुनादित, गुंजय वाणीक वीणा झंकार।

भगवान कृष्णक चक्र सुदर्शन, आसुर लीलाक संहार।
शोणित-रत्तसँ आइ करक अछि, भारत माताक श्रृंगार।

असंख्य अमर बलिदानीक शोणित, के अछि करक सम्मान।
मातृभूमिक सजग प्रहरी, नहि सुति रहब अहाँ चद्दरि तानि॥

शपथ अहाँकेँ आइ मातृभूमिक, शपथ अछि भगवान के।
नहि बिसरब निज गौरव-महिमा, नहि बिसरब बलिदान के।
राजनीतिक बात ने कथमपि, बात अछि केवल शैतान के।
मातृभूमि हित रक्षामे तँ, दंश नहि कोनो टा वाण के।

दुश्मन देशक हँसि रहल अछि, करू मर्दन ओकर आइ गुमान।
मातृभूमिक सजग प्रहरी, नहि सुति रहब अहाँ चद्दरि तानि॥

आगाँमे जौं शास्त्र रहल, तँ पाछाँ शस्त्र रहल सदि काल।
शरणागतकेँ शरण देल , तँ भू-लुंठित कयल आरक भाल।
रत्त-बीजक उन्मूलनमे, उष्मित शोणित सदिखन लाल।
फन थकुचइमे तारतम्य ने, जौं मित्रहु बनय काल-व्याल।

विश्व-शांति उद्घोषक के, नहि मानय दुनियाँ कायर-निदान ।
मातृभूमिक सजग प्रहरी, नहि सुति रहब अहाँ चद्दरि तानि ॥

हल्दी-घाटीक रण-प्रांगणमे, एखनो गुंजित राणाक हुंकार।
वीर शिवाजी सिखा रहल छथि, दुर्दम्य रण-कौशल संस्कार।

वीर मराठा, राजपूतक उष्मित रत्तक अखनो प्रबल संचार।
वीर जवानक कर्मभूमि ई, भारत अछि सरिपहुँ वीरक संसार ।

जीबि कऽ मरय लोक अनुखन, मरिकय जीबय लोक महान ।
मातृभूमिक सजग प्रहरी, नहि सुति रहब अहाँ चद्दरि तानि ॥

गोपनीय अणु-अस्त्र उठा कय, देखा दिअ अपन शक्ति-अपार।
दुश्मन देशक सिहरि उठय, देखि रूप अहाँक प्रलयंकार।

कएल जौं घुसपैठ दुश्मन तँ, कय देब ओकर हम पूर्ण संहार।
दोस्तसँ दोस्ती यद्यपि अछि, दुश्मनसँ बढ़ि कऽ प्रहार।

रण-भूमिमे रण-चंडी अछि तैयार करक हेतु रण-अभियान।
मातृभूमिक सजग प्रहरी, नहि सुति रहब अहाँ चद्दरि तानि॥

बाजि गेल रण-डंक आब, तारतम्यक गुंजाइश कहाँ अछि।
राजनीतिक क्षुद्र-घाटपर पानि पियब ने अहाँक काज अछि।

युवा-वीर बढि चलू समरमे, लाज देशक अहाँक हाथ अछि।
द्रौपदीक चीर ने अपहरण हो, गांडीव-गदा अहाँक हाथ अछि।

उर्जित हो सम्पूर्ण देश, तानि दिअ आइ नव-निर्माण वितान।
मातृभूमिक सजग प्रहरी, नहि सुति रहब अहाँ चद्दरि तानि ॥

कल्पना शरण

एकटा हेरायल सखी

भरल पूरल जीवनमे किछु हेराएबाक आभास
एकटा विचित्र दु:खसँ सखी अछि उदास
फुन्गीपर जेना फुलैल एकटा असगर पलास
नोरकेँ नुकाबैत आँखि करैत हँसैक प्रयास

जीवन तँ निरन्तर बढ़ल जा रहल छल
मुदा ओकर मोन घुरि-घुरि जा बैसल
जतऽ बितौने छल अल्हड़तासँ भरल
जीवनक अनुशासनहीन मुदा उन्मुक्त पल

एक हमरे लग छल ओकर अन्तर्मन देखार
सोचलहुँ समएक फैसलाकेँ करी स्वीकार
परन्तु एहिसँ नहि दूर भेल मोनक विकार
एना तँ हम्मर संगी भेनाइ भेल धिक्कार
बीतल बात बिसरऽ ओकरो कहलिऐ जाहि दिन
उपाए सुझेनाइ जेना भऽ गेल आर कठिन

अपन हठमे दृढ़ होइत गेल दिन प्रतिदिन
की जानि ककर भरोसमे छल अभागिन
नहि कम कऽ सकलहुँ ओकर आसक्ति
कतेक क्रोध छल भरल ओकरा प्रति
खाली सोचैत रहलहुँ ओकरे दऽ दिन राति
ओ व्यस्त भऽ लिखि रहल छल प्रेमक पाँति

बिनीत ठाकुर

गीत

नित ठाम पसरल सन्नाटा चहुँ दिश उजार लागे
साँझे जँ हम घरसँ निकली असगर डर लागे

चहुँ दिश देख हरियाली नीक लगैत छल गाम
घर घरमे सुखक अनुभुति छल ई पावन धाम

के बहुरुपिया सुख सभ छिनलक सुन्ना बजार लागे

घानक रुनझुन बालासँ निकलैत छल संगीत
ओहि संगीतमे झुमि कऽ मैना गबैत छल प्रेमक गीत
आइ ओ मैना हिचुकि कऽ बाजे जिनगी जहर लागे

सुरुजक नव लाली संग उदित अछि अपन प्रीत
अखन भले करियाएल सुरुज होएत सत्यक जीत
फसल समए काल चक्रमे तँइ बसन्त पतझर लागे
के बहुरुपिया सुख सभ छिनलक सुन्ना बजार लागे

सतीश चन्द्र झा[1]

ई जीवन

भेल व्यर्थ ई जीवन लऽ कऽ जन्म जगतमे।
नहि केलहुँ किछु काज व्यथा ई रहल हृदएमे।
बीतल बचपन उड़ल संग टिकुलीकेँ धेने।
कखनो मस्त मलंग खेलमे जोर लगेने।
आबि गेल चुप चाप उतरि कऽ यौवन कहिया।
चौंक उठल मन भेल भविष्यक आहट जहिया।
लगा लेलहुँ संपूर्ण जोर ताकत छल जतबा।
अछि की कम संघर्ष करब परिवारक सेवा।
अन्न, वस्त्र, भोजनक करिते उचित व्यवस्था।
बीति गेल जीवनक सभटा नीक अवस्था।
छै कर्मक ई खेल भाग्यकेँ कोना मेटेबै।
भाग्य प्रबल छै कहि कऽ ककरा केना बुझेबै।
किछु जीवनक दोष देवता छथि किछु दोषी।
करिते रहलहुँ कर्म सतत् किछु कम आ बेसी।
भेटल किछु सम्मान, मान लऽ कऽ अछि भूखल।
होइ छै एखनो सुनू, अर्थसँ सभटा प्रतिफल।
कहाँ शक्ति छनि सरोस्वतीकेँ असगर अपना।
सभसँ ऊपर ठाढ़ लक्ष्मी सबहक सपना।
जिनका जतबा अर्थ पैघ छथि जगमे नामी।
बिना अर्थ सभ व्यर्थ, दुखक जीवन अनुगामी।
आब सोचि की करब उम्र उतरल अगुता कऽ।
वानप्रस्थमे जाएब किछु संताप उठा कऽ।
हम रहलहुँ अभिलाषी भवमे मोक्ष मार्ग के।
चलिते रहलहुँ हम घिसिया कऽ पथ सुमार्ग के।
की भेटल अभिमान करब जकरा ले की हम।
पेट पोसि कऽ मात्र बितेलहुँ ई जीवन हम।

[1] राम जानकी नगर, मधुबनी, एम.ए. (दर्शन शास्त्र) सम्प्रति मिथिला जनता इन्टर कालेजमे व्याख्याता पदपर १० वर्षसँ कार्यरत, संगे १५ सालसँ अपन एकटा एन.जी.ओ.क सेहो संचालन।

बी.के कर्ण[1]

मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल

मुरझाएल अछि अपन व्यक्तित्वपर
सेहन्ता लगले रहल अपन प्रतिभापर
सफल खिलाड़ीक क्षेत्रक शान आ मान देखि कए
मोन होइए हमरो क्षेत्रक शान आ मानपर
भेटल रहैत एकोटा मेडल मिथिलाक लेल
ताकि रहल छी मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल
अथक प्रयास करबे करब ककरा जकाँ
क्रिकेटमे गावस्कर आ तेंदुलकर शतरंजमे आनन्द विश्वनाथन जकाँ
शुटिंगमे अभिनव बिन्द्रा आ टेनिसमे सानिया मिर्जा जकाँ
कते कहू ककरा ककरा जका चाही एकटा मेडल
ताकि रहल छी मिथिलाक लेल एकटा ओलम्पिक मेडल
के नै जनैए मिथिलामे बाढि अभिशाप बनल अछि
माहिर भेल नेना भुटका सभ खुब हेलैए
बाढिक वरदान तखने बुझब जखने
अगला ओलम्पिकमे मेडलिस्ट स्वीमर फेल्पसपर
करत प्रहार बाढ़ि प्रतारित एकटा मैथिल
ताकि रहल छी मिथिलाक लेल एकटा ओलम्पिक मेडल
बिहारक प्रहार मिथिलापर हिन्दीक मैथिलीपर
ताहुसँ पैघ मैथिलक प्रहार मैथिलीपर
बिहार आ हिन्दीसँ लगाव कोनो कम नहि
मुदा मिथिला वा मैथिलीक उपेक्षा अगजसँ मगज धरि
प्रहारो झेलब उपेक्षित रहब जखन क्यो मैथिल
जीत कऽ लओताह मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल
कोशीक देल कष्टसँ की की नै गमेलहुँ
राहत कोषसँ आहत भए अथाह टुअरक नाम कमेलहुँ
इतिहासमे बिलाएल मिथिलाक महिमा पुनरनिर्वाणक क्रान्ति सुनगि रहल
कहिया हएत से नहि जानि मुदा एकटा भरोसा अछि बनल

---

[1] (१९६३-), पिता श्री निर्भय नारायण दास, गाम- बलौर, भाया- मनीगाछी, जिला-दरभंगा। पैकेजिंग टेक्नोलोजीमे स्नातकोत्तर आ यू.एन.डी.पी. जर्मनी आ इग्लैण्डक कार्यक्रमक फेलोशिप, २२ वर्षक पेशेवर अनुभव आ २७ टा पत्र प्रकाशित। डायगनोस्टिक मिथिला पेंटिंग आ मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक समस्यापर चिन्तन। सम्प्रति इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पैकेजिंग, हैदराबादमे उपनिदेशक (क्षेत्रीय प्रमुख)।—**सम्पादक**

मैथिल जनसँ मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल
भरोसा दऽ रहल नवतुरिया मैथिल सभ कहि रहल अछि
अथक प्रयास करबे करब मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल लेबे करब़

सुबोध ठाकुर

हम गामेमे रहबइ

रही दूर अपन माटिसँ मेनेजर रहि-रहि कलुशय
छोड़ि अपन गाम मन रहि-रहि बिहुसए
ओ सुन्दर मनभावन पोखरिक घाट
ओ वसंत आर सावनमे सुन्दरि पाबनिहारनिसँ सजल बाट-घाट
बगियामे सदिखन कोइली कूकए
रही दूर अपन गामसँ मेनेजर रहि-रहि कलुशय

अछि सुबोधक कामना, जुनि करू दूर आब पुत्रकेँ माँ
अहींक सानिध्यमे रहए लेल मन तरसए,
छोड़ि अपन गाम मन रहि-रहि बिहुसए।

निमिष झा

असमर्पित उन्माद

अहाँक वएह नयन, वएह मोन आ वएह तन
हम देखि रहल छी, सुनि रहल छी आ भोगि रहल छी
समयक नाम अन्तरालक बाद सेहो
आँखि खोलैत आ मिचैत सेहो
आ अहाँ हमर शरीरक अदृश्य सरित प्रवाहमे
सर्वाङ्ग समाहित छी, सज्जित छी।

ई अभीष्ट रूप अहींक थिक
जकर अनुपस्थितिमे हमर चित्त
शुष्क सिकतातुल्य भऽ गेल अछि
ई शीतल छाहरि अहींक थिक
जकर अभावमे
प्रत्येक निमिष हमरा लेल
नीरस आ उदास बसन्ते बनि गेल अछि ।

अहाँ पानि छी हमर पियासक
अहाँ बसन्ती छी हमर बसातक
तएँ एकटा अतृप्त उन्माद
नाचि रहल अछि भैरव बनि
हमर मानसमे ।

हमर स्नायुक रोम रोममे
एकटा विषाक्त तृष्णा
बहि रहल अछि
आ बहि रहल अछि
हमर धमनीक कण कणमे
एकटा उन्मुक्त तृषा ।

बहुत बेर उघारि देलिऐ, फारि देलिऐ
नृशंस बनि आवेशसँ
लज्जाक पर्दा सभ
आ बन्द कऽ देलिऐ नैतिक मूल्यसँ
पाशविक उन्माद सभ।

हँ !
आइयो ओहिना स्मृतिमे लटपटाएल अछि
अहाँक गरम साँसमे
गुञ्जित हमर जीवन सङ्गीत
अहाँक आँचरमे ओझराएल हमर शर्टक बट्टम
अनार जकाँ अहाँक दाँतपर
पिछरैत हमर जीह
अहाँक ब्लाउजक हुक संग खेलाइत
हमर दसो आँगुर
आ अहाँक सुन्दर छालपर
दौगैत हमर ठोर ।

तथापि किएक नहि मिझाइत अछि
छातीक ई उन्मत्त मोमबत्ती
किएक निष्काम नहि होइत अछि
मोनक उत्तप्त बोखार सभ
जेना अहाँ
दारुक प्याला होइ
आ हम चुस्की तँ लऽ रहल छी
मदहोस भऽ रहल छी
अहाँक स्वप्निल लज्जा बनत तनमे
निमिष निमिषमे।

मुदा ओह!
ई केहन विडम्बना!
नित्यशः
एक्केटा बिन्दुपर दुर्घटना होइत गेल
हमर उच्छृङ्खल वासना सभ
अहाँक दर्शन आ सिद्धान्तक शिखरसँ
नितदिन एक्के रस्ता घुरि जाइत छल
अभिशप्त अहाँक विचार
हमर अभिशून्य मस्तिष्ककेँ झकझोरैत छल ।

शाइत कमजोरी हमरामे छल
की गिद्ध बनि हम युद्ध नहि कऽ सकलौं अहाँक तनसँ
शाइत महानता अहाँक छल
माला बनि अहाँ समर्पित नहि भऽ सकलौं हमर गरासँ ।

बुद्ध आ आतंक

अणु बमक विस्फोटक बाद
भयाउन वातावरणमे
आत्माक शान्ति नहि ताकू।

रक्तपातक बाद, शून्य आकाशमे
खुशीक चुम्बन नहि करू ।

ओ अहाँक गलती हएत, महान
रणभूमिमे
विश्वि शान्तिक नारा लगाएब ।

ओ अहाँक गल्ती हएत
तोपक गोलामे
भातृत्वक सन्देश ताकब ।

घृणा आ स्वार्थक सागरमे
विश्व आ बन्धुत्वक शंखघोष किए करै छी
हिंसा आ आतंकक बीच
गौतम बुद्धक सन्देश
पनिसोह रहत ।

अपन फुसियाहिंक आर्दशकँ
कृत्रिम रूपैँ नहि झाँपू
समए बड़ड आगाँ बढ़ि गेल अछि।
स्वार्थी आ व्यक्तित्ववादी समाजमे
कृत्रिम आदर्शक बीजारोपण नहि करू
अहाँक आदर्श सभ
कालान्तरमे
अहींकँ डसि लेत।

कामिनी कामायनी

चक्का

मैथिली, अंग्रेजी आ हिन्दीक फ्रीलांस जर्नलिस्ट छथि।
चक्का जे संस्कृतिक शान छल.
आब उन्नतिक पहिचान बनि गेल।
एहि सभ्य समाजमे जे जतेक नमहर
तेकरा लग ततेक चक्को
बड़का दौगल छोटका दौगल
तेकरा पाछाँ नेंगड़ा दौगि रहल अछि
आ दौगि दौगि कऽ बैसाहय लागल
नब नब पैघ पैघ सुन्नर सुन्नर चक्का
जेकर किछु पूछ नै छलै
सेहो गुड़कि रहल अछि
चारू कात चक्के चक्का
आ. एहि चक्कासँ जाम भऽ रहल अछि
नगरक महानगरक सीमित सड़क
गारा गारी ठोकम ठोक
थाना पुलिस कोट कचहरी जेल
सबहक पाछाँ लागि गेल अछि चक्का
चक्का हटै तखन नै जाम हटतै
डंडा बरसाबैत पुलिसबो थाकले
कोनो रोक नै
ई ससरैत ससरैत
ततेक ऊपर पहुँचि गेल अछि
जत्तसँ नीचाँ
महाविनाशक ढलान छै
चक्काक नियति आब की
प्रगति आगाँ बढतै क़त्तऽ
ढलानपर चढि
ओहि ठाम विराम लेतै
तँ कोना
कि अहि पर सोचलन्हि कहियो
आधुनिक विज्ञानी लोक

डॉ शंभु कुमार सिंह[1]

लोरी

तू लोरी गा हम सूति जाएब
माए लोरी गा हम सूति जाएब
लय नहि छौक तँ की
स्वर तँ छौक?
छी भूखल, देह अछि काँपि रहल
ठंढ़ासँ
ई माया नगरी अछि,
हमरा बसन नहि अछि
तँ की भेल जऽर तँ अछि?
माए! हे देखही..
ओकरा गाड़ीमे
उजरा कुकुर अछि घूमि रहल
खा दूध-भात
ई पशु जाति
किछु खाइत अछि
आ किछु करैत अछि जियान
तू मानव छैँ
करैत छैँ श्रम
दिन रातिक श्रमक ई फल छौक
तोहर नेना अन्नक लेल बेकल छौक
कलुष-भेद-तम-निअम विषमक
ई धार आब नहि बहतैक
हमर जाति
ई कुठाराघात

1 जन्म : १८ अप्रील १९६५ सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, १९९५] ‘‘मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन’’ विषय पर पी-एच.डी. वर्ष २००८, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-६ मे कार्यरत।

काल्हिसँ नहि सहतैक
टूटि जेतैक एक्कर विषदंत
भऽ जेतैक काल्हि एक्कर अंत
अछि अस्त्र नहि
मुदा हाथ तँ अछि?
आ फेर उपर 'हर' तँ छथि?
तू लोरी गा हम सूति जाएब
माए लोरी गा हम सूति जाएब।

अतीत

अतीत छल, थिक वर्तमान
आबो सम्हारऽ
चाहै छी जे काल्हि थिक
अतीतक पन्ना पढ़िकए बुझाइत अछि
ओ नीक-बेजाए, अल्हड़, बीहड़
जे किछु छल
अपना समयक साक्षी
आ आबऽबला काल्हिक लेल
ज्ञानक सागर छल
अतीत जे लेलक
ओ स्मृति थिक
जे देलक
ओ स्थिति थिक
ई वर्तमानक बात थिक
जँ स्मृति आ स्थितिक मंथन करी
तँ काल्हुक भविष्य....
भऽ सकैछ नीक।

आस

कटि जाएत राति
फेर आओत दिवस
लऽ संग रितु पावन पावस
छी एखन विवश!
छी तममे समए विषममे,
झंझावात भरल अछि हमरा जीवनमे
भऽ मुखरित एहि असार संसारमे
नित नव भाव-उल्लास
संजोगने मोनमे आस
छी आसमे आबऽबला काल्हिक
सत्य, स्वच्छन्द, कर्मफलदायी
समय चपलक!

/

निशाप्रभा झा

भगवती गीत

(लोकगीत संकलन)

तारा नाम तोहार
तारा नाम तोहार हे जननी काली करथि पुकार
सतयुग कलयुग दुइ प्रति हारल
तीनू भुवन तोहार हे जननी तारा नाम तोहार।
अष्ट भुजा लए सिंहपर चढ़ली
देखइत सकल संसार हे जननी, तारा नाम तोहार।
सुर-नर मुनि सभ ध्यान धरतु हे
गले बैजन्ती माल हे जननी तारा नाम तोहार।
तारा नाम तोहार हे जननी, तारा नाम तोहार।

विवेकानंद झा

कविता आ की सुजाता

बूझल नहि
कखन कत्तऽ आ कोना
हमरा आँखिमे बहऽ लागल
कविता
नदी बनि कऽ
भऽ गेल ठाढ़
पहाड़
करेजमे
जनक बनि कऽ
देखलिऐ
चिड़ै चुनमुन
नहि डेराइत अछि
आब
खेलाइत अछि
हमरा संग
गाछीक बसात
अल्हड़ अछि
मज्जर विहीन
भुखले पेट
नचैत अछि
झूमैत अछि
कारी मेघ माथपर
अकस्मात कानि उठैत अछि
सुजाता सुन्नरि
नोरसँ चटचट गाल
चानपर कारी जेना

चान आ चान्नी

अहाँकेँ नहि लगैछ
जे चान आ चानक
शुभ्र धवल इजोत
आ ओहूसँ नीक हेतै
ई कहब
जे चान आ ओकर चाननी आकी इजोरिया
दूटा नितांत भिन्न आ फराक चीज थिकै

ईश्वर जखन बनौलकै चान
तँ सुरुजसँ मंगलकै
कनेक टा इजोत
आ ओहि इजोतकेँ चान
कोनो जादूगर जेकाँ
इजोरिया बना देलकै
जेना प्रेम जाधरि रहैत छै
करेजमे
कोनो जोड़ाकेँ
लैला मजनू बना दैत छै
चंद्रमोहनकेँ चांद
आ अनुराधाकेँ फिजा
बना दैत छै
आ फेर तँ वएह अन्हरिया व्यापि जाइत छैक चहुँदिश

मुदा हम तँ कहैत रही
जे जहिया
सुरुजसँ पैंच लेल इजोतकेँ चान
कोनो कविराज जेकाँ
अपन सिलबट्टापर खूब जतनसँ
पीस पीस कऽ
चंदनक शीतल लेप सन इजोरिया बना देलकै
तहियासँ रखने छै
अपना करेजमे साटि कऽ
मुदा बेर बेखत बाँटितो छै
तँ खतम होइत होइत एकदिन
अमावश्याक नौबति सेहो आबिए जाइत छैक
आ फेर सुरुजसँ ओकरा मांगऽ पड़ैत छैक

कोनो स्वयंसेवी संगठन जेकाँ पैंचक इजोत
लोककेँ सोझे सरकार रायबहादुर सुरुज लग
जएबाक सेहंता तँ छै
मुदा साहस कतऽ सँ अनतै ओ
एतेक अमला-फैला छै सुरुजक चहुँदिश
जे करेजा मुँहमे अबैत छै
हुनका लग कोना जाऊ सर्व साधारण
ओ तँ धधकै छथिन्ह आधिक्यक तापसँ

खैर हम जहि चानक गप्प कऽ रहल छी
ओकरासँ डाह करैत छै मेघ
सदिखनसँ ओ ईर्षाक आगिमे जरैत आएल अछि
भगवान मङने रहथिन्ह वृष्टि मेघसँ चान लेल
मुदा ओ नहि देने छल
एक्कहु बुन्न पानि
झाँपि देने छल चानकेँ
हमरा बूझल अछि ओ
बनऔने होएत धर्मनिरपेक्षता आ सांप्रदायिकताक बहाना
लोक हितमे काज नहि अबैत ह्वैतैक ओकरा
मुद्दा ओकर ह्वैतैक किछु आउर

मुदा हम तँ एम्हर
मात्र एतबे
कहऽ चाहैत रही
जे हमरा केओ चान
आ अहाँकेँ चान्नी
जुनि कहए
की जखन मेघ
झाँपैत छै चानकेँ
तँ पहिने मरैत छै
इजोत
आ बादमे मरैत छै चान
आ हम नहि चाहैत छी
जे हमर इजोत
हमरासँ पहिने खतम हो
हमरासँ पहिने मरय
कखनहुँ नहि किन्नहुँ नहि
सत्ते

मणिकान्त मिश्र "मनिष"[1]

मिथिला वन्दना

देखू देखू हमर आंगनक भाग्य
पच्छिममे बाजैत कौआ आ !
पूरबमे एला सूरज भगवान
देखू देखू हमर आंगनक भाग !!

दीदी गाबि रहल छथि गीत
माँ बना रहल छथि तरूआ !
आइ एता हमर मूह लगुआए
आबिते करबन्हि हम प्रणाम
मनीष थिक हमर नाम !!
दीदी ब्याहक भऽ गेल साल
हमरा अंगनामे पसरलए कोजेगराक समान!
एता पाहूनक बाबू लऽ जेता ई दोकान
हमरा आंगनमे एला सूरज भगवान !!

देखू देखू हमर मिथिला कानए
कोजेगरामे बटैए पान आ मखान
ओ मिथिला रहत सबखन महान!
मण्डन आ विद्यापतिक होइत रहैए जतै गुणगान
ओ जानकी धाम महान!!

राम बनलथि पाहुन लव-कुश सन भगिनमान
जाहि ठाम गंगा देलथि पुण्यक ज्ञान !
ओहि मिथिलाकेँ सत् सत् प्रणाम सत् सत् प्रणाम !!
मणिकान्त थिका मिथिलाक संतान....।

[1] गाम-बेलौचा, प्रखण्ड-लखनौर, जिला मधुबनी।

आशीष अनचिन्हार

गजल

रचना कतेक टका लगतै सपना किनबाक लेल
जूटल घर सरदर अँगना किनबाक लेल

हम मुक्त छी राग-विराग प्रेम-घृणासँ
रचना कतेक टका लगतै भावना किनबाक लेल

सत्त मानू हम काज करै छी लोकतंत्रक पद्धतिए
रचना कतेक टका लगतै पटना किनबाक लेल

पत्रकारिता गुलाम छैक टी.आर.पीक
रचना कतेक टका लगतै घटना किनबाक लेल

किछु गद्य कविता

१) सीमा
अर्थ मास्टरमाइन्ड भए सकैत छैक। मास्टरपीस भए सकैत छैक।
मास्टर नहि।

२) काटब
पेट भरबाक लेल घेंट कटैत छी आ घेंट ऊँच रखबाक लेल पेट

३) दोसराति
जखन भए जाइत छी हम अपने अशक्त।
तखने जरूरति पड़ैत अछि दोसरातिक।

४)
प्रगति १.
शंख। महाशंख। डपोरशंख। हराशंख।

प्रगति २.
कनिया देशी। पिया परदेशी। बच्चा विदेशी।

५) मूलमंत्र
अपन कनियाँक हाथ पकड़ू आ दोसरक कनियाँक करेज। चिन्हारक गरदनि पकड़ू आ अनचिन्हारक पएर। कहियो कोनो काजमे असफलता नहि भेटत।

६) मोश्किल काज
कोनो कनैत जीवकेँ चुप्प करब ओतबे मोश्किल काज छैक जतेक की अपन आँखिक नोरकेँ रोकब।

७) सुआद
सोहारी आ गप्प दूनू नून मरचाइ लगेलासँ सुअदगर भए जाइत छैक ।

वौएलाल साह

मधेशक आवाज

माँ जानकीसँ कामना करै छी, शहीद सबहक चिर शान्तिक लेल
बढ़ू मधेशी आगाँ बढ़ू मधेशक अधिकार प्राप्ति लेल
युवा, विद्यार्थी आंदोलन करु, मधेशक अधिकार प्राप्ति लेल,
एहि आंदोलनमे नै लड़लौं, तँ भाग्य बुझु जे फुटीए गेल
व्यापारी, कर्मचारी सेहो लड़ू, अपन भविष्य बचाबऽ लेल
काम-काज छोड़ि आन्दोलन करु, हजुरी प्रथा छोराबै लेल
मधेशी शहीद पुकारि रहल छै, मधेशक अधिकार प्राप्ति लेल
शहीदक सपना पुरा करु, मिटा दिअ शासकक खेल
ई नेपालकेँ छै बाँटल, हिमाल, पहाड़, तराइ तँ कैला
एहि मधेशीकेँ ''मधेश'' बाँटऽ मे छै पूरे उरीए गेल
हिमाल, पहाड़, तराइ तँ कैला छुटियौलनि, मधेश शासकक जेबीमे गेल
जागु मधेशी जेबी फारु, अपन मधेश पाबैके लेल,
मधेश, तराइक वोट लऽ कऽ शासक सभ आगाँ बढ़ि गेल।
तराइ, मधेशी लड़ि रहल अइ, देखु केहन शासकक खेल
पानिसँ ठंढ़ा आगिसँ गरम, ईएह आब आंदोलनक गति छै भेल,
मधेशी आयोग कायम हो, एहि शासक वर्ग सबहक लेल

सन्तोष कुमार मिश्र

हमर मीत

रे ! हमर मीत सुगा तहूँ
असगरे उड़ि गेलैं
भोरमे पराती
आ संझामे साँझ
गाबिकऽ सुनऽबैछलैं
भोरमे उठऽबै छलैं,
कहिकऽ सुनबै छलैं
“पटटु ! सीताराम कहो”।

फुलल छली संगहि
तो असगरे मौर गेलैं।

दूर जुनि जो हमरा तौँ छोड़ि कऽ
क्षण भरि लेल आबि जो
हमरा अप्पन बुझि कऽ ।
किछुए देर नाचब
किछुए देर गाएब
हमहूँ तोरे संग कहब
“पटटु ! सीताराम कहो”।

हमहूँ आएब तोरे लग
मुदा किछु क्षण बाद
किछुए देरक ई कष्ट थिक
भोगहे पड़त ।

एक दिन हावासँ तीब्र भऽ
हमहूँ तोरे लग आएब
तोरे संग नाचब
तोरे गीत गाएब

मुदा आबहि परत
हम अएबे करब
फेर तोरे संग कहब
“पटटु ! सीताराम कहो”।

हेमांग आश्विनकुमार देसाइ

समीकरण[1]

दू टा अर्धवृत्त जन्मैत समानान्तर,
समानान्तर रेलगाड़ीक पटरी।
हाथ भरि नमगर लिबल घास,
झुकैत भीतर,
बिना डोरीक धनुष सन।
सुनबैत खिस्सा भरिगर हबाक,
रातिभरि जन्मैत अस्पष्ट पीठ वेताल सन,
जे उड़ि जाइत अछि भोर भेने।

आ एतबे
आकि कनेक बेशी
झुकल बुढ़िया
जे अहाँकेँ मोन पाड़त हाँसू।

झुकल निश्चल प्रथम श्रेणीक कम्पार्टमेन्टमे,
कातमे ठाढ़ कएल गेल ट्रेन
अहाँक अपन आँखिसँ कएल प्रतीक्षा बिन कात भेल।
एकटा छोटो आहटि
एकटा त्वरित चमकि कमसँ कम
आब, हँ आब
ई हमर अधिकार अछि, सत्ते
है-ए, जाइत अछि।

दूटा उर्ध्वाधर पटरी टेढ़ कएल बीचमे
दू टा तोरण जमल मृत्यु
एकटा तीक्ष्ण गुमारबला दुपहरिया
आ अहाँ
बनबैत छी एकटा अद्भुत समीकरण।
आश्चर्यित छी अहाँ कष्ट उठबैत छी सोझ बैसबा लेल
आ जे हाँसू गीरि गेलहुँ कताक समय पहिने
टोऐत अहाँकेँ खण्डमे

[1] मूल गुजराती पद्य आ तकर अंग्रेजी अनुवाद- हेमांग आश्विनकुमार देसाइ
मैथिली अनुवाद-गजेन्द्र ठाकुर

अशोक चौधरी

कहिया अहाँसँ होएत आब मिलन
एकहु घड़ी नहि मोनमे होइए चएन
अपन प्रेमकेँ मोन पारू प्रियतम
तरसि खून रहल छी, तरसिते रहबै अहाँक बिना
कहिया अहाँसँ ....

हमर सभटा अपराध माफ करब
जे हमरासँ भूलमे भेल हो
दुनियाक सभ खुशी, अहाँकेँ भेटए
हमर अहाँ प्राण जीवन आ धन
अहीकेँ चरणमे लागल अछि लगन
हमरो हृदयपर विचारू प्रियतम
ई जेना बरसै, बरसिते रहत, अहाँक बिना
कहिया अहाँसँ ....

विरहक अनेको उठैत अछि तरंग
आउ उठाउ लगाउ अंगसँ अंग
अपना वियोगेमे नहि मारू प्रिय
भटकिते रहल मन भटकिते रहत, अहाँक बिना
कहिया अहाँसँ ....

उपेन्द्र भगत नागवंशी

बुढ़वा

बुढ़बा बड़बड़ाइत रहैत छल
टण्डेली नइ कर,
एहिसँ की होतौ
देखै नइ छही समए
कमो खटो पाइ कमो
नइ तँ भुक्खे मरबैं।

की करू
चोरी करू, डकैती करू
आकि पाकेटमारी करू
नइ, मेहनति कर
इमानदारीसँ कमो
भुक्खे नइ मरबैं।।

चलू अहींक बात मानि लेलौं
बड़ मोसकिलसँ भेटल काज
करऽ लगलौं मेहनति
कमाय लगलौं टका
बड़ड नीक,
मुदा कहाँ भरैत अछि
पाँचो परानीक पेट ।

गलल जाइए देह
धीया पुता हमरा कहैत अछि
बुढबा ..... हमरा लऽ की कएलह ?
हे, दीनानाथ ....
हमहूँ आब बड़बड़ाइत छी ।

डा. सुरेन्द्र लाभ

इतिहास

अबाजक समुद्र
हल्लाक ज्वारभाटा
अनन्त.............
अनन्त कालसँ होइत पुनरावृत्ति
पुनरावृत्ति बनैछ इतिहास
हल्लाक इतिहास।

ध्वनिक अंकमे
समाहित लोक
मुक्त होएबाक हेतु
व्याकुल लोक!

आवाजहीनता!
शब्दहीनता!
मौन !
स्ततब्ध !
एकटा स्वप्न
दिवास्वप्न भऽ गेल अछि।

इतिहास सिंहासनक हो
वा हो संघर्षक
इतिहास दानवक हो
वा हो मानवक
सभ इतिहास
हँ प्रत्येकक इतिहास
हल्लाक इतिहास थिक ।

हल्लेरहल्लासँ भरल
जतए शून्येताक अभाव थिक
शान्तिक अभाव थिक
हँ, प्रत्येकक इतिहास
हल्ला कि इतिहास थिक ।
सम्बन्धक नव सूत्रक खोजिमे

इन्कलाब

अन्हर उठल, बिहारि उठल अछि,
आगि उठल अछि, पानि उठल अछि,
सभ दिलमे दावानल धधकए
गाम गाममे बाढ़ि उठल अछि

बच्चा उठल, जवान उठल अछि,
जनी उठल अछि, जाति उठल अछि,
गली गल्लीमे आगि पसरलै
आइ हमर श्मेशान उठल अछि

आइ राम उठल, रहमान उठल अछि,
कुरान उठल अछि, रामायण उठल अछि।
शंख चक्र लए कृष्ण सभामे
महाभारतमे अखनि तुफान उठल अछि ।

बन्दूक उठल, गोला उठल अछि
बारुद उठल अछि, बुट उठल अछि
छै नै ओतेक पेस्तोलमे गोली
बच्चा बच्चो जाति उठल अछि ।

भार उठल, साँझ उठल अछि,
बेर उठल अछि, राति उठल अछि
नस-नसक खून अछि खौलि रहल
चुल्ही तक छाउरमे आगि उठल अछि ।

शोषित उठल, शासित उठल अछि
दबल उठल अछि, थकुचाएल उठल अछि
शासक वर्गक नीन्ने उड़ल अछि
ओकर डरे थर थर काँपि उठल अछि ।

नारा उठल , आकाश उठल अछि,
बस्ती उठल अछि, गाम उठल अछि,
घर घरमे अन्घोल उड़ैए
मुट्ठीमे इन्कलाब उठल अछि ।

सरस्वती चौधरी ‘रचना’

सम्बन्धक कोनो सूत्र

सम्बन्धक कोनो सूत्र
नहि राखऽ चाहै छी बान्हल अहाँक संग
रत्ती रत्ती छहोछित्त कऽ
मुक्त होएबाक होइछ इच्छा
एकटा खूजल परिसरमे
विचरणक अप्पन फूट आनन्द होइछ ।
मुदा अहाँक संग हमर सम्बन्धक
नव नव परिभाषा खोजबाक हमर इच्छाक ।
हमरा फेरसँ झटिआ देलक अछि

हम अपने घरक बाट
बिसरल जा रहल छी ।

की अछि अहाँक संग सम्बन्धक सूत्र
जतेक तोड़बाक कएल जाइछ प्रयत्न, प्रयास
ततबए झमटदार भऽ आँखिक आगू
भऽ जाइछ ठाढ़
आ देखलो बाट हेरा जाइछ
आगू रहि जाइछ अहाँक
मात्र अहाँक मूह आ
राग अनुरागसँ तर बतर भेल
सम्बन्धक मजगूत सूत्र
आब तँ लाज लागल अछि
मुक्तिक हमर इच्छो
मात्र लौलक रूपेँ कएल प्रयास अछि ।
हम तँ कहिया नहि
मन्दिरमे भजन करबा लेल
स्वयंकेँ प्रस्तुत कऽ चुकल छी ।

डॉ अजित मिश्र[1]

मिथिला-धाम

चाननसन जतऽ माटि बसै छै
ओहि माटिक हम वीर गे
लए चलबौ हम तोरा सजनी
पूर हेतौ सभ आस गे ।। १ ।।
ओहि माटिक हम बात कहै छी
जतऽ पूरल सभ आस गे
मा जानकीक संग पाबि कऽ
चलल राम भगवान गे ।। २ ।। लए चलबौ ....
कोइली चहु दिस कुहु-कुहु बाजए
विद्यापतिक गान गे
धीर अयाचीक साग- भातमे
जतए बसथि भगवान गे ।। ३ ।। लए चलबौ ....
बालोऽमक ज्ञान जतए छै
सीता मैय्याक ध्यान गे
साग-भातमे जतए बिराजै
स्वाभिमानक ज्ञान गे .।। ४ ।। लए चलबौ ....
शान्तिमयक जे पर्णकुटी छै
विश्वमंचपर मान गे
सतगुणक जे खान बनल छै
मिथिला तकरहि नाम गे ।। ५ ।। लए चलबौ ....
विद्या - ज्ञानक नाम जतए छै
सुमति मान-अपमान गे
गुरूसँ शिक्षा जतए सुलभ छै
पाबथि सभ सम्मान गे ।। ६ ।। लए चलबौ ....
जग भरि जत्तय शीश नबावे
बाट-घाट जत धाम गे
कण-कणमे जत सोन बिराजै
ओहि माटि परनाम गे ।। ७ ।।
चाननसन जत माटि बसै छै ....

---

[1] ''आदित्य वास'', पाहीटोल, गाम सरिसव पाही
संप्रति राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, भारतीय भाषा संस्थानसँ सम्बद्ध।

सुनीलकुमार मल्लिक

घड़ी

घड़ीमे
घण्टोक सूइसँ बेसी
मिनटक सूइसँ बेसी
सेकेण्डक सूइ चलै छै
मुदा
कतेक अनसोहाँत लगै छै
जे
सेकेण्डसँ बेसी मिनटक
आ
मिनटसँ बेसी
घण्टाक मान भऽ जाइ छै
अहाँ खूब दौड़ धूप करै छी
अहाँक मगजसँ
पसेनाक पमार बहैत रहैछ ।
माने, अहाँ खूब चलायमान छी
मुदा,
घण्टाक घुसकुनियाँ जकाँ
अहाँक मालिकक मान
बेसी बढ़ि जाइ छनि
एना किएक ने होइ छै
जे चलबो अहीं बेसी करितौं
आ
मान सेहो अहींक बेसी रहैत !

राजकमल चौधरी[1]

बही-खाता

एहि खातापर हम घसैत छी
संसारक सभटा हिसाब
एहि खातापर हम सदिखन घसैत छी
अपना कर्मक-अपकर्मक कारी किताब!
जे किछु कयने छी पाप-धर्म
जे किछु बुझने छी जीवन-रहस्य आ प्राण-मर्म
जे किछु बुझने छी प्राण-मर्म
जे किछु कयने छी पाप-धर्म
सभटा अंकित अछि एहि लाल बहीमे
एहि लाल बहीमे सभटा इच्छा, समग्र वासना
जे जतबा अछि जकरासँ लेन-देन
जे रखने छी हेम-नेम
सभ दर्ज भेल अछि
सभ दर्ज भेल अछि एहि लाल बहीमे
एहि लाल बहीमे सभटा इच्छा समग्र वासना
जे जतबा अछि जकरासँ लेन देन
जे रखने अछि हेम-क्षेम
सभ दर्ज भेल अछि
सभ दर्ज भेल अछि एहि लाल बहीमे
ककरासँ की लेने छी
हम सदिखन
स्नेह-दया, माया-ममता, घृणा-क्रोध
ककरा की करबाक अछि ऋणक शोध
एतबा दिनमे ककरापर
कतबा कर्ज भेल अछि
सभ दर्ज भेल अछि एहि लाल बहीमे

कविता लिखबाक ई लाल-बही
थिक हम्मर जीवन-खाता

---

[1] दूटा अप्रकाशित पद्य
(सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन)

हमर सभटा अपराध, ज्ञान, अनुभव
मोह-लोभ-संताप पराभव
इच्छा-अभिलाषासँ लीपल-पोतल
अछि एक्कर सभटा पाता
ई हम्मर लालबही थिक जीवन-खाता
जीवन-खाता

एकटा प्रेम-कविता

कतेक राति बितला पर
फूल पात तितला पर
मुदा इजोरिया उगबासँ कतेक पहिनें
एकटा म्लान-मुख स्त्री, अनचिन्हार
हमरा हृदयमे
किंवा अपन आँखिमे
किंवा अथाह समुद्र जकाँ पसरल अकाशमे
ताकि रहल अछि अप्पन अतीत
ताकि रहल अछि कहियो
कतेक दिन पहिनें केकरोसँ सूनल
कोनो गीत
ताकि रहल अछि अप्पन अतीत
एकटा म्लान-मुख स्त्री अनचिन्हार
बहुत राति बितलापर
फूल-पात तितला पर
मुदा हमरा नित्र आबि जाइत अछि
आ काँच सपनामे
बसन्त बहार नहि

जीवकान्त[1]

वनदेवी

वनवासिनी स्त्री जंगलमे
भोजन तकबा लेल बौआइत अछि
झाँखुरमे पकड़ए चाहैए बटेर
बिछैए जंगली करैल आ खम्हारु
थोड़ेक जारनिक काठ जमा करैए

क्यो चिमनी ईंट भट्ठापर
पजेबा उघैए आ बोनि कमाइए
चुल्हि जरैत छैक बहुत नियारसँ
मुदा मिझाइत छैक पट दए

हाथ धरबा लेल कम मर्द उपलब्ध छैक
शहर दिस गेल जुआन नहि घुरलैए
रिक्शा घिचबाक बोरा उतारबाक जानमारू काजमे
बहुत पसेनाकेँ थोड़ कैंचा भेटैत छैक

---

[1] पूर्ण नाम- जीवकान्त झा, पिता-गुणानन्द झा, माता-महेश्वरी देवी, जन्म तिथि-२५.०७.१९३६ स्थान अभुआढ़, जिला-सुपौल। शिक्षा-मैट्रिक (१९५५ उ.वि.डेवढ़), आइ.एस.सी. (१९५७ आर.के.कॉलेज, मधुबनी), बी.ए. (१९६४ बिहार वि.वि.स्वतंत्र छात्र), डिप.इन.एड.(१९६९ मिथिला वि.वि.)। नौकरी-उच्च विद्यालयमे सहायक शिक्षक। विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली १९५७-८१), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डेओढ़ एवं उ.वि.पोखराम १९८१-९८)

पहिल रचना-इजोड़िया आ टिटही (कविता, जनवरी १९६५ मिथिला मिहिर)। पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास १९६८)। नवीनतम पोथी-खिखिरक बीअरि (२००७ बाल पद्य कथा), अठन्नी खसलइ वनमे (पद्य-कथा संग्रह) आ पंजरि प्रेम प्रकासिया (जीवन-वृत्तक अंश)। पुरस्कार-साहित्य अकादेमी (दिल्ली १९९८), किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८५)। प्रकाशित पोथी- कविता संग्रह: नाचू हे पृथ्वी (७१), धार नहि होइछ मुक्त (९१), तकैत अछि चिड़ै (९५), खाँड़ो (१९९६), पानिमे जोगने अछि बस्ती (९८), फुनगी नीलाकाशमे (२०००), गाछ झूल-झूल (२००४), छाह सोहाओन (२००६), खिखिरिक बीअरि (२००७)। कथा-संग्रह: एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे (७२), सूर्य गलि रहल अछि (७५), वस्तु (८३), करमी झील (९८)। उपन्यास: दू कुहेसक बाट(६८), पनिपत(७७), नहि, कतहु नहि (७६), पीयर गुलाब छल (७१), अगिनबान (८१)। हिन्दी अनुवाद- निशान्त की चिड़िया (हिन्दी अनुवाद-तकैत अछि चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली २००३)।

वनवासिनी स्त्री सेहो छोड़ने जाइए वन
शहरमे सड़कपर राति कटबा लेल
आ दिनमे हवेलीमे झाड़ू-पोछा देबा लेल...
शहर ओकरा चिबा कए सुता दैत छैक
ओकर खून चाटि कए नेहाल होइत छैक
शहरक मोटरमे
तेल जकाँ जरैत अछि वनवासीजन
शहरक आकाशमे
ओ डीजिलक धुआँ जकाँ बिलाइत अछि

बाघक प्रजाति उपटैत छैक
तँ चिन्ता घेरैत अछि जनमानसकेँ
अंडमानसँ लोहरदग्गा धरि
आ उजानक मुसहरीसँ नट्टिन सभक सिड़की धरि
उपटैत अछि वनवासी स्त्री-पुरुष
अगबे बसात रोदना करैए सुतली रातिमे
पहाड़मे गन्हाइत धार नोर बनि टघरैत अछि
बबुआन सभक करेज दिल्लीसँ चतरा धरि
पथर-कोइलाक खण्ड जकाँ सर्द अछि

(३०.०६.२००९)

जन-जन याचक

अगिते देखल सूर्य
तरणिसँ माँगल थोड़ प्रकाश
कहलनि-''मुट्ठी बान्हि ठाढ़ रह
अपनहु करहि प्रयास''
मुट्ठी तँ भरि गेल
खोलि कए देखी अति उत्साह
जते हजीरिया तते अन्हसरिया
दूनू धार प्रवाह
माँगल धरतीसँ हम याचक
अन्नल-फलक भंडार
गाछ फड़ल बड़
आगाँ देखी आधा खाली थार

नदी देखि कए भेल खुशी तँ
माँगल आँजुर पानि
बैसक्खाँमे बालु उड़ाबए
भादवमे नकमानि
लत्ती-लत्ती बहुत हरियरी
कोँढ़ी होइत फूल
फूल-कुंजमे समय बिताबी
तृष्णा लाल अढ़ूल
हवा उड़ाबए खढ़क खण्डकेँ
तहिना भासल जादू
बहुत डारिपर
बहुत फूलकेँ सिहरन नहि बिसराइ
कहल देशकेँ-
दैह सुरक्षा, घूमी जंगल-झाड़
घर-घुसनाकेँ नोति बजाबए
सागर आर पहाड़
रहलहुँ सभतरि निष्कण्टक भए
गड़ल ने कूशक काप
बन्न कोठलीमे चेहाइत छी
भरि घर सापे-साप
देशो माँगइ-
नित्य करी हम सभ जन बाट प्रशस्त
बहिर भेल किछु, सुनि नहि पाबी
अपन स्वार्थमे मस्त
कहियो माँगए धार-धरित्री
कहियो गगनक छोर
किछु नहि सुनलहुँ
जतबो सुनलहुँ
देल ने हृदय कठोर
श्री गणेशाय नम:
कुल देवताभ्योम नम:, ग्राम देवताभ्यो नम:,
सर्वोभ्यो देवभ्योनम:, सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नम:,
सर्वेभ्यो गुरुवेभ्यो नम:।
ऊँ शक्ति-ऊँ.........

रूपा धीरू

प्रसव पीड़ा

प्रसव पीड़ासँ छटपटाइत ओ
अइ कोलासँ ओइ कोला करैत
बोदरि छलि पसेनासँ,
किछु कालक पश्चात चौरीमे हलचल भेलैक
आ प्रसन्नताक लहरि पसरि गेलैक
ओकर बाप हाथमे राखल बहिंगाकेँ
खुशीसँ उछालि फेकलक दूर कऽ
ओ बड़ पोरगर नेनाकेँ जन्म देने छलि।
ओ बड़ प्रसन्न छल
ई सोचि
जे काल्हिसँ ई हम्मर
बाँहि पूरत, पँचपज्जी बोझ उठएबाक
सामर्थ राखत,
तखन फागुनेमे बेसाह लगबाक डर नहि रहत
प्रात भने गिरहतक खरिहानमे बोनि लेबाक लेल
बड़ हुलसगर मोनसँ पहुँचल ओ
हुनकर दलानपर बड़कीटा मोटर चमचमाइत छलनि
पता चललै जे गिरहतक पुतौहुकेँ
सातम महिना छियनि
दड़िभंगा जा रहल छथि
दुस्साहस कऽ ओ अपन बुधनी,
आ गिरहतक पुतौहुक तुलना कएलक
आ
बहिंगा ठामे गाड़ि देलक बोझपर
ओ गिरहतकेँ नेहोरा करऽ लागल–
''मालिक परसौतीक लेल दालि चाउर
बड़ जरूरी छै
कने, बोनि ....''
''की बजलेँ ?''
ओ गरजि उठलाह– ''सार नहितन
जतराक बेरमे तोँ .....
अपने भनसिया जकाँ
बूझैत छिहीक ?''

अन्नावरन देवेन्दर[1]

पानि अछि, मात्र आँखिक नोर

ठोप, ठोपे टा मे
टपटप खसैत पानि ठोपे-ठोपे,
हम नहि कऽ सकैत छी वर्णित,
पानि नहि बहैत अछि निरावरोध,
सुबर्ना नहि अछि भरैत कखनो।

कलसँ भनसाघर धरि,
भनसाघरसँ सोझाँक बारी धरि
भागैत एतएसँ ओत्तऽ
एम्हर-ओम्हर करघाक नमरैत ताग सन
वस्त्रक संरचना सन
एक्के घुमानमे हम जाइ छी घूमि।

कनैत बाल, पानि भरबाक अछि काल
दूधक झोंक आ हमर रजस्वला एकान्त
हुँह ! सभटा एक्के बेर !

---

[1] मूल तेलुगु पद्य- अन्नावरन देवेन्दर-अंग्रेजी अनुवाद- पी.जयलक्ष्मी आ मैथिली अनुवाद- गजेन्द्र ठाकुर

कवि **अन्नावरन देवेन्दर** आन्ध्र प्रदेशक करीमनगर जिलासँ छथि आ तेलुगु भाषाक तेलंगाना बोलीमे तेलंगाना राज्यक संवेदना आ संस्कृति आ ओकर अलग राज्यक लेल संघर्षकेँ स्वर दैत छथि। हुनकर छह टा कविताक संग्रह छपल छन्हि। महात्मा जोतिबा फुले फेलोशिप २००१, रंजनी कुन्दुरती कविता पुरस्कारम् २००६, डॉ. मलयश्री साहिति पुरस्कारम् २००६, रांगिनेनी येनम्मा साहित्य पुरस्कारम् २००७ पुरस्कारसँ सम्मानित। ओ जिला परिषद, करीमनगरक पंचायती राज विभागमे सीनियर असिस्टेन्ट छथि।

पी.जयलक्ष्मी, ओस्मानिया विश्वविद्यालयक निजाम कॉलेज हैदराबादमे अंग्रेजी विभागमे एसोसिएट प्रोफेसर छथि। विगत ३० बरखसँ अंग्रेजीक अध्यापन। हुनकर विशेषज्ञता अंग्रेजीमे भारतीय कविता, अनुवाद आ अनुवादशास्त्र अछि।२००३ मे भार्गवी रावक संग मिलि कऽ शीला सुभद्रा देवीक सितम्बर ११ आ ओकर परिणामपर तेलुगु काव्यक अंग्रेजीमे वार अ हर्ट्स रैवेज नामसँ अनुवाद। २००७ मे गोपीक ननीलू केर अंग्रेजी अनुवाद। स्प्रिन्ग नामसँ अन्नावरन देवेन्दरक कविताक अंग्रेजी अनुवाद प्रेसमे अछि।

पानि मात्र सप्ताहमे दू दिन,
छौंकी आ झगड़ा कलपर
तैयो छी हम सभ स्त्री
जे रहैत छी मिलि कऽ
बेकालमे
दैत प्राणोक उत्सर्ग।

ई सभटा झंझवात पानिये टा लेल
नहि कहि सकैत छी अहाँकेँ अपन पानिक समस्या-
सम्पूर्ण भोर खतम होइत अछि एहि १५ मिनटक कार्यक लेल
कनेक काल भातक बिनु बिसरियो सकैत छी
मुदा बिनु पानिक जीवन चलत?
एकत्रित भेल जे नहि अछि हमर बेटोक लेल पर्याप्त
ताहि लेल, रस्सा भरि नमगर पाँति।

के अकानैत अछि संघर्ष?
घर भरल लोक
गाछ जेकाँ ठाढ़
आकि कुरसी जेकाँ बैसल
तमसाइत हमरापर जे हम छी पछुआएल
दौगैत छी बिनु लक्ष्यक।

मुदा नहि हिलबैत छथि आँगुरो हमरा सहायतार्थ
हमर हाथ ओहि बोरिंगकेँ ठीक करैत भेल जे चोटिल।

ओहि पम्पकेँ पीटैत निकलैत अछि मात्र छुच्छ ध्वनि
हमर प्राण बहार भऽ जाइत अछि ओतए काज करैत
कर्र कर्र कर्र कर्र
हमर बाँहिक दर्द आ छातीक पीड़ा
पाताल धरि
पानि बिला जाइत अछि कतहु गहींर नीचाँ
मुदा तैयो नहि बकसैत
जे हम काज करैत छी खतम करबाक लेल
चम्मच भरि पानिक बुन्द
सेहो गन्हाइत।

कान्ह भेल भोथ
ठेला परल सुवर्णा उघैत
ब्लाउज फाटल
एकटा अल्प जीवनक बाद
हमरामे नहि अछि एकर जोड़-तोड़ करबाक सक्क
हम की कऽ सकैत छी बहिन?
पानिक चरचे मात्र
मृत्युक डरकेँ अछि खोंचारैत
पानि अछि, आँखिक नोर मात्र...

["नीलान्टे कन्नीले..." मनकम्मा थोटा लेबर अड़्डासँ]

अमरेन्द्र यादव

आह्वान

हे हउ दिना भदरी,
तूँ दुनू भाय
चाहक संग भाङ्ग पीबि कऽ
भरि रहल छह पंजाबमे
सरदारक बखारी ।
आ एतय तोहर घरमे
कोनटा लग
कानि रहल छह
तोहर पाँच मनक कोदारि ।

हे हउ कृष्णा राम सोबरन,
तूँ दुनू भाय
साउदीक बालू पहाडपर
रोमि रहल छह हैँजक हैँज उँट
आ एतय सुन्न लगै छह
तोहर दौरी बथान
अर्ना भेल जाइ छह
तोहर अनेर भैँस ।

हे हउ भाय सलहेस,
तूँ परदेशक दरबज्जापर
दैत छह पहरा
ठोकैत छह सलामी ।
आ एतय
तोहर मायक आँचरमे
मुदइ गड़ौने छह नजरि

हे हउ दिना भदरी,
हे हउ कृष्णाराम सोबरन,
हे हउ भाय सलहेस,
बाँझ भेल जाइ छह तोहर चौरी चाँचर,
सुन्न भेल जाइ छह गोहाली बथान

टुगर लगै छह तोहर देश ।
आबह घुरि कऽ
जल्दी आबह घुरि कऽ
अपने गामकैँ बनेबै पइन्जाब
अपने समाजकैँ बनेबै कतार
अपने देशकैँ बनेबै अमिरका ।

/

श्यामल सुमन

मैथिली दोहा

प्रश्न सोझाँमे ठाढ़ अछि अप्पन की पहचान।
ताकि रहल छी आइ धरि भेटल कहाँ निदान।।
ककरासँ हम की कहू अपनामे सभ मस्त।
समाचार पूछल जखन कहता दुखसँ त्रस्त।।
फँसल व्यूहमे स्वार्थक सभ देखू बेहोश।
झूठ फूसि मुखिया बनथि खूब बघारथि जोश।।
हम देखलहुँ नहि आइ धरि मैथिल सनक विवाह।
दान दहेजक चक्रमे बहुतो लोक तबाह।।
बरियातीकैँ नीक नहि लागल माछक झोर।
साँझ शुरू भोजन करत उठैत काल तक भोर।।
रसगुल्ला गुल्ला बना खाओत रस निचोड़ि।
खाइसँ बेसी ऐंठ कऽ देता पातमे छोड़ि।।
मैथिलजन सज्जन बहुत लोक बहुत विद्वान।
निज-भाषा, निज-लोकपर कनिको नहि छन्हि ध्यान।।
चोरि, छिनरपन छोड़ि कए करू अहाँ सभ काज।
मैथिलजन तखने बचब बाँचत सकल समाज।।
जाति-पातिकैँ छोड़ि कऽ बनू एक परिवार।
मिथिला के उत्थान हित कोशिश करू हजार।।
अपन लोक बेसी जुटए बाजू मिठका बोल।
सुमन टूटल जौं गाछसँ तखन ओकर की मोल।।

हिमांशु चौधरी

बाल गीत

कुत कुतामे जितलहुँ तँ गोटरसमे ओसरा गेलहुँ
गोटी देखि देखि चकित छी, की करु चकरा गेलहुँ

आस रखने छी जितैत जाइ झिझिरकोनामे घेरा जाइत छी
आस पास कहैत कहैत धप्पो कहए ले बिसरा जाइत छी
कट्टी करु ककरासँ झुला झुलैत ओझरा गेलहुँ

एक सलाइ, दु सलाइ तेसर बेरमे चोन्हरा जाइत छी
पानि पानि कहैत कहैत अंगनेमे औंघरा जाइत छी
माछ माछ बेंग कहए काल, अंगुरी मोड़एमे गड़बड़ा गेलहुँ
कौड़ी तासमे पाइ हारने मन्हुआ जाइ छी
तीर धनमी चलबैत काल सडीएकेँ आखि फोड़ि देलहुँ

तौँ स्वतंत्र छैँ

विचारक देवालमे बन्द छी
हाथ-पएर काटल अछि
ने लिखि सकैत छी
ने चलि सकैत छी
तैयो कहैत छी--- तौँ स्वतंत्र छैँ।
ठोर हमर बोली अहाँक
आँखि हमर दृष्टि अहाँक
भाषा हमर चिंतन अहाँक
तैयो कहैत छी--- तौँ स्वतंत्र छैँ।
निर्दोषता अशुद्ध भेल
प्रष्टा विपरीत भेल
आशा गुदरी-गुदरी ओछाओन सन
के शत्रु, के मित्र
विश्वास जखन उपहास बनल
के बूझत अंतरक धाह
एहि उहापोहमे धरती भेल बाँझसन

तैयो कहैत छी--- तोँ स्वतंत्र छेँ।
एक कोनमे रहितहुँ
नव युगक वैजयंती ठाढ अछि
देश-देशांतरक कथा सूनि
सिंहासन जल्लादक लगैत अछि
हमरा अभागल कहितहुँ
अपनाकेँ स्वतंत्र कहैत छी
जे अन्हारकेँ नहि बुझलक
तँ ओ इजोत की बूझत
गुज-गुज अन्हरियामे बेउ कएने छी
तैयो कहैत छी--- तोँ स्वतंत्र छेँ।

दयाकान्त

पाँच लाख बौआक दाम

नहि कमाइत छथि फुटल कौड़ी
नहि रोजगारक कोनो ठेकान
दस बरखसँ धेने छथि दिल्ली
टाका आबै छनि अखनो गाम
बाबु सुद-दर सुद जोड़ि कऽ
लगबैत छथिन बौआक दाम
पाँच लाख बौआक दाम।

कहैत छथि एम.बी.ए. केने छी
नहि चाही सरकारी नोकरी, नाम
एम.एन.सी. मे नोकरी करैत छी
रखैत अछि कम्पनी सभटा ध्यान
प्रवन्धनक कोनो गप्प करू तँ
मुँह बेता जेना परम अकान
पाँच लाख बौआक दाम ।

घटक देखि कऽ बाप बजैत छथि

बड़का हाकिम हमर संतान
गाड़ी-बंगला नोकर-चाकर
सभ चीजक ओतए ओरियान
ऑफिसमे बड़का-बड़का हाकिम
करैत रहैत छैक बौआकेँ सलाम
पाँच लाख बौआक दाम।

अबिते लगन घटकक आसमे
मखमल जाजीम शोभय मचान
सिल्क कुर्ता संग परमसुख धोती
सजि-धजि बैसथि बाप दलान
जखन देखु भरल रहथि छनि
चाहक संग खिलबट्टीमे पान
पाँच लाख बौआक दाम।

अहि लगनमे लुल्हा लंगड़ा
नहि बाँचल कियो बहिर अकान
पैंतीस बीतल चढि गेल छत्तीस
नहि सुनैत अछि कियो कान
हमर सपुतक शुभ लगनमे
सभ अप्पन बनि गेल अछि आन
पाँच लाख बौआक दाम।

अजित कुमार झा

ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छथि

रिक्शापर माइक लगा जोर जोरसँ
छोटगर-छोटगर भाषणे तँ देलथि
नेताजी किछु कऽ कऽ देखाबथि!

कहथि जा घर-घरमे बिजली लगाएब
आब अन्हारमे जीबि नहि पाएब
सभ रातिकेँ हम दीवाली बनबाएब
एको जे खम्हा गारिकऽ लबैथ
नेताजी किछु कऽ कऽ देखाबथि!!

घर-घरक बच्चा स्कूल जाएत
पढ़ए-लिखएसँ नञि कियो वंचित हएत
शिक्षाक स्तर बहुत बढ़ाएब
चारियोटा शैक्षिक सामग्री बटबैतथि
नेताजी किछु कऽ कऽ देखाबथि!!

गाम-गाममे फोनेटा नहि
ई-मेल आ इन्टरनेट लगाएब
मोबाइलक तँ बाढ़ि बहायब
एक्को दू टा पी.सी.ओ. तँ खोलाबथि
नेताजी किछु कऽकऽ देखाबथि!!!

कारखाना खुलत, काज बढ़त
रोजगारीक अवसर प्रशस्त बनबाएब
बेरोजगारीक नामोनिशान मेटाएब
एकोटाकेँ ढंगगर नोकरी दियाबथि
नेताजी किछु कऽ कऽ देखाबथि!!

ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छथि
पार्टी आ अप्पन मात्र काज करौलथि
जितलाक बाद चेहरो नहि देखओलथि
ओ तँ आब राज करै छथि
अनेरे किए किछु कऽ कऽ देखओबथि!!!

सुमित आनन्द

जेम्हरे देखू तेम्हरे लाइन!!

ट्रेनमे लाइन, बसमे लाइन
सिनेमाक हॉलमे लाइन
गैसक गोदाममे लाइन
राशनक दोकानमे लाइन
सभसँ बड़का सैलूनमे लाइन!
जेम्हरे देखू तेम्हरे लाइन!!

स्कूलमे लाइन कॉलेजमे लाइन
डॉक्टरमे लाइन आ वकीलमे लाइन
अस्पताल आ कोर्टमे लाइन
सभसँ बड़का सर्कसमे लाइन!
जेम्हरे देखू तेम्हरे लाइन!!

चाहमे लाइन, पानमे लाइन
पैखानामे लाइन आ पेशाबमे लाइन
होटलमे लाइन, बोतलमे लाइन
सभसँ बड़का पानिमे लाइन!
जेम्हरे देखू तेम्हरे लाइन!!

मन्दिरमे लाइन, मस्जिदमे लाइन
योगीमे लाइन आ भोगीमे लाइन
जोतखीमे लाइन, पंडितमे लाइन
सभसँ बड़का शमसानमे लाइन!
जेम्हरे देखू तेम्हरे लाइन!!

नेतामे लाइन, अभिनेतामे लाइन
खेलमे लाइन आ जेलमे लाइन
ऑफिस आ आवासमे लाइन
सभसँ बड़का सर्विसमे लाइन!
जेम्हरे देखू तेम्हरे लाइन!!

विजया अर्याल

आजुक जीवन

प्रत्येक दिन मृत्युसँ सापट माँगि कऽ
बाँकी बक्यौती देबऽ लेल
ऋणक रूपमे बाँचि रहल अछि जीवन।
प्रत्येक क्षण मृत्युसँ पैंचा माँगि कऽ
क्षतिपूर्ति करबाक हिसाबसँ
व्याजिक रूपमे भरि रहल अछि जीवन।
जीवन आर्जन करबाक हिसाबमे नहि
जीवनक प्रत्येक क्षणक ऋण देबाक हिसाबसँ
चुकएबाक दरमे असुल उपर भऽ रहल अछि ।
युद्ध आ शान्तिक जोड़ घटाउमे
भूखक बारूद लऽ कऽ
माटि खाएपर मजबूर भऽ रहल अछि जीवन ।
अखन डेराओन मुँह सभ
अमूर्त अर्थमे नुकाएल जीवनकेँ, आँटाक संग बदलि कऽ
विवशतासँ बाँचि रहल अछि।
इच्छा आ महत्वाकांक्षीक कोठीकेँ
प्रदूषित वातावरणकेँ तोड़ल समयमे
संघर्षे संघर्षक बीचसँ भागि
मनुक्खेक अस्तित्वपर दाग लगाबऽ लेल
सर्कसक जोकर बनि बाँचि रहल अछि जीवन।
खोजमेसँ लाएल संरचनामे, अपनेसँ लगाएल आगि
जरि रहल पृथ्वीक भागमे शान्तिसँ शान्ति करत
छितिर बितिर भेल शताब्दीक हड्डीमे मलहम लगाबऽ
क्षेप्रयास्तसँ काटल गेड़ी लऽ कऽ
कछुआक गतिमे चलि रहल अछि जीवन।
(आबय बला पोथी *अएना* मैथिली कविता संग्रह-सम्पादक संतोष कुमार मिश्रसँ)

सरोज खिलाडी

मनक बात मनमे

सामनेमे तँ हम चुपचाप छलहुँ
परोछमे हम बरबराइत रहै छी
हुनका सामने हम हँसऽ नहि सकलहुँ
अएनाक सोझाँ हम किए मुस्किआइ छी?

मनक बात हम हुनकासँ कहऽ नइ सकलहुँ
अखन हम किए पछताइ छी
हुनका आगू किछु बाजऽ नहि सकलहुँ
अखन हम किए नोर बहबै छी ?

मने मन कहै छलहुँ अहाँ बिन जीयब कोना
सामनेमे नहि कहऽ सकलहुँ
संकोच आ डरसँ चुपचाप छलहुँ
मोनसँ कहियो हँसऽ नहि सकलहुँ ।

यादमे हुनक कते दिन नोर बहाउ
हुनक इच्छाकेँ हम बुझऽ नहि सकलहुँ
ओ तँ हमरा पौने छली
हुनका हम पाबऽ नहि सकलहुँ ।

अखनो यादमे हुनक डूबल रहै छी
कनियो चैन नहि पाबऽ सकलहुँ
एहन केहन रोग भऽ गेल हमरा
इलाज हम करबऽ नहि सकलहुँ।

गलती तँ हुनकेसँ भेल
ओहो तँ हमरा कहऽ नहि सकली
ताली तँ हम बजाबऽ चाहलहुँ
मुदा दुनू हाथक मिलन कराबऽ नहि सकलहुँ
मनक बात मनेमे ...
(आबय बला पोथी अएना मैथिली कविता संग्रह-सम्पादक संतोष कुमार मिश्रसँ)

उमेश मंडल[1]

गनियारि पिसबाक गीत

कहमा के जड़िया कहमा सिलौटिया रे।
ललना रे कओन मुँह भय पीसब, कौशिल्या पीआयब रे।
दछिन के इहो जड़िया, पछिम सिलौटिया रे।
ललना रे पूब मुँह भय पीसब, कौशिल्या पीयाअब रे।
पहिने जे पीलनि कौशिल्या रानी, सुमित्रा रानी रे।
ललना रे सिल धोइ पीयल कैकेयी रानी तीनू गरभ सँओ रे।
कौशिल्या के जनमत राम, सुमित्रा के लछमन रे।
ललना रे कैकेयी के भरत, शत्रुघन, तीनू घर सोहर रे।

---

1 एक बेरक बात थिक। विविध-भारती रेडियो स्टेसनसँ गीत सुनैत छलौं। एखन धरि मैथिली साहित्यसँ कम्मे-सम्म सिनेह छल। ओना परिवारसँ समाज धरि मैथिलिऐक बीच आठो पहर समए बीतैत अछि। कातिक पूर्णिमाक दिन रहने, समाजक माए-बहिन लोकनि सामा भसा आंगन दिसि सोहर गबैत घुमलीह। एकाएक हमरो कानमे गीतक ध्वनि हवामे छिछलैत अबै लगल। रेडियो बन्न कऽ सोहर सुनै लगलहुँ। गीतक स्वर हृदयकेँ झकझोड़ए लगल। जेहने माए-बहीनि लोकनिक स्वरक मधुर टाँस तेहने एकरुपता। जहिना बहीनि, माए-बाप समाजक सखी-सहेली छोड़ि, सासुर जेबा काल, अपन क्रन्दनसँ वातावरणकेँ शोकाकुल बनबैत आ सखी-सहेली सोहरक स्वरसँ विदा करैत, तहिना भऽ गेल। हृदय विदीर्ण हुअए लगल। अनायास मनमे सवाल उठै लगल- (क) की हमर कला-साहित्य, भूमण्डलीकरणसँ आगू बढ़त?, (ख) आकि जतय अछि ततय, अजेगर साँप जेकाँ थुसकुरिया मारि बैसल रहत? (ग) आकि हमर कला-साहित्य मटियामेट भऽ जायत?

एहि प्रश्नक बीच उलझल मोनमे, डिबियाक टिमटिमाइत इजोत जेकाँ आएल जे अपनो मातृभाषा आ मातृभूमिक सेवा लेल किछु कएल जाय! एहि जिज्ञासाक संग अपने लोकनिक बीच, एकटा छोट-छीन संकलन 'संस्कार गीत' राखि रहल छी। आशा अछि जे अधलापर ध्यान नहि दऽ आगूक सेवा लेल प्रेरित आ प्रोत्साहित जरूर करब।

गीतक संकलन किछु पोथिओक अछि आ अधिकतर माए-बहीनिक कंठक सेहो अछि। जहि गीतिकार लोकनिक गीत संकलित अछि, हुनक आभारी छी। आ जे गीत माए-बहीनि लोकनिक कंठक अछि, ओ जहिना कहलनि तहिना लिखलो गेल अछि, तेँ शब्दक फेड़ि-फाड़ आ टूटल सेहो अछि। गीतक संकलन करैमे अग्रज सुरेश मंडल आ अनुज मिथिलेश मंडलक भरपूर सहयोग रहल।

तेलकसाय लगबैक गीत

१

कौने बाबा हरबा जोताओल, मेथिया उपजाओल हे।
कौने बाबी पीसल कसाय, जे कि बरुआ ओँगारल हे।
बड़का बाबा हरबा जोताओल, कि सरसो उपजाओल हे।
ऐहब बाबी तेल पेरौलीह, बरुआ ओँगारथि हे।

२

काँचहि बाँस के मलिया हे,
आकि ताहि मलिया तेल फूलेल हे।
कौने बाबी लगेतीह तेल फूलेल,
आकि कौन बाबी लगेती उबटन हे।
आकि फल्लाँ बाबी लगेती तेल फुलेल,
आकि फल्लाँ बाबी लगेती उबटन हे।

३

गरजह हे मेघ गरजह गरजि सुनाबह रे।
ललना रे ऊसर खेत पटाबह सारि उपजाबह रे।
जनमह आरे बाबू जनमह जनमि जुड़ाबह रे।
ललना रे बाबा सिर छत्र धराबह शत्रु देह आँकुश रे।
हम नहि जनमब ओहि कोखि अबला कोखि रे।
ललना रे भैलहि वसन सुतायत छौड़ा कहि बजायत रे।
जनमह आरे बाबू जनमह जनमि जुड़ाबह रे।
ललना रे पीयर वसन सुताबह बाबू कहि बजायब रे।

४

पलंगा सुतल तोहँ पिया कि तोहें मोर साहेब रे।
ललना रे बगिया जँ एक लगबितहुँ टिकुला हम चखितहुँ रे।
भल नहि बोललिह धनी कि बोलहुँ न जानह रे।
ललना रे बेटबा जँ एक तोरा होइत सोहर हम सुनितहुँ रे।
भानस करैत तोहें गोतनी कि तोहें मोर हित बंधु रे।
ललना रे अपन बालक दिअ पैंच पिया सुनु सोहर रे।
नोन तेल पैंच उधार भेटय आर सभ किछु रे।
ललना रे कोखिआक जनमल पुत्र सेहो नहि भेटय रे।
मचिया बैसल तोरे सासु कि सासु सँ अरजि करु रे।
ललना रे कओन-कओन तप केलहुँ पुत्र फल पेलहुँ रे।
गंगहि पैसि नहेलहुँ हरिवंश सुनलहुँ रे।
ललना रे देवलोक भेला सहाय कि पुत्र फल पयलहुँ रे।
आदित लगैत बिलम्ब भेल होरिला जनम लेल रे।
ललना रे लाल के पलंगा सुता देल पिया सुनु सोहर रे।

दसमासी सोहर

प्रथम मास जब आयल चित फरिआयल रे।
जानि गेल सासु हमार चढ़ल मास दोसर रे।
सासु मोर बसु नैहर ननदी बसु सासुर रे।
घर छथि देबर नदान चढ़ल मास तेसर रे।
बाट रे बटोहिया कि तोहि मोर भैया कि हित बंधु रे।
हमरो समाद लेने जाउ चढ़ल मास चारिम रे।
अन्न पानि किछु नहि भावय खटरस भावय रे।
कहब हम कओन उपाय चढ़ल मास पाँचम रे।
रचि-रचि पतिया लिखाओल नैहर पठाओल रे।
बिनु आमा नैहर विरान चढ़ल मास छट्ठम रे।
आगु-आगु आबय दोलिया पाछु भैया आबय रे।
घुरि-घुरि घर भैया जाउ चढ़ल मास सातम रे।
तन भेल सरिसब फूल देह भेल पीयर रे।
अब न बाँचत जीव मोर चढ़ल मास आठम रे।
घर-घर बाजत बधावा कि भेल बड़ आनंद रे।
अयोध्यामे जनमल राम चढ़ल मास नवम रे।
तुलसीदास सोहर गाओल गाबि सुनाओल रे।
भक्तवत्सल भगवान कि आजु प्रकट रे।

२

एक दिन छल बन झंझर आब बन हरियर रे।
बड़ रे सीता दाइ तपसी कि गरम सँ रे।
के मोरा गरुअनि काटत खिनहरि बूनत रे।
ललना रे मन होय पियरी पहिरतहुँ गोद भरबितहुँ रे।
ललना रे राम दहिन भए बैसतथि कौशल्या चुमबितथि रे।

३

प्रथम समय नियराओल शुभ दिन पाओल रे।
ललना रे देवकी दरदे व्याकुल दगरिन आयल रे।
दोसरो वेदन जब आयल कृष्ण जन्म लेल रे।
ललना रे तेसर हरिक प्रवेश कलेश मेटायल रे।
दगरिन आबि जगाओल केओ नहि जागल रे।

ललना रे हरि देखि सभ मन अचरज सभ हित साधल रे।
सूरदास प्रभु हितकर कृष्ण जनम लेल रे।
बाजन बाजय सभ ठाम देव लोक हरखित रे।

४

उतरि सावन चढ़े भादव चहुँ दिस कादब रे।
ललना रे मेधवा झरी लगाबय दामिनि दमकय रे।
जनम लेल यदुनन्दन कंस निकन्दन रे।
ललना रे फुजि गेल वज्र केवाड़ पहरु सब सूतल रे।
शंख चक्र युक्त हरि जब देवकी देखल रे।
ललना रे आइ सुदिन दिन भेल कृष्ण अवतार लेल रे।
कोर लेल वसुदेव कि यमुना उछलि बहू रे।
ललना रे हरि देल पैर छुआय नन्द घर पहुँचल रे।
नन्द भवन आनंद भेल यशुमति जागल रे।
ललना रे सूरदास बलि जाय कि सोहर गाओल रे।

५

घर से बहार भेली सुन्दरि, देहरि धय ठाढ़ भेली रे।
ललना रे ओलती धय धनि ठाढ़ि कि, दरदे व्याकुल रे।
कथि लय बाबा बिआहलनि, बलमु घर देलनि रे।
ललना रे रहितहुँ बारि कुमारी, दर्द नहि जनितहुँ रे।
अगाध राति बिराल पहर रति, बबुआ जनम लेल रे।
ललना रे बाजय लागल बधाबा, कि गाओल सोहर रे।

६

पहिल परन सिया ठानल सेहो विधि पूड़ाओल रे।
ललना रे भेटल अयोध्या राज ससुर राजा दशरथ रे।
दोसर परन सिया ठानल सेहो विधि पूराओल रे।
ललना रे भेटल कौशल्या सासु लखन सन देओर रे।
तेसर परन सिया ठानल सेहो विधि पूराओल रे।
ललना रे माँगल पति श्रीराम सेहो विधि पूरल रे।

७

गाँव के पछिम एक कुइयाँ सुन्दरि एक पानि भरु रे।
ललना रे घोड़बा चढ़ल एक कुमर पानि के पियासल रे।
पानि पीबू पानि पीबू कुमर सुरति नहि भुलह रे।
तोरो सँ सुन्दर हमर स्वामी जे तजि विदेश गेल रे।
कोन मास तोहरो वियाह भेल कोने गवन भेल रे।
कोने मास जोड़ल सिनेह कि तजि परदेश गेल रे।
फागुन हमरो विआह भेल कि चैत गवन भेल रे।
बैसाख जोड़ल सिनेह कि तेजि विदेश गेल रे।

८

जीर सन धनि पातरि फूल सन सुन्दरि रे।
ललना रे सुतल प्रेम पलंगपर दरदे व्याकुल रे।
सासु जे हुनका अलारनि बहिन दुलारनि रे।
ललना रे तिल एक दरद अंगेजह, होरिला जनम लेत रे।
जाहक हे ननदी जाहक, भइया के बजाबह हे।
ललना रे भइया ठाढ़ देहरि बीच कहु बात मनके रे।

रूपेश कुमार झा "त्योंथ"[1]

खेली सप्पत जा भुइयाँ थान

बड़ रे जतन सँ हम पोसली पुता कँ,
भूखे सुतली अपने मर ओकरा सुतौली खुआ कँ।
अपने हम मूरुख मुदा बौआ कँ पढौली,
काटि कष्ट पोथी लेल ढौआ जुटौली।
देखिते हमर पूत भेल फूटि जुआन,
मोने बीतल हमर कष्ट मुख पसरल मुस्कान।
ओहि बेरा जिद कयलक गेल ओ असाम,
महिनो ने लगलै पठौलक ढौआ कऽ काम।
तंग छली पहिने आब उबार भेल जान,
तकलीफ भेल छू-मंतर भेल दिन हमर असान।
आयल एक दिन बेरा मे बौआ कयने लाल कान,
देखली ओकर कान आकि उड़ल हमर प्राण।
कमाइ हइ लोक ढौआ ढेरी परदेश जा,
मुदा भागि आयल बौआ हमर मारि खा।
किछु दिनक बाद भेल ढौआ केर टान,
भऽ गेल हमर समैया फेरो पहिने समान।
फेर गेल बेटा बम्बइ अपन पित्तीक संग,
छली हम ने हरखित मुदा ओकरा छलै नव उमंग।
एहि बेर कमायल बौआ हमर ढौआ ढेर,
आब ने गरीब रहली देलक दिन फेर।
देखल नहि गेलनि भगवान कँ हमर दिन,
लेला हमर मुखक मुसकी ओ छीन।
आयल फेर बौआ हमर मारि खा बम्बइ सँ,
उपर सँ तऽ ठीके छल मुदा टूटि गेल मोन सँ।
ककरा ने लगै हइ नीक अपन गाम-घर,
पेटक खातिर परदेश जाय पड़ै हइ मर।
भुखले रहब मुदा देबै ने जाय ओकरा देश आन,
अखनिये हम खेली सप्पत जा भुइयाँ थान।

---

[1] पिता-श्री नवकान्त झा, ग्राम+पत्रालय-त्योंथा, भाया-खिरहर, थाना-बेनीपट्टी, जिला-मधुबनी। सम्प्रति कोलकातामे स्नातक (अन्तिम वर्ष)मे अध्ययनरत। साहित्यिक गतिविधिमे सक्रिय, अनेक रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित।

विनीत उत्पल[1]

मनुख आ माल

आइ फरियाएल जाए
अपना सभ मनुख छी आकि माल
किएक तँ दुनूमे छैक
जमीन आ आसमानक अंतर
एकटा पेटक लेल रहैत अछि ललाइत
एकटा परिवारक लेल रहैत अछि कपसैत
एकटा फूसि प्रतिष्ठाक लेल करैत अछि छल-प्रपंच
एकटा पाइ-कौड़ीक लेल घड़ी-घड़ी करैत अछि नौटंकी
एकटा मानसिक संतुष्टि लेल बौराइत अछि दिन-राति
एकटा शारीरिक संतुष्टि लेल होइत अछि व्यभिचारी
एकटा पएरपर ठाढ़ भेलाक बाद माए-बाप कऽ दैत अछि कात

दोसर तँ अछि चारिटा टांगबला
अपन पेट भरलाक बाद दैत छैक दोसरकेँ अवसर
सभ कियो ओकर सहोदर छथि
झूठ लेल प्राण नहि गमबैत अछि
दोसर नहि बौराइत अछि
मानसिक वा शारीरिक संतुष्टि लेल
पएरपर ठाढ़ भेलाक बाद
माए-बाप स्वतंत्र कऽ दैत अछि
एहिनामे के ककरासँ उत्तम

---

[1] आनंदपुरा, मधेपुरा। प्रारंभिक शिक्षासँ इंटर धरि मुंगेर जिला अंतर्गत रणगांव आ तारापुरमे। तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालयसँ गणितमे बी.एस.सी. (आनर्स)। गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालयसँ जनसंचारमे मास्टर डिग्री। भारतीय विद्या भवन, नई दिल्लीसँ अंगरेजी पत्रकारितामे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्लीसँ जनसंचार आ रचनात्मक लेखनमे स्नातकोत्तर डिप्लोमा। नेल्सन मंडेला सेंटर फॉर पीस एंड कनफ्लिक्ट रिजोल्यूशन, जामिया मिलिया इस्लामियाक पहिल बैचक छात्र भऽ सर्टिफिकेट प्राप्त। भारतीय विद्या भवनक फ्रेंच कोर्सक छात्र। आकाशवाणी भागलपुरसँ कविता पाठ, परिचर्चा आदि प्रसारित। देशक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे विभिन्न विषयपर स्वतंत्र लेखन। पत्रकारिता कैरियर- दैनिक भास्कर, इंदौर, रायपुर, दिल्ली प्रेस, दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली, फरीदाबाद, अकिंचन भारत, आगरा, देशबंधु, दिल्लीमे। एखन राष्ट्रीय सहारा, नोएडामे वरिष्ट उपसंपादक।

ई कहैक गप नहि अछि
मनसँ सोचैत आत्मासँ जाँचैत
निश्चित करू जे नीक के?
मनुख आकि माल।

समाजक ई रूप

इहो अछि एहि समाजक चेहरा
दिल्लीक बाटपर बत्ती लाल भेलापर
इंदौरसँ निजामुद्दीन वा पटनासँ दिल्लीक लेल ट्रेन पकड़बा लेल
आ फेर घरक दुआरिपर
दस्तक दैत देखबामे आबैत अछि ओ
नहि तँ पुरूष अछि आ नहि एकटा स्त्री
भरिसक शारीरिक रूपमे
मुदा मन वा अभिनयक स्वरूप
रहैत अछि अलग-अलग से
से हुनकर की नाम देल जाए

माएक कोखिसँ इहो लेलक जनम
भाइ-बहिनक संग पोसाएल-बढ़ल
स्कूलमे पढाइक सीढ़ी चढ़ल
मुदा फारम भरैत काल खसल भारी बिपैत
किएक तँ आपशन छल दू टा स्त्री वा पुरूष
तखन शुरू भेल हुनकर
सामाजिक बहिष्कार
नहि घरक रहल नहि रहल घाटक
परिस्थिति सभकेँ
जीयब सिखा दैत छैक
से देखबामे आबैत अछि
बाटसँ लऽ कऽ ट्रेन धरि।

राजदेव मंडल[1]

आह

लिअ पड़त आह
करुणा अथाह
बाहर शीतलता
किन्तु भीतरमे दाह
चारुभरसँ
घेरलक आह
लोक कहि रहल
वाह-वाह
अछि विश्वास
छूबि लेब आकाश
किन्तु पाइर तर अछि
असंख्य लहाश
चिचिआइत दास
तइयो
बढ़ल जा रहल मनक चाह
पार लगाउत कोन नाह
बिनु लेने आह
कि भेटि सकत
वाह-वाह
परंच,
नहि छी लापरवाह
खोजब नवका राह।

[1] शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल. एल. बी., पता- ग्राम-मुसहरनियाँ, रतनसारा निकट-निर्मली, जिला मधुबनी। प्रकाशित कृति- हिन्दीमे राजदेव प्रियंकरक नामसँ। उपन्यास- जिन्दगी और नाव, पिजरें के पंछी, दरका हुआ दरपन। शीघ्र प्रकाश्य- अम्बरा (मैथिली कविता संग्रह)

ज्ञानक झंडा

अनन्त अभिलाषा
बदलि देलक परिभाषा
आकाश सभ ठाम भरती भऽ गेल
चिड़ै चह-चह
लोग सह-सह
गन्ध मह-मह
अन्न गह-गह
भरल जान-माल
टूटि गेल जर्जर जाल
ज्ञान आब तोड़ए ताल
भागल तंत्र-मंत्र
सर्वत्र चलि रहल यंत्र
आब नहि चलत
अंधविश्वासक हथकंडा
फहरा रहल
विज्ञानक झंडा
चहुँदिश छँटि गेल अन्हार
भऽ रहल जए-जएकार
नित नूतन आविष्कार
अपरम्पार
बना रहल धराकँ स्वर्ग सन
किन्तु कतऽ सँ आनत
ओहन जन-मन
तइयो लगौने आस
कऽ रहल प्रयास
नहि जानि झंडा आब कतऽ गड़त
कोन नव दुनियाँक खोज करत।

झाँपल अस्तित्व

नहि जानि कहियासँ
चाँपल अछि
हमर अस्तित्व
एकटा आकृतिसँ
झाँपल अछि
कखनहुँ काल
ओ देखबैत अछि त्रास
बारम्बार हटेबाक
हम कऽ रहल छी प्रयास
किन्तु ओ नहि छोड़ैत अदिबास
टकराइत रहैत अछि
हमरा मतिसँ
निर्बाध अपना गतिसँ
देखऽ चाहैत छी हम
सरुप
नहि अछि हुनक कोनहुँ रुप
सुनने छलहुँ हम खिस्सामे
एहन अनजानकेँ
देखि सकैत अछि शीसामे
हम मानैत छी
खास ज्ञानेन्द्रियसँ जानैत छी
भीतरमे ओ लगा रहल अछि फानी
सुनि रहल छी वक्र-वाणी
प्राप्त करबाक लेल उत्कर्ष
करऽ पड़त आब संघर्ष
नहि तँ बना सकैत अछि हमरा जोगी
किन्तु अस्तित्वक लेल अछि
ईहो उपयोगी।

रहब अहीं सभक संग

चिचियाकेँ सोर पाड़ैत
हमर कंठ दुखा गेल
पियाससँ जेना
ठोर सुखा गेल
चारुभर भरल लहाश
कऽ रहल अछि हमर उपहास
कियो नहि सुनैत अछि
हमर अबाज
कतऽ चलि गेलाह
हमर समाज
जरुरी छल
एहि रुढ़िकेँ तोड़ि देब
भविष्यक हेतु
नव दिशा मोड़ि देब
अहाँ सभ तँ अपनहि छी अगाध
अग्रसर होऊ छोड़ू विवाद
नहि रोकि सकत कोनो बिघ्न बाध
हम नहि कएलहुँ कोनहु बड़का अपराध
हेओ एमहर आउ
नहि खिसिआऊ
नहि करब आब निअम भंग
नहि करब अहाँ सभकेँ तंग
लिअ अपन राज
नहि चाही हमरा ताज
नहि बदलब आब अपन रंग
रहब मिलि जुलि सभक संग।

नदीक माछ

नदीक कोखिसँ उछलल माछ
कऽ रहल हवामे नाच
यात्रा पहरक सगुनियाँ
छोड़ए चाहैत अछि जलदुनियाँ
देखऽ चाहैत अछि पवनदुनियाँ
नदीमे रहितो नहि पाबि सकल पानिक थाह
सूखलमे जएबाक हेतु खोजि रहल राह
करऽ चाहैत अछि समाजिक हित
बढ़बऽ चाहैत अछि नव दुनियाँसँ प्रीत
छोड़ि देत अपन पुरान बास
करत आब नव-नव प्रयास
खोजत नव-नव चीज
नव-नव बीज
लाभ होएत आकि हानि
जाँचत
केहेन अछि हवा पानि
रचत नव इतिहास
नूतन चास बास
परन्तु
सुनने छल ओ अपनहि कान
कहने रहथिन बूढ़-पुरान
"कहियो नहि जाइहैं ओहि दुनियाँ
ओहिठाम भरल अछि खुनियाँ।"
किन्तु
नव अनुसंधान
माँगैत अछि जीवनदान
तखन भेटैत अछि सम्मान
कोटि-कोटिकैं अन्न प्राण
मुदा ओ अछि अभागल
जलबून्द कड़ी अछि लागल
विफल भेल ओ छल बलमे
पुनः खसल ओहि नदीक जलमे
तद्यपि
बारम्बार कऽ रहल प्रयास
स्पर्शक हेतु मुक्ताकाश
छोड़ि देने अछि मोह एहि जलक
कऽ रहल कर्म चिन्ता नहि फलक।

बाट-बटोही

जाएब ओहि पार
खसौने घाड़
पुरान पहाड़
बरिसोसँ अछि ठाढ़
हमरा मार्गकेँ कएने अवरुद्ध
हड़पल भेल क्रुद्ध
कतेको लगेलहुँ बाँहिक जोर
दुखा रहल अछि पोर-पोर
इंच भरि नहि भेल टसमस
भऽ गेलहुँ हम बेबस
नहि कियो दऽ रहल अछि साथ
पहाड़ीपर पटकब आब माथ
डूबा देबैक हम खूनसँ
अपना घामक बूनसँ
विफल भेल छी देह जर्जर
पाछाँ सुनैत छी असंख्य स्वर
स्त्री-पुरुष, बाल अबाल
आबि रहल अछि तोड़ैत ताल
गाबि रहल अछि समूह गान
पुनः आएल शरीरमे जान
मनमे उठए लागल उफान
कतऽ गेल ओ पहाड़ी
काँटसँ भरल झाड़ी
आहि रौ तोरी ई कोन बात
गड़ि गेल भूमि आकि भागि गेल कात
आकि नभमे उड़ा देलक बसात
मार्ग भऽ गेल तत्क्षण समतल
चल-चल चल-चल
जय हो जनबल
ताकि रहल अछि बटोहीकेँ बाट
नहि कियो लगा सकैत अछि टाट।

सीमा परक झूला

ई जर्जर झूला
लगैत अछि जेना तुला
सीमापर लटकल अछि
पुरान डारिपर अटकल अछि
पेंगापर झूलि रहल छी
आब स्वयंकेँ बिसरि रहल छी
अन्तिम छोरसँ
अपन बाँहिक जोरसँ
लगा रहल छी आस
नहि छी निराश
आस-पास
प्रभातक उजास
कखनहुँ एहिपार
कखनहुँ ओहिपार
बारम्बार
दोहराबैत छी कार्य ब्यापार
कट-कट-कट-कट
टूटि रहल डारि
दैत गारि
तइयो सम्हारि
धरतीसँ नाता जुटि रहल अछि
गाछसँ झूला छूटि रहल अछि
एम्हर आकि ओम्हर खसब
रहब स्वछन्द आकि जालमे फँसब
जीएब वा मरब
फेर किएक डरब
चाहे खसब एहिपार
चाहे खसब ओहिपार
रहत इएह धरती
इएह भाव आर विचार
सुख हो वा दुख
रहब अन्ततः मनुक्ख।

चीड़ीक जाति

धायल पाँखि पर
लटकल लहाश
लऽ कऽ पहुँचल
नीड़क पास
ओ जे ओकर नहि
किन्तु ओकरे छल
लहू सँ भीजल तन
कण-कण
सशंकित अछि चीड़ीक मन
तइयो
मातृत्व सिनेह
पियाबए चाहैत अछि
खियाबए चाहैत अछि
लोलमे राखल अहराक दाना
अनजान बच्चा गाबि रहल गाना
पाछू लागल शिकारी
बनल अछि अधिकारी
जेकरा भूखल आँखिमे
तरजू अछि लटकल
स्वादक बैटखारा
अछि मनमे अटकल
एकटा पलड़ामे प्रौढ़गात
दोसरमे अछि नवजात
घायल देह
टुटैत नेह
टप-टप चुबैत खूनक बूनसँ
धरती भऽ रहल स्नात
पूछि रहल अछि चिड़ै
अपना मनसँ ई बात
आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति
कि नहि बाँचत हमर जाति...?

शेफालिका वर्मा[1]

बाजी

ई हमर देश थीक
एहिठाम मानव की मानवकेँ चीन्हि सकल?
तरहत्थीपर टघरैत पारा सन मानवक मोन
स्थिरता नहि।

आदमीक जंगल बढ़ि रहल
गाछ बृच्छ कटि रहल
कोनो बाट घाट, कोनो राह हाट
मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारा
वा
चर्चक हो वोसारा
भीड़क अन्त नहि...
की पएरे की रिक्शा
की कार की स्कूटर
तरहक सवारीपर भगैत
उजहिया चढ़ल मानवक अन्त नहि...
ई दिशाहीन भीड़:
भूत भविष्यक चिन्ता नहि
वर्तमानसँ संतुष्टो नहि
भागि रहल निरन्तर
भागि रहल जन प्रवाह...
संवेदना तितीक्षा
नहि भेटत शब्दकोशोमे जल्दी
मानवक आवश्यक आवश्यकता सन
शब्दकोशो आकार पाबि रहल

[1] जन्म:९ अगस्त, १९४३,जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर । शिक्षा: एम.ए., पी-एच.डी. (पटना विश्वविद्यालय), ए. एन. कालेज मे हिन्दीक प्राध्यापिका (अवकाश प्राप्त)। प्रकाशित रचना: झहरैत नोर, बिजुकैत ठोर। नारी मनक ग्रन्थिकेँ खोलि करुण रससँ भरल अधिकतर रचना। प्रकाशित कृति :विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकाश (कथा संग्रह), यायावरी (यात्रा-वृत्तान्त), भावाञ्जलि (काव्यप्रगीत)। ठहरे हुए पल (हिन्दी) ।

निरर्थक शब्द संसारक प्रयोजने की?
कागदोक दाम तँ बढ़ि गेल
पत्र-पत्रिका छापत कोना
प्रदूषणक हल होएत कोना
जे एकटा गाछ रोपल जाइत अछि तँ
सए नेना जनम लए लैत अछि
ऑक्सीजन पाओत कत्तऽ मेनिंजाइटिस
एड्स स्पोंडीलाइटिस सन अनचिन्हार बीमारी लोककेँ मारए लागल
एतबहि नहि
दहेजक बढ़ैत रोग बेटीक बापकेँ
ढाहए लागल
ओ दिन दूर नहि अछि जखन
मानव मानवकेँ मारि खाए लागत
आ एकटा प्रश्न तखनो समस्या बनल रहि जाइत अछि
मानवक बेशी वृद्धि की
महगी क..?
बाजी दुनूमे लागल अछि
के कतेक आगू
केकर कतेक जोर...????
राम कतए चलि गेल...

अनबुज्हल

अंतरिक्षसँ अकाससँ अन्तरक उजाससँ
स्वरपर स्वर आबि रहल अछि
कानमे गूंजि रहल अछि................
हम अहाँकेँ देखने छी
मुन्हारि संझाक रुसल बेरियामे ..
जखन अन्हार किरणक छातीसँ
प्रकाश मचोरि पिबैत अछि
अधिककाल अहाँकेँ देखने छी
गुज्ज गुज्ज अन्धकारमे
इजोतक निर्माण करैत

हतास निरास मानवकँ जीवनक वरदान दैत :
अहाँक अंतर्मन
अबाध लेखनी थिक
अनकहल परिभाषाकँ जाहिसँ आकार भेटल
शब्दकँ अर्थ भेटल
स्वप्नक सिनेह भेटल
तैयो
अहाँकँ बुझबाक प्रयत्न केओ नहि केलनि
त्यागमयी बनि पीबि रहल छी विष
बाँटि रहल छी अमृत अहाँ
शांतिप्रिय शांतिप्रिय

प्रसंग चाहे जे होइ

सम्बन्धक सीमामे सिनेह नहि
स्वार्थ बसैत अछि, मानवक भेखमे
राम नहि रावण घुमैत अछि ...
स्वार्थपर जोड़ल संबंधक देवारक
प्लास्टर झरि जाइत छैक
विश्वासक कांच रंग कालक
रौदमे उड़ि जाइत छैक ....
रंगहीन गंधहीन निर्जीव
रिस्ताक लहासकँ क्रोंस जकाँ
अपन कान्हपर उठेनाइ
अनुचितमे अपन उचितकँ मारनाइ
ई परिभाषा रिश्ता नाताक खूब अछि ....

नाम केओ लाख राखि लैक
राम सन राजा
लक्षमण सन भ्राता
सुग्रीव सन दोस्त
नहि तँ भेल अछि आ नहि तँ होएत
हंह ...

सीता मौन मूक भए
अग्निपरीक्षामे जरबाक परम्पराक
जन्म देलन्हि आ तैं सीता आइयो
जरि रहल अछि
प्रसंग चाहे जे होए ....

वचनक मास

अहाँक वचन हम आएब
हमर आँचरमे इन्द्रधनुष उतरल
सतरंगी भावनामे
मोनक रस रूप पसरल
आ क्षणपर क्षण कपूर जकाँ उड़ैत रहल
कैलेंडरक पन्ना फाटैत रहल
वचनक ओ मास कहियो नहि आएल
कहियो नहि आएल
जरैत सिगरेट जकाँ मोन हमर
दहैत रहल
कामना छाउर बनैत रहल
मृत्युक महक पसरैत रहल
वचनक ओ मास कहियो नहि आएल
कहियो नहि आएल............

महाकान्त ठाकुर[1]

की चाहलौं

मुक्ति चाहएबला लेल जेल ऐ
धरतीकेँ जेल बना देल गेल ऐ
कहाँ चाहलौं हमर जन्म हुअय?
छुच्छे भूख पियास अकाल देखल
जननीक आँखिमे घुमरैत हाहाकार देखल
ठिठुरैत पूसमे
कहाँ चाहलौं हमर जन्म हुअए?
सर्दी गर्मी वस्त्रहीन सहल
नेन्नाने नेनपन बूझल
स्वान तुल्य जीवन लेल
कहाँ चाहलौं हमर जन्म हुअए?
देश जँ डकैत लेल
शांति ऐ लठैत लेल
भूखसँ ऐंठल कोखिसँ
कहाँहा चाहलौं हमर जन्म हुअए?
कहू कतए भूल ऐ?
पापक की मूल ऐ?
भ्रूण हत्याक सुविधा छल
कहाँ कहलौं हमर जन्म हुअए?
नंगटे तँ सभ छलौं
कहाँ कियो मर्द भेलौं
नपुंसक संसारमे
कहाँ चाहलौं हमर जन्म हुअय?
सम्राट कहए शांत रहू
भले कते क्लांत बहू
आत्मघाती बम बनए लेल
कहाँ चाहलौं हमर जन्म हुअय?
सूर्य सन इजोत होएत
कर्म नित्य कष्ट घोएत देवतोसँ श्रेष्ठ नर
तँ चाहलौं हमर जन्म हुअए!!

---

[1] जन्म भूमि- बाबू पाली (पाली मोहन), खजौली, मधुबनी, मिथिला। प्रकाशन- धरती आ चान (बाल साहित्य), केहन स्वर्ग (काव्य संग्रह) आ अनेको पत्र पत्रिकामे कविता, कथा तथा निबंध प्रकाशित।

उदारीकरण

हाथमे कटोरी ऐ
मौनी चंगेरी चंगेरा ऐ
विश्वबैंक संग
अमेरिका मुसिआइए
भूतपूर्व जगत गुरु
थोड़बो ने लजाइए।
आर माँगू आर माँगू
जे जे फूड़ाइए।
जी आठ देशक तिजौरी
फूजल ऐ
लीअ उधार
बीकए दियौ नालको बालको
बैंक बीमा कंपनी
गैस तेल भंडार
नदी पुल पहाड़
साकिन होबए धरि
खाइत रहू उधार।
हरीशचन्द्रक वंशजकँ
राज पाट घुमा देत महाधिपति अमेरिका
स्टार वारक बाद।

स्व. कालीकांत झा "बुच" (१९३४-२००९)[1]

विरक्ति

क्षण भंगुर संसार सजनि गय एहि ठाँ दुःखक पहाड़ भरल अछि,
नोरक निरझर धार सजनि गय उमड़ल बनल दहाड़ चलल अछि ।
बचा सकब कहू कोना आनकेँ, हम तँ अपने डूमि रहल छी ।
हँसा सकब कहू कोना आनकेँ, सिंगड़हार भऽ चूबि रहल छी ।
सजनि गय हिस्सक सागर खार बनल अछि, नोरक........।

मृगी जकाँ हम काँपि रहल छी, झाँखुरसँ तन झाँपि रहल छी।
देखि-देखि संधान सायकक, आयुक छाँटी मापि रहल छी।
करब कोना पथपार सजनि गय ठाम-ठाम सौतार भरल अछि,
नोरक .....।।

विरहक शून्य सुदूर देशमे, दिवसक कठिन करेज जड़ल अछि।
रजनी अछि जोगिनीक वेषमे, आंचर तर लुत्ती पसरल अछि।
चिर-वियोगक भार सजनि गय लऽ कऽ कहार चलल अछि,
नोरक ....।।

विशेष:- स्व. कवि एहि कविताक रचना सन् १९९० ई. मे अप्पन अर्धांगिनीक मृत्युक वियोगमे कएलनि ।

---

1 हिनक जन्म, महान दार्शनिक उदयनाचार्यक कर्मभूमि समस्तीपुर जिलाक करियन ग्राममे १९३४ ई. मे भेलनि। पिता स्व. पंडित राजकिशोर झा गामक मध्य विद्यालयक प्रथम प्रधानाध्यापक छलाह। माता स्व. कला देवी गृहिणी छलीह। अंतरस्नातक समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुरसँ कएलाक पश्चात बिहार सरकारक प्रखंड कर्मचारीक रूपमे सेवा प्रारंभ कएलनि । बालहिं कालसँ कविता लेखनमे विशेष रूचि छल। मैथिली पत्रिका मिथिला मिहिर, माटि- पानि, भाखा आ मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित पत्रिकामे समए-समयपर हिनक रचना प्रकाशित होइत रहलनि। जीवनक विविध विधाकेँ अपन कविता आ गीतमे प्रस्तुत केलनि। साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा प्रकाशित मैथिली कथाक इतिहास (संपादक डा. बासुकीनाथ झा) मे हास्य कथाकारक सूचीमे डा. विद्यापति झा हिनक रचना ‘‘धर्म शास्त्राचार्य"क उल्लेख कएलनि । मैथिली अकादमी पटना एवं मिथिला मिहिर द्वारा समय-समयपर हिनका प्रशंसा पत्र पठाओल जाइत छल। श्रृंगार रस एवं हास्य रसक संग-संग विचारमूलक कविताक रचना सेहो कयलनि। डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश संकलित मैथिली साहित्यक इतिहासमे कविक रूपमे हिनक उल्लेख कएल गेल अछि।

पोताक अट्ठहास

पोता - खेत टी खरिहान टी
आंगन टी दलान टी
बाबा आब अहींक कानमे,
टिटही टहकै टी टी टी।।

बाबा - प्याली पी भरि चुक्का पी,
घट घट पी सूरूक्का पी,
रौ कुलबोरन गाम घिनौले,
लाते, जुत्ता, मुक्का पी।।

पोता - लत्ती कू बा झब्बा कू,
अब्बा कू बा बब्बा कू,
आगाँ पाछाँ डोरा डोरिमे
डोलए दू-दू डिब्बा कू।।

बाबा - जऽर छू जमौरा छू,
नीपल पोतल दौरा छू,
मुतिते घऽरक सीरा चढ़ले,
हगिते तुलसी चौड़ा छू ।।

पोता - लोक कहैए बाटोपर सँ,
टीली लीली फट्ट औ
भेल अहाँकेँ खाटोपर
उतरब दुरू घट्ट औ

आब अहाँसँ डऽर कथी केल
कतबो हुआ हुआ भूकू
हुआ-हुआ की - की हुआ,
मांगय विधकरी नूआ,
मैया-धीया साड़ी चाही
पुरहितकेँ धोती धूआ
काँच बाँसक नऽव पालकी आबए चारि कहरिया जू,
काशी ....।

बाबा - कूथि-कूथि कठगील उगै छी,
देखे टन दऽ चलि जेबे
तोरे हम बरखी कऽ देबौ
हमर श्राद्ध तोँ की करबैं
सभ अपना नेनाकेँ बरजू चेता दैत छी औ बाबू
जऽर छू .... ।।

दीनक नेना

देखहीं रौ बौआ, ई कौआ गबै छौ।
सुनहीं रौ तोरे, कुचरि सुनबै छौ।।

एम्हर तोँ सूतल छैँ माँझे ओसारपर,
ओम्हर ओ नाँचै पुबरिया मोहारपर,
पुरबा बसात बँसुरी बजबै छौ.............. ।
सुनहीं रौ ....।।
तोरा लय बनलौ ने बिस्कुट आ चॉकलेट,
नोनो रोटीसँ ने भरतौ ई गोल पेट,
बातक मधुर स्वरलहरी अबै छौ................. ।
सुनहीं रौ ....।।

बापे तोहर बनलौ परदेशी,
चिट्ठी ने एलौ भेलौ दिन बेशी,
माँक निनायल व्यथा जगबै छौ ।
सुनही रौ ....।।

की बुझबेँ ककरा कहै छै गरीबी,
सपनोमे सुख नहिं जतऽ श्रमजीवी,
लुत्ती लगा कऽ नगर बसवै छौ .... ।
सुनहीं रौ ....।।

कोरामे तोरा सुताबै छौ बिनियाँ
झटकल औ अबिहें रौ, नूनूक निनियाँ,
तोहर उपास हमरा लजबै छौ,
सुनहीं रौ ....।।

मनीष ठाकुर

विरह गीत

चेहरापर पइन छन्हि,
आँखिक झील सन गहराइमे, किछु तँ जरूर छन्हि,
विरहक पीर छन्हि, वेदना गंभीर छन्हि
स्पष्टतः हुनकर आँखि, केकरो प्रतीक्षामे, अतीव अधीर छन्हि,
चेहरापर उदासीक स्पष्ट कइक चिन्ह छन्हि
किन्तु नहि, ई तँ कोनो आम वेदनासँ पूर्णतया भिन्न छन्हि,
साड़ी छन्हि अस्त व्यस्त
देखियौ तँ ! ओहो व्यस्त, बैसल छथि चिन्तनमे;
गहींर कोनो सोचमे अपने ओ डूबल छथि।
बात मुदा कहत के? किएक ओ मौन छथि?
मोनमे विचारक ई, केहेन छन्हि सतत प्रवाह?
लगैए ब्रह्मों नहि, पाबि सकता मनक थाह
के छथि? कतए के? कोन गामसँ आएल छथि?
मन्दिरक आंगनमे, एहि पवित्र प्रांगणमे,
भगवानक पूजा लेल उद्यत की बैसल छथि?
दिव्य रूप शोभित ई रमणी जे बैसल छथि,
देव पूजा हुनकर तँ, मात्र एकटा बहन्ना छन्हि।
मन्दिरमे आबए के, अश्रुकेँ बहाबए के,
प्रियतम जे हुनकर परदेस जा कऽ बैसल छथि,
भगवानक नामपर हुनका बजाबए के
बैसल ओ सोचै छथि- प्रियतमक गप सभ,
पूछै छथि मने मन-
"हमरा बतबियौ ने- सजा ई केहेन ऐह?
किएक ई विरक्ति ऐह, दाम्पत्य जीवन सँ ?
अपन एहि दासीकेँ किएक बिसरने छी?"
किछो नहि भेटै छन्हि, हुनका जबाब कतहु।
ई सभ तँ गप्प मुदा मनक भुलाबा छै, मात्र बहलावा छै।
मेनको तँ जिनकर सौन्दर्यसँ जरै छथि,
पारलौकिक सुन्दरिकेँ, छोडिकेँ बैसल ओ-
केहेन मनुख छथि, निर्दय आ निष्ठुर छथि।
पैसा कमाबए ले, प्रतिष्ठा पाबए ले,
जे किछु काज संभव छन्हि, करए लेल आतुर छथि।

किन्तु ओ ई बिसरल छथि जे-
पत्नी आ अपन सुपुत्र, हुनकेपर निर्भर छथि।
मात पिताक प्रति हुनक कर्तव्य की?
मात्र अधिकारे टा! हुनकर मन्तव्य छन्हि!!
मानल अपन भविष्य, हुनके बनेबाक छन्हि
प्रतिष्ठा जे पएबाक छन्हि- मेहनति जरूरी छै।
अपने छथि दूर मुदा दिलसँ किएक दूरी छै।
हुनक एहीमे मान, यैह मात्र छै निदान- पैसा रहए गुलाम;
इंसां तँ मालिक छै- भौतिक सभ वस्तुक।
भौतिकता इंसांपर, शासन जे करतै तँ
ई तँ हेबाके छै, भौतिकता हंसैत छै, मानवता कनै छै।

/

चन्द्रकान्त मिश्र[1]

जागु-जागु मैथिल

कुम्भकर्णी नीन्न तोडु,
आपसमे आपक्ता जोडु।
साधनहीन जर्जर समाजमे,
विकाशक नव मन्त्र फूँकू।।
आबो बदलू अपन मिजाज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।
कतए गेल शान मिथिलाक?
कतए गेल दूधक बहैत धार?
सोना उगलैत माटि कतए गेल,
कतए गेल ओ बात-विचार?
बुझु आइ एकर राज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।

[1] जन्म-३०.१२.१९६८ पिता- श्री जनार्दन मिश्र, ग्राम-महथौर गोठ, पो-महादेवमठ, थाना-अन्धामठ, जिला-मधुबनी।

सभटा विकास मंत्रीजीक घरमे।
बाँचल लोक हकन्न कनै अए।
एयर कंडीशनक नाम सुनै छी,
रौदमे केहेन देह जड़ै अए।।
सुखायल सोणित करब कोन काज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।
टूटल सड़क अन्हार गाम,
भेटय नहि ककरो कोनो काम।
मुलूक छोड़ि भागए पड़ल,
एलहुँ बड़ दूर आन ठाम।।
रक्षक पहिरने छथि भक्षकक ताज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।
चारा खाइ छथि तेल पिबै छथि,
अलकतरासँ मोंछ टेरै छथि।
सबहक हिस्सा खएबाक खिस्सा,
मंत्रीजी क्षणहिमे गढ़ै छथि।
शर्म बेचलथि बेचलथि लाज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।
मैथिल आइ उपेक्षित बनलथि,
मिथिलाक अछि हाल-बेहाल।
भासए हेंजक हेज माल-जाल।।
मंत्री करथि तइयो पाउज।
जागु-जागु मैथिल समाज।।

कुसुम ठाकुर

चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ

बिसरल छलहुँ हम कतेक बरिस सँ,
अपन सभ अरमान आ सपना।
कोना लोक हँसए कोना हँसाबए,
आ कि हँसीमे सामिल होमए।
आइ अनचोक्के अपन बदलल,
स्वभाव देखि हम स्वयं अचंभित।
दिन भरि हम सोचिते रहि गेलहुँ,
मुदा जवाब हमरा नहि भेटल।
एक दिन हम छलहुँ हेराएल,
ध्यान कतए छल से नहि जानि।
अकस्मात मोन भेल प्रफुल्लित,
सोचि आएल हमर मुँहपर मुस्की।
हम बुझि गेलहुँ आजु किएक,
हमर स्वभाव एतेक बदलि गेल।
किन्कहुपर विश्वास एतेक जे,
फेर सँ चंचल, चुलबुली कन्या बनि गेलहुँ।।

अभिलाषा

अभिलाषा छल हमर एक,
करितौंह हम धियासँ स्नेह ।
हुनक नखरा पूरा करैमे,
रहितौंह हम तत्पर सदिखन।
सोचैत छलहुँ हम दिन राति,
की परिछब जमाय लगाएब सचार।
धीया तँ होइत छथि नैहरक श्रृंगार,
हँसैत धीया कनैत देखब हम कोना।
कोना निहारब हम सून घर,
बाट ताकब हम कोना पाबनि दिन।
सोचैत छलहुँ जे सभ सपना अछि,
ओ सभ आजु पूरा भऽ गेल।
घरमे आबि तँ गेलीह धीया,
बिदा नहि केलहुँ, नञि सुन्न अछि घर ।
एक मात्र कमी रहि गेल,
सचार लगायल नहिये भेल।।

शिव कुमार झा ‘‘टिल्लू’’[1]

चश्माक बोखार

सोलहममे कएल अंतःस्थ प्रवेश,
हुलसल मन गेलहुँ नवल देश ।
हिय बसथि कला । धयलहुँ विज्ञान,
राखल जननी इच्छाक मान ।
वैद्य अंगरेजिया बनि बचाबू दीनक परान,
अर्थहीन मिथिलामे बढ़त शान।
धऽ ध्यान सुनल सृष्टिक इच्छा,
गाँठ बान्हि लेलहुँ लऽ गुरूदीक्षा।
कॉलेजमे बीतल पहिल सत्र,
आओल तातक आदेश पत्र।
पढ़िते आबू अहाँ अपन गाम,
हएत ज्येष्ठक विवाह विद्यापति धाम
तन झमकि गेल, मन गेल मुदकि
भौजीकेँ देखबनि हम हुलकि ।
आगत रवि पहुँचल जनम ग्राम,
शत अभ्यागत छथि ताम-झाम ।
चहु - दिशि भऽ रहल चहल पहल,
चिन्ह-अनचिन्ह सखासँ भरल महल।
एक नव नौतारि बहुआयामी,
पूछलसँ छथि छोटकी मामी ।
प्रथमहि हुनकासँ भेंट भेल,
भेल दुनू गोटेमे क्षणहि मेल।
साँझे औतीह दीदी अनिता,
आकुल माँक एक मात्र वनिता ।
देखिते देखैत आबि गेल साँझ,
माँ तकिते बाट ओसार माँझ ।

---

[1] पिताक नाम : स्व. काली कान्त झा ‘‘बूच’’, माताक नामः स्व. चन्द्रकला देवी, जन्म तिथिः ११.१२.१९७३ शिक्षाः स्नातक (प्रतिष्ठा)। जन्म स्थानः मातृकः मालीपुर मोड़तर, जि.- बेगूसराय, मूलग्रामः पत्रालय-करियन, जिला-समस्तीपुर, पिन: ८४८१०१ अन्य गतिविधिः वर्ष १९९६सँ वर्ष २००२ धरि धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक गतिवधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क नेतृत्वमे संलग्न।

दीदी आंगन आयलि हँसिते हँसैत
माँ गऽर लगौलनि ठोहि कनैत ।
दीदीक नयन हेरायल रिमलेसमे,
देखि मामी पड़ली पेशोपेसमे।
चश्मामे सुन्नर दाइक विभा,
बढ़ि रहल हिनक नयनक शोभा ।
मामी! ई सऽख नहि आँखिक इलाज,
माथ दर्दसँ छल बाधित सभ काज।
सुनि मामी मोन भऽ गेल अलसित,
हुनक वाम आँखिमे पीड़ा अतुलित ।
नोचिते नोचैत भेल नयन लाल,
दर्द पसरि रहल सम्पूर्ण भाल।
आंगन दलान पीड़ा किल्लोल,
आँखि धोलनि लऽ जल डोले डोल।
फूलि गेल नयनक अधर पल,
हम सेकलहुँ लऽ गुलाब जल।
वैद्यो आयल नहि कोनो असरि,
कछमछ कऽ रहली- रहली कुहरि।
मा तँ कयलनि बाबूजीक ध्यानाकर्षण,
आँगनमे आबि ओ दऽ रहला भाषण।
सभ दोष सारक नहि दैछ ध्यान,
वयस तीस मुदा एखनहुँ अज्ञान।
रक्त जमल विलोचन झिल्लीमे,
सैनिक कंत पड़ल छथि दिल्लीमे।
सरहोजिसँ पुछलनि पीड़ाक काल,
पहिल बेर भेल छल परूकाँ साल।
माँसँ कहलनि लाउ नव अंगा,
हिनका लऽ जायब दड़िभंगा ।
तिरस्कार करब नहि हएत उचित,
कनिया दरदसँ अति विहुँसित ।
काल्हि अछि विवाह अहाँ जुनि जाऊ,
करैत छी उपाय नहि घबराऊ
भोरे 'टिल्लू' जेता हिनक संग,
नहि विवाहमे कऽ सकलाह हुड़दंग ।
भातृक सासुर जेता चतुर्थीमे,
मातृ आदेश लागल हम अर्थीमे।
नहि बात काटल शांत छलहुँ सुनैत,

राति बितल सुजनीमे कनिते कनैत।
कोन बदला लेलक बापक सार,
अपन संकट बान्हल हमरा कपार।
मामीकेँ हम नहि चीन्हि सकलहुँ,
भीतरसँ इन्होर ऊपर शीतल ।
नहि जा सकलहुँ हम बरियाती,
गाबै छी हुनक दुःखक पाँती,
भोरे उठि दड़िभंगा जा रहलहुँ,
नैनक शोणितसँ नहा रहलहुँ।
पहुँचल डॉक्टर मिसिरक क्लिनिक,
चक्षुक चिकित्सक सभसँ नीक
दुआरे पर कम्पाउन्डर नाम पुछल,
मामी नुपूर कहनि ओ कुकुर लिखल।
देखऽ मे भल पर वज्र बहीर,
उपरि मन हँसल, भीतर अधीर ।
वैद्य मिसिर कहल नहि दृष्टि दोष
दुहू आँखिये देखै छथि कोसे- कोस।
नेत्रक आगाँ नहि अछि अन्हार
हिनका लागल चश्माक बोखार ।
हम लिखि दैत छी शून्य ग्लास,
बुझा दिऔन हिनक रिमलेशक प्यास।
ताहूसँ जौं नहि हेती नीक,
आँखि सेकू बनि स्नेही बनिक,
अधरपर मुस्की आगाँ अन्हार,
कानल मन सोचि विवाहक मल्हार।
डॉक्टर बनक तृष्णा मनसँ भागल,
एहेन मरीज भेटत तँ हएब पागल।
धुरि गाम माताकेँ करब नमन,
तोड़ू जननी हमरासँ लेल वचन ।
चशमिश नैन मामी छथि अति गदरल,
हमर योजना हिनक भभटपनमे उड़ल ।

हिंसक नानी

खापड़ि बेलनाक कहानी,
आब नहि दोहराबू अय नानी ।।
नाना बनल छथि सियार,
भक छथि जेना हुलुक बिलार,
दंतक गणना घटि कऽ बीस
हुरथि गूड़ चूड़ाकेँ पीस
गाबथि दारा दरद जमानी ।
आब..........।।
वरनक बर्ख भेल चालीस,
अर्पित अहँक चरणमे शीश,
अहाँ लेल लबलब दूध गिलास,
नोर पीबि अपन बुझाबथि त्रास,
क्षमा करू! छोड़ू आब गुमानी ।
आब............।।
अवकाशक बीति गेल दस साल,
पेंशनसँ आनथि सेब रसाल,
भरि दिन पान अहाँक गाल
ऊपरसँ मचा रहल छी ताल,
चमेलीसँ भीजल अछि चानी
आब............।।

कतेक दिन सुनता पितृ उगाही,
संतति पूरि गेलनि दू गाही,
मामा मामीक बिहुँसल ठोर,
माँ छथि, चुप्प! साधने नोर,
कोना बनि जेता आत्म बलिदानी
आब.............।।

कोप भवनमे कनियाँ

रूसलि किए सूतलि छी बनबू ने कनेक चाह्र अय ।
मिथिला हम चललहुँ, टाटानगरीसँ आइ अय।।
अहाँ जौं एना रहब तँ हम कोना जीअब,
सदिखन कनिते-कनिते व्यथे जहर पीअब ।
एना अहाँ रूसब तँ हम कऽ लेब दोसर सगाइ अय,
मिथिला ....।।

अहाँक रूप देखिते कामदेवो कानैत छथि,
"मृगनयनी" कें ओ उर्वशी मानैत छथि ।
बिहुँसल मादक घुघना लागै लौंगिया मिरचाइ अय,
मिथिला ....।।

छगनलाल ज्वेलरीसँ कनकहार लायब,
आ जुरैन पूनमकें, पार्कमे घुमाएब।
हहरल मनक तृष्णा, नहि बनू हरजाइ अय,
मिथिला ....।।

ऊठू प्रिये, अहाँ जल्दी नहाबू,
कोप भवनसँ उठि कऽ लगमे आबू ।
मंदहि मुस्की मारू, हम अनलहुँ अछि मलाइ अय,
मिथिला ....।।

प्रेयसीक विलाप

लागै बरखा इन्होर,
मारै बएसक जोर,
मिलनक आशामे बैसलि-
छी आबू ने चकोर ।

बाटे तँ तकिते तकिते,
नयन सूखि गेलै,
प्रेयसीक विलापपर नहि
अहाँक ध्यान एलै ।

ठनका गर्जय मांचल शोर,
तिरपित नृत्य मोरनी मोर ।
मिलनक आशामे बैसलि,-
छी आबू ने चकोर।
बेदर्दी जुनि बनू,
मोन टूटि गेलै।
पावसक शीतलता-
आतप्त भेलै।

लुप्त भगजोगिनी दर्शए भोर,
लटकल मेघ गगन घनघोर,
किएक हृदय तोड़ि रहलहुँ ।
हा ! हम्मर मन चित चोर ।

धर्मेन्द्र विह्वल

ब्रम्ह्बाबाक अवसान

सरधुवा जोनिडाहा
जानि ने कतऽसँ फेर आबि गेल
लाठि टेकि चलैत
एकटा वृद्धाक मूहसँ
अस्फूटरुपेँ किछु अक्षरक
उच्चारण भेलै
कहुना सही
हम अपना मोने जीबैत तँ छलौं
मुदा, मुदा ई जोनिडाहा
ओकर मूह अनायास बन्द भऽ गेलै,
ओ वृद्धा जे पागलि
घोषणा कऽ देल गेल छलि
ब्रम्हकथानक डिहवारक पँजरा
ओकर आश्रय बनल छल
सभ किछु नष्ट भऽ गेल
आब ई ब्रम्होल बाबा
रहताह कि नहि ?
ओकर मूहक बनैत बिगडैत आकृतिसँ
ओकर चिन्ताबक पराकाष्ठाक
अनुमान कएल जा सकैत अछि
एखन धरि तँ ब्रम्ह्बाबा जीवित छथि
आब रहताह कि नहि ?
वृद्धाक आँखि घोकचैत जा रहल छै ।

ओकरासभक अन्त होबाक चाही

काल्हिधरि उजाड रहल गाछमे
छोट छोट पल्लव सभ
अंकुरित भेल अछि
ओ सभ तोहर अनुमतिए बिना
अंकुरित भऽ गेल

आब सौंसे गाछ पसरि रहल अछि
ओ सभ सामन्त अछि
सामन्तक अन्त करबाक चाही
सभ गाछकेँ
जड़िसँ काटि देबाक चाही ।
नदी सभमे
वर्षोसँ पानि बहि रहल अछि
बहैत बहैत एक ठामसँ
दोसर ठाम जाइत अछि
ओ सभ तोहर अनुमतिए बिना
बहैत अछि
ओ सभ साम्राज्यवादी अछि
साम्राज्यवादीक अन्त करबाक चाही
सभ नदीक
जलप्रवाहकेँ रोकि देबाक चाही ।
चहुदिसक वातावरण
बयारयुक्त अछि
बयारो अनेरे बहैत अछि
एकर कोनो सीमा नहि छैक
कतहुसँ कतहु पहुँचि जाइए
ओ सभ तोहर अनुमतिए बिना बहैत अछि
ओ सभ विस्तारवादी अछि
विस्तारवादीक समूल नष्ट होएबाक चाही
बयारकेँ बहबासँ रोकबाक चाही।
ओ सभ साँच बजैए
ओकरा सभकेँ झूठ बाजऽ नहि अबै छै
जे देखैए से कहैए
ओ सभ तोहर अनुमतिए बिना
निरन्तर बजिते जा रहल अछि
ओ सभ युगविरोधी अछि
युगविरोधी सभक अन्त करबाक चाही
ओकरा सभकेँ बजबासँ रोकबाक चाही
ओकरा सभकेँ
सभ दिनक लेल चुप कऽ देल जेबाक चाही ।

रघुनाथ मुखिया[1]

अनुत्तरित प्रश्न

सहोदर अर्णवानन्द आ प्रणवानन्दक मध्य बैसलि
हमर अपूर्णे त्रिवेर्षे तनया
मैथिली एकलव्या
स्वतंत्रता संग्रामक इतिहास
उलटेबामे मग्न भेल
गांधी, तिलक, लोहिया, सुभाषक
फोटो सभपर तर्जनी राखि
पुछैत गेलि
पप्पा ई के छिऐ?
हम कहैत गेलौं- 'बबा!'
फेर पन्ना उनटि गेल
आब मैथिलीक समक्ष
भेल रहै जनरल ओडारक
ओ विकराल चित्र
जकरा देखितहि हमरा
यादि पड़ि गेल छल
देबालसँ घेरल मैदानक
एक मात्र निकास द्वारपर सँ
निहत्थापर तोपसँ चलाओल गेल १४५० राउण्ड गोली
तावत मैथिली
अपन तनल भृकुटी संग
प्रश्न दागि देलक
पप्पा ई के हेतै ?
आ हम अबाक
एहि बेर ई नहि कहि सकलहुँ जे
इहो तोहर बब्बे हेतऽ।
हम सकदम्मे रही
मुदा मैथिली हमरासँ आँखि भिरेने
तावत मैथिलीक नजरि
घरमे दंड खिचैत मूसरीपर पड़ि गेल

[1] नेने बासा, ग्रा. पो.- बलहा, वाया- सुखपुर, जिला-सुपौल, पिन कोड- ८५२५३०

फँसल पन्नो उलटि गेल
प्रश्नो बदलि गेल
आ हमरो पिण्ड छुटल
नेनाक अनुत्तरित प्रश्नसँ

कविताक शीर्षक जकाँ

एहि माटिपर
जतऽ कहियो सुग्गा पढ़ैत छल वेद बुझि पड़ल जे गार्गी कोना तैयार भेल हेतीह
विद्रोहक लेल।
भारती कोनो मसल्ला पिसलनि
धुरंधर सन्यासीक छातीपर
तकर चर्चा एखनहुँ होइत अछि
महिषीक माटिपर
एखनहुँ चर्चा होइत छैक जे
सहुआक फेरमे
सिबरानी कोना प्रेमचन्दकँ मारि देलनि
आ भारती कोना
शंकराचार्यकँ परास्त कऽ
मंडन मिश्रकँ तारि देलनि
आ से एकटा अचरज देखियौ जे
भारतीक पराजित हेबाक कोन धूजा
पुरातत्वविद् फनीकांत मिश्रकँ
कतौका संग्रहलयमे भेटि गेलै
जकरा ओ अपन बपौती आकि खतियौनी बुझि
किएक मिथिलामे फहराबऽ लगलाह?
ई सभ किछु कहबाक लेल
मंडन संततिक रुपमे
प्रचण्ड रौदमे तप्त भेल
नहि, नहि दुनुक बीचमे
सत्यक स्वरुपमे
'वियोगी' ठाढ़ अछि
सत्यकँ सत्य कहबा लेल
भगवती उग्रताराक खड़गपर
अपन माथ रखने।

लक्ष्मण झा ‘सागर’[1]

चुट्टीधारी

ओना नहि देखबैक
हरसट्टे उड़ैत
एक्कोटा गिद्ध।
मुदा,
जहन कोनो निर्जन
बाध-बोनमे
मुइल पशुक खाल
उधेडि लेल जाइए;
तँ, देखि लिअ
उड़न जहाज जेकाँ उतरैत
हँजक-हँज गिद्ध!!
ओना नहि देखबैक
कौएकँ कुचरैत
कत्तहु जेर बान्हिकऽ....;
मुदा,
जहन बीच चौबट्टीपर
बिजलीक तारमे सटि
कोनो अभागल काग
हति लइए अपन प्राण....
तँ देखि लिअ
काँउ....काँउ करैत
करमान लागल कौआ।

---

[1] जन्म ०१.०४.१९५३ पिताक नाम श्री तारकेश्वर झा उर्फ श्री भोला झा, माइक नाम स्व. गंगादेवी, गाम-ठढ़बितिया, घोघरडीहा, मधुबनी (बिहार)। आजीविका रूपा एण्ड कंपनीक इस्पात संयन्त्र इकाइमे वरिष्ठ क्रय प्रबन्धकक पदपर कार्यरत- कोलकातामे। रुचि- साहित्यिक आ सामाजिक सरोकारसँ जुड़ल रहबाक। अरुचि मैथिलीक नाम पर अनर्गल आ अनसोंहाँत क्रिया-कलाप। रचानाधर्मिता- १९६८सँ मैथिलीक विभिन्नक विघापर मैथिलीक विभिन्न पत्रिका सभमे रचना प्रकाशित होइत रहल अछि (बीचमे १९८३-१९९६ छोडिकँ)। चारिटा पोथीक (कविता, कथा, निबन्ध, विविधा) प्रकाशन योग्य सामग्री उपलब्ध। छपेबाक जोगार नहि। प्रकाशक लोकनिक खोज जारी। सेहेन्ताक मिथिलांचलक समस्त (कन्वेंट छोडिकऽ) प्राथमिक विद्यालयसँ लऽ कऽ उच्च-माध्यमिक विद्यालयमे पढ़ौनीक माध्ययम मैथिली मात्र मैथिलीए टा होइतैक।

मुदा,
हमर कविताक दृष्टि
एत्तहि टा घेरायल नहि अछि;
घरक कोनो अन्हार कोणमे
छीटल हो
चीनीक किछुओ दाना
किंवा पिचाएकँ मरि गेल हो
अझट्टे कोनो चुट्टा!
हमर कविताक दृष्टि
पँतिआनीमे ससरैत
ओहि तुच्छ जीवपर
अटकि जाइत अछि
जे नहि अरजने अछि
कोनो विद्या....;
मुदा, छैक तइयो
ओकरो अपन जैविक संस्कार!
हमर कविता
गिद्ध....कौआ....आ
चुट्टीक संसारकँ
भजारि रहल अछि!
संवेदना
सिद्धान्तक चुल्हिमे
आदर्शक आगि
पजारि रहल अछि!!

विभूति आनन्द[1]

एक- दू- तीन- चारि- पाँच- छओ- सात- आठ- नओटा कविता

प्रतिपक्ष : एक

जखन दिन भरिक उठापटकसँ
थाकल-हारल सन घुरैत छी डेरा
तँ मोन करैए, जे
कोनो क्लैसिकल संगीत कानमे अबैत
हाथमे गरम-गरम चाह, आ
'सूगर फ्री' बिस्कुट हड़ारतिकेँ दूर करैत
गामघरक हवा-बसातकेँ, आकि
नगर-महानगरक चालि-कुचालिकेँ अकानैत
कनियाँक तनावरहित आकृतिकेँ निहारितहुँ

---

[1] जन्म: ०४.१०.१९५५, स्थान: शिवनगर, मधुबनी। शिक्षा: पी.एच.डी. पटना विश्वविद्यालय, पटना। वृत्ति: दैनिक मिथिला मिहिरमे कार्यालय संवाददाता, मैथिली अकादमी, पटनामे शोध सहायक, जिला स्कूल, मुंगेरमे +२ व्याख्याता। सम्प्रति: आर. एन कालेज, पण्डौलमे अध्यापन। गतिविधि: पूर्वमे विभिन्न राजनीतिक दल, भाषा आन्दोलन ओ रंगमंचसँ सम्बन्ध। तहिना मैथिली भाषी छात्र संघ, भंगिमा, जानकी महोत्सव समिति, जखन-तखन आदि संस्थाक संस्थापक-सदस्य। ७४ क छात्र आन्दोलनमे जेल यात्रा। सम्मान : साहित्य अकादेमी पुरस्कार, २००६ दिनकर राष्ट्रीय सम्मान-२००८।विभूति आनन्दक चास बास- कविता-संग्रह : डेग, उपक्रम, पुनर्नवा होइत ओ छौंड़ी, नेहाइपर स्वप्न, उठा रहल घोघ तिमिर, झूमि रहल पाथर मन। कथा-संग्रह: प्रवेश, खापड़ि महक धान, काठ। उपन्यास: गाम सुनगैत, पराजित अपराजित। नाटक: समय संकेत, तित्तिरदाइ, हाली हाली बरिसू, फ्रेममे बन्द एकटा उखरल फोटो। समीक्षा: श्री ललित आ हुनक कथायात्रा, स्मरणक संग, ललित, भाषा टीका। संपादन: गीतनाद, विद्यापति पदावली, मैथिली कथा साहित्य, अहुल, एकटा छला गोनू झा, कथा कहिनी, विद्यापतिक पदावली (सभटा पुस्तक)। संपादन: लालधूआँ, माटिपानि, भाखा, हालचाल, मैथिली अकादमी पत्रिका, दैनिक मिथिला मिहिर, दृष्टि, कूस, अंग मैथिली, समाद, भंगिमा, हाक, मनीषा, डगर, जनता। सम्प्रति: जखन तखन (सभटा पत्रिका) एकर अतिरिक्त प्रो. हरिमोहन झा अभिनन्दनग्रंथ' तथा 'निखिल भारतीय मैथिली भाषी छल', 'अरिपन' ओ 'प्रो. हरिमोहन झा अभिनन्दन समारोह' स्मारिकाक संपादन सेहो। अनुवाद: मैथिल शहीद बैकुण्ठ शुक्ल (बंगला), मूल : विभूति भूषण दास गुप्त तथा जीव। विज्ञान (हिन्दी) मूल : सुबोध बिहारी सहाय। यंत्रस्थ: एकटा रहए गप्पू (उपन्यास), ताला, एकटा उड़ल फुर्र! (कथासंग्रह), एकटा साम्यवादीक आत्मकथा (कवितासंग्रह), गामक चिट्ठी (स्तम्भ), हरिमोहन बाबूक रचना संसार, स्मरणक संग : भाग दू (समीक्षा)। सम्प्रति: अनथक लेखन जारी. **(-सम्पादक)**

संतानक कुशल-क्षेमक मादे बतबितहुँ ।
जखन दिन भरिक उठापटकसँ
थाकल-हारल सन घुरैत छी डेरा
तँ मोन करैए, जे
कोनो बिसरल-बिछुरल सखाकेँ मोन पाड़ितहुँ !
आकि बीतल साल भरिक
सभसँ सुखद कोनो एकटा,
मात्र एकटा दिनकेँ हियासितहुँ !
आकि आगत सालक लेल
कोनो नीक सन एकटा,
मात्र एकटा सपना बुनितहुँ !
मुदा एहन सन कहाँ किछु भऽ पबैए!
अपन अनुकूल किछु नइ बुझाइए
ने खान-पान, ने इच्छा-आकांक्षा
ने सोच, ने अपसोच......!
लगैए जेना,
हम यंत्र-मानव बनल सन जीबऽ लागल छी
अपना अनुकुल किछु नहि होएबाक यंत्रणा
दिन-प्रतिदिन बढ़ले जाइए.....
ओ जे देखाबऽ चाहैए, सएह देखै छी
ओ जे खोआबऽ चाहैए, सएह खाइ छी
ओ जे सोचाबऽ चाहैए, सएह सोचै छी
हम बदलि रहल एहि चर्चासँ
खूबे चिंतित बुझा रहल छी बंधु !
जखन दिन भरिक उठापटकसँ
थाकल-हारल सन घुरैत छी डेरा,
तँ ई चिन्ता आर-आर गाढ़ भऽ अबैए
आ तखन हम
एहि आरोपित जीवन-शिल्पसँ
खूबे परेशान भऽ उठैत छी !

प्रतिपक्ष: दू

प्रश्न तँ ई नइ छै, जे हमर मोनक प्रतिपक्ष
अपन समस्त ऊर्जाकेँ सुता देलक अछि निश्चेष्ट
आकि, कहियोक करजन्नीा सन आँखिमे
मोतियाबिन्द प्रवेश कऽ गेलैए !
प्रश्न इहो नइ छै जे एहि विलासी अन्हड़मे
ओ मृत्युक कामना करऽ लागल अछि
आकि, विकलांगी नदीमे ठठबाक लेल
नग्न. भावसँ पड़ि रहल अछि !
प्रश्न ई छै, जे जखन
चिनमार धरिमे प्रवेश कऽ गेल हो गर्म हवा
जादूगरी कला-कौशल
कऽ रहल हो अपन-अपन आरम्भिक प्रदर्शन,
आ जकर स्वादक लेराह वातावरणमे
भऽ रहल हो सभटा जीवन-संदर्भ गडमड-
तखन की करबाक चाही?
तखन की करबाक चाही, जखन
पक्ष आ प्रतिपक्षक बीच
नहि रहि गेल हो कनियोंटा विभाजक रेखा!
जखन एक दिस कएल जा रहल हो
युद्धक जैविक उदघोष, आ दोसर दिस
ओही मुँहेँ कएल जा रहल हो
शान्तिक वैश्विक मंत्रोच्चार-
प्रश्न ई छै जे तखन की करबाक चाही?
प्रश्नकक एहि जटिलताक बीच बाझल हम
ताकि रहल छी ठाम-ठामक जीवन
जीवनमे खिच्चा-भाव, आ
ताहि खिच्चा-भावमे नव मानवीय उत्सुकता
बंघु
हमर एहि अनुसंधानमे जरूरे अहाँक कर्त्तव्य रहत
से विश्वासि लेलहुँ अछि अपना अन्दर सहजेँ।
ताबत सहि लिअ गर्म हवाक थापड़
बेसी सीदित करए जँ दर्द
तँ कैंसरक रोगी जकाँ तिल-तिल तकरा
अपन मोनक हाथेँ सोहरबैत सहैत रहू, सहैत रहू.....

इएह हाथ एक दिन बनत गऽ मुट्ठी आ
मुट्ठीक संख्यामे जेना-जेना होइत जेतै बढ़ोत्तरी,
तँ अनेरो संघीय गप-सप भऽ जेतै मजबूरी
संवादहीनता नहि भेलैए दीर्घजीवी–
कहियो नहि, कखनो नहि
ताबत दू डेग पाछू आबि
दू डेग आगू अएबाक करैत रहू दयनीय चेष्टा
किएक तँ
चक्रवातक एहि धाहीमे पड़ल प्रतिपक्ष लेल
एखन जरूरी अछि- 'वेट एण्ड वाच'!

मदारी युग

हमरा होइत रहैए, जे
क्यो हमरा पोलहएबाक चेष्टा कऽ रहल अछि
हम चीन्हि रहल छी ओकरा
ओ हमर मित्र नहि अछि
मुदा तैयो मित्र होएबाक घोषणा कऽ रहल अछि
बाजार-भाव गर्म छै, जे
हमरा दुनूमे मित्रता भऽ गेल अछि
समदियाकेँ पठा-पठा, अथवा
दूरभाषेपर उठा-उठा
अपन चालिकेँ ओ ठोकि रहल अछि
कखनो-कखनो
अपन करतबसँ डेरा सेहो रहल अछि
फँसएबाक सरनरिया-शिल्पि सेहो अपना रहल अछि
नहि सहज, तँ असहजे भऽ भऽ कऽ
ककरो अन्दर पैसबाक ओकर ई कला
बहुतोकेँ मोहविष्ट कऽ चुकल अछि
तँ अपन विजय-बाटपर रभसि सेहो रहल अछि
एम्हर हम बेस चौकऽ लागल छी
ओकर अबरजात बढ़ले जा रहल अछि
ओना, इहो ओकर अपन शिल्पी छै
कहियो लगातार अबैत रहत
तँ कहियो बाटे बिसरि जाएत
कहियो-कहियो तँ अपन वाणीक माध्यमे अबरजात बढ़ाओत

आ से, तकर अनेक अर्थ लागत
ओना ओ बुझा देत जे एहन सन किछु नइ छै
मुदा तैयो तंग करबै
तँ विराम-अर्धविराम-विस्मय आदि संकेतक
रहन-सहन प्रयोग कऽ कऽ बुझा देत, जे
अहाँ चकित रहि जाएब! छकित सेहो भऽ जाएब
आ एहना स्थितिमे जँ
एक अहाँ मात्र गफ्फाक बीचसँ ससरि गेलिऐ
तँ ओकरा लेल धन सन
तकर एबजमे दोसर-तेसर अनेक भक्त
ओकर वाकचातुरीक सोझाँ नतशिस भऽ जेतै
आ ओ एक तरहेँ
अहाँक, समर्थन-शिल्पमे अभिनन्दन कऽ
अहाँक बिखरल विरोधीकेँ संगोरि लेत.....
एहन सन नइ छै जे हम कमजोर भऽ रहल छी !
शत्रु, मित्र नइ भऽ सकैए
शत्रु वास्तवमे एकटा जीन थिक
जकर सभटा संबंध अनुबंधपर रहैत छी
आ से हम नीक जकाँ बुझैत छी
हम तँ संक्रमण-कालक सभसँ पैघ अस्त्र
कविता द्वारा
ओकर मन-मयूरक पएरपर नजरि देबऽ कहैत छी
जकर रंगक संबंध ओकर मनक संग तँ ने जुड़ल छै,
से सोचऽ कहैत छी
हम विभिन्ने ढंगे साकांक्ष रहऽ कहैत छी
मदारी-युगसँ सोझाँ-सोझी भऽ रहल छी

नब पीढ़ी

ओ हमर उल्लासित गामक बीतल बसंत छल
जे हमर डेराक मेन गेट लग
थाकल-ठेहिआएल सन उदास, ठाढ़ छल
अनायास ओकरापर नजरि पड़ि गेल
भीतर आबऽ कहलिऐ
मुदा जेना ओ किछु नइ सुनलक
चीनीक रोगी सन लागल

तथापि बड़ी काल धरि ठिकियबैत रहल
आ हमरा अन्दर जेना किछु दरकैत रहल
किछु काल बाद ओ भिझाएल हँसी हँसि देलक
लागल जेना, ओकर अंदरक बीतल वसंतक
आर किछु पँखुरी झड़ि कऽ
हमर मेन गेटक माटिपर आबि लेढ़ा गेल
हमरा अंदरक विकराल होइत पीड़ा
किछु सोचि नहि पाबि रहल छल
अनुत्तरित छल पूर्वक सभटा हल कएल प्रश्न
हम 'ई मेल' फोललहुँ
हम 'नेट'मे ओझरएलहुँ
हम ग्लोबिल चिंतनपर पुनर्चिंतन कएलहुँ.....
एहि क्रममे बहुत किछु भेटल
नवीनतम सेहो। संभावित सेहो
मुदा ओ नइ भेटल, जे हमर डेराक
मेन गेटपर लेढ़ाएल सन ठाढ़ छल, आ जे
हमरासँ हमर नेनपनक हिसाब माँगि रहल छल
हम एकरासँ लड़ि रहल छी लगातार
लगभग दू-अढाइ दशकसँ तँ निश्चिते
मुदा एहि दू-अढाइ दशकक अन्दर फूटल
नव पीढी लग
कहाँ देखैत छी एहन सन कोनो पीड़ा!
ओ तँ अपन मस्तिष्कक 'मैसेज बॉक्स' सँ
एहन सन भावकेँ प्राय: खाली कऽ निराशक्त अछि
पुछबै किछु, तँ तेहन पूछि देत
जे हम महोमहो भऽ जाएब
ओकरे दुनियाँमे बहि जाएब
एखन स्थिति ई अछि, जे
हम सभ एक दोसरसँ आँखि चोरा सेहो रहल छी
एक-दोसरकेँ देखिकऽ आँखि जुटा सेहो रहल छी!

अराड़ि जोतैए

ई समय अतुकान्त अछि
एहनामे जँ हम तुकक गप करी
तँ से समय-सापेक्ष नहि होएत
एखन हम अनुवादमे जीबि रहल छी,
जे शुद्ध अतुकान्त अछि
ओहिमे लय तँ छै, मुदा तुक नइ
आजुक युगमे एकर, आकि एकरेटा अस्तित्व अछि
से, जहियासँ सिकुरि गेल अछि पृथ्वी,
एकर अनिवार्यता 'बेडरूम' धरि आम भऽ गेल अछि
सभ सभक गप बुझि रहल अछि
स्वाद बुझि रहल अछि
स्वर बुझि रहल अछि
एहि स्वर आ स्वादपर
दलाल स्ट्रीटक महिमा अछि
सेंसेक्स्क उतार-चढ़ाव अछि
नन्दीकग्राम अछि
नासा आ सुनीता विलियम्स अछि
लाल मस्जिद आ बाढि अछि .....
सभटा नीक-अघलाह आइ
एही सोचपर नृत्यमान अछि
तँ आजुक समयमे किछु असंभव नहि अछि
किछुओ लग-दूर नहि अछि
सभ किछु पारदर्शी, किछु अदर्शी नहि
जँ ई समय अतुकान्त अछि
तँ कविता आ जीवनक भाषा एकाकार भऽ गेल अछि
तँ कैमराक लेंस धरि कविता लिखैत अछि
विज्ञापनक भाषा कविता बजैत अछि
सम्पूर्ण जीवने कवितामय भऽ गेल अछि
जतऽ ओकर
सर्वांगीण समस्यापर विमर्श सम्भव भेल अछि
तँ एहनामे जँ हमर सुचिता ओ संस्कार
संस्कृति ओ आचारसँ
कोनो अमूर्त्त भाव सनक परिचिति
अपन अस्तित्व लेल, अपन-अपन श्वेतपत्र

जारी करैत जा रहल अछि लगातार
'नेट' धरिमे 'फीड' करैत जा रहल अछि
अपन गौरवमय परम्परा
तँ हम की कऽ सकैत छी।
हमरा तँ लगैत अछि
जे हमर ई परिचितिजन्य ढाल
बुढ़बा साँढ़ जकाँ
जीवनक गति ओ प्रवाहकेँ
अहेर कऽ कऽ रोकि राखऽमे विश्वास करैए
समयक आदि-अन्तकेँ
अपन एही हुकहुकी छरपानमे जीबैत देखैए
सुप्त चेतनामे आएल सपना संग
भ्रम पोसैत अराड़ि जोतैए

वस्तुत:

अजीब अछि ई महानगर
हम एकरासँ जतबे परिचित होबऽ चाहैत छी
ई ततबे अपरिचित बनि जाइए
हम भिनसरे
जाहि निर्जन बाट धऽ कऽ जाइत डेराइत रहैत छी
घुरती खेप ओतऽ बाट नइ भेटैए !
भऽ सकैए, मास दिन छओ मासपर जाइ
तँ ओतऽ गोटेक अपार्टमेंट देखी
खेलाइत-धुपाइत....मुस्कैत-खिलखिलाइत.....
हम अपन
परिचित किराना पट्टीसँ राशन ली
आ पुन: मास दिन बाद आबी, तँ
किरानापट्टीक अपन ओहि परिचित परिसरपर
मल्टी स्टोरीज बिल्डिंग सनक बजार.....
.... नहि नहि, 'मॉल' देखी, आ
जकर अन्दर जाइते जेना हॉल ढुकि जाए !
से,
अपन अन्दर उगि आएल
एहि अनिश्चितताक पाँखि संग उड़िया जाइ
आकि जकथक रही-

ई सोचब-गूनब बड़ भयाओन लगैए
पहिल-पहिल जहिया एकर दर्शन भेल छल,
हमरा अन्दर तँ अदंक लऽ लेने रहए!
सभ चेहरा व्यस्त
सभ आँखि चौचंक
सभ डेग अपस्याँति
सभ इच्छा अतृप्त
अजीब तरहक भागमभाग......
ओतहि अध्ययनरत अपन पुत्रसँ
सड़क पार करबा लेल ठाढ़
सहसा एक दिन पूछि बैसल रही
एहि प्रकारक अस्थिरताक कारण?
मुदा ओ तकर उत्तर नहि दऽ सकल छल
ओकर नजरि
ट्रैफिक-बत्तीपर टिकल रहलै....टिकल रहलै.....
आकि सहसा हमरा छोड़ि आ हाथक संकेत दऽ
बजबैत, सड़क पार कऽ गेल!
सड़कक एहि पार हम
सड़कक ओहि पार ओ
बीचमे भागमभाग......अफरातफरी......
अजीब अछि ई ठाम
बेर-बेर अपरिचित बनि
अबैत रहैए हमर समक्ष, आ हम
ताहिमे हेराएल जा रहल छी, हेराएल जा रहल छी.....
से, वस्तु अपरिचित ठाम नहि,
हम भेल जा रहल छी
हम भेल जा रहल छी....

अंतिम पीढ़िक बयान

मौसम कुहेसक सीरक ओढ़ा।।
सूर्यकेँ सुतबा लेल विवश कएने अछि
एकरे मारल बीच घुना रहल अछि
अनेक टुस्सी नेंगरा रहल अछि
तोतराइत सुनि रहल छी फूलकेँ सेहो
मौसमक मरखाह चाँगुरसँ डेराएल

हमर आँखिमे बैसल विश्वास
अपन डेरा रहल विश्वशसनीयतासँ
भयभीत भऽ रहल अछि
विवश सूर्य सूतल अछि, आ
सात समुद्र पारसँ रंग-रंगक पेय
रंग-रंगक स्वप्न आ ओकर संसार
'नेट' द्वारा परसल जा रहल अछि
हमर आँखिमे मोतियाबिन्द फुला रहल अछि
हम ओकरा संग रभसि रहल छी
चुभकि रहल छी ओकरा संग
सर्दिया रहल छी सर्वांग
तथापि मुस्किया रहल छी अनवरत
एहि विपरीत मौसममे तैयो
हम प्रतिरोधक संग जीबि रहल छी
हम मोन पाड़ैत छी–
हथिया-नक्षत्रक पानिमे नहाइत कोना सिहरैत रही
पाँतरक पीपरक गाछ तर घमाएल
जेठक दुपहरियामे कोना सुस्ताइत रही
फगुआमे कोना गबैत रही जोगीड़ा.......
हम मोन पाड़ैत छी–
जाड़क साँझक पजरैत घूर आ भोरक
गाँती बन्हने कटकटाइत दाँत।
जूडिशीतलमे उराही होइत पोखरि-इनार, आ
आ थाल-पानिसँ जुड़ाइत अंग-अंग.......
हम चिक्का खेलैत मचकी झुलैत
मोन पाड़ैत छी बाध-बोन, चर-चाँचर
प्राती....सोहर....महराइ....लोरिकाइन....
गबैत मोन पाड़ैत छी
ओ सभटा हेराएल जीवन-शिल्प ....

हम मोन पाड़ैत छी–
कनसारसँ अबैत लाबा-भूजाक सोन्हगर गंघ
हम मोन पाड़ैत छी–
मालजालक गरदनिमे बान्हल घंटीक संगीत
हम मोन पाड़ैत छी–
पारिवारिक अटूट संबंध, आ
सदाबहार सामाजिक सौहार्द्रक गान

हम मोन पाड़ैत छी–
मोन पाड़ैत रहैत छी जखन-तखन
ओ सभटा खुशी, जे बेदखल कऽ देल गेल अछि
हमर भावना, हमर परिचिति, हमर मौलिकतासँ....
हम मौसमक एहि बदलल नेत संग
एकरा प्रतिरोध मानि
एहिना जीने जा रहल छी अनथक....अनवरत....
हम एहि शताब्दीक अंतिम एहन पीढ़ी छी
जे प्रतिरोधक एहि शिल्पकक संग लड़ि रहल छी
मुदा....मुदा सत्य तँ ई अछि
जे ताही अनुपातमे जल्दीत-जल्दीी
अपन संतानसँ अनचिन्हार भेल जा रहल छी....

एकटा साम्यवादीक आत्म कथा

अपन जन्मकथाक मादे एतबेटा बूझल अछि जे
ओ बरोबरि हमर आँखिमे आँजन करैत रहै छलि
कजरौटीसँ मांगि कऽ ओकर रंग
हमर कपारक कातमे ठोप जकाँ लगबैत छलि
भरिसक, अपन अन्दर कोनो यात्राक सपना रोपैत
हमरा नजरि-गुजरिसँ बचएबाक
ओ एकटा भावुक सन प्रयास करैत रहै छलि
हमु कने छेटगर भेल रही
तँ ओ हमरा ठेहुनमे भरबाक लेल कूबत
’लड़े लड़े’ कऽ ध्वनिक संग चलब सिखौने छलि....
बादमे तँ हम अपने चलऽ लागल रही....
से, किछु समय घरि तँ ओकर छाती धरकैत रहलै

.‘लड़े लड़े’क ध्वनिमे पराजयक कम्पन बुझाइत रहलै
मुदा बादमे तँ सभटा डर-भय पड़ा गेलै
आ ओ हमरा दिससँ निचैन भऽ गेलि....
अहाँ बूझि गेल होएब
जे ओ आन क्यो नहि, हमर माँ छलि!

दोसर अध्याय

किछु समय बीतल,
हम अपन जन्मकथा बिसरि गेलहुँ
जीवनकथा लिखबा लेल
पाछू तकबाक पलखति नहि भेटल
हमरा संग
संगी-साथीक एकटा गोल बनि गेल छल,
जकरा अन्दरमे नहु-नहु सिहकैत बसात छलै....
आँखिमे उजाससँ, कतहु कोनो खटास नहि
किछु नव करबाक सिखबाक मात्र जिज्ञास.....
हमर जीवन कथाक प्रेम-संबंधक ई केहन रूप छल,
सहजेँ बूझि नहि पओलहुँ
हम टूटल ताग सभकेँ जोड़ा लगलहुँ
हम गुदरीकेँ सीबि-सीबि सुजनी बनबऽ लगलहुँ....
ई तँ बादमे जाकऽ बुझल भेल जे हमरा
अपन जीवन-संदर्भक प्रसंग भेटि गेल
आ एकटा अनाम अपरिचित ऊर्जासँ जेना
हमर मन-प्राण रोमांचित भऽ उठल
अपन खानगी कहि दी
जे ई हमर, सृजनसँ जुड़बाक समय छल !

तेसर अध्याय

समय-सापेक्ष हम
अपन उत्कर्षक तमाम निष्कर्षकेँ
पूर्ण मानबासँ सभ दिन अस्वीकारैत
कखनों काल कऽ पाछू सेहो ताकऽ लागल रही
हम तकैत रही
अपन किछु विशिष्ट स्वप्नदर्शी संगी सभक
पूर्व-परिचित पदचापकेँ,
किएक तँ हम बीच सरोवरसँ
काढिकऽ अनने रही किछु रक्त-कमल
पीठपर पाँखि उगा
जीवन-रफ्तारक तमाम हदसँ आगू बहरा जएबाक

अकूत आकांक्षा छल हमरा अन्दर....
हमरा अन्दर चिन्तनक टटकापन
वैश्विक जनाधारक संग, वर्त्तमान रहए
चारूकात दिपदिपा रहल छल जीवनक समेकित सौन्दर्य
बंघु!
ई हमर गतिमान अवधिक शिखर-काल छल

चारिम अध्याय

आइ एहि जन-अरण्य मध्य चलैत
एसगर, नितांत एसगर लागि रहल छी हम
मोन पड़ि रहल अछि
अपन गाम सनक अछि
अपन गाम सनक अनेक गाम
ओकर हवा, ओकर नदी
ओकर हँसी, ओकर रुदन,
जतऽ अपन अनेक स्वप्नदर्शी संगी संग
मुखर हम, किछु बुनने रही
आपसमे बहुत-बहुत यात्राकेँ गुनने रही
आइ एहि जन-अरण्य मध्य चलैत
चलैत-चलैत चकुआइत-चौंकैत हम
अजीब तरहक दहशतमे जीबि रहल छी

स्वप्न

कोनो दीयर सन उदास ताकि रहल अछि–
कतऽ गेल ओ स्वप्नदर्शीक समूह?
कतऽ गेलै ओकर स्वर, ओकर सुभाव ?
ठीके, काफी असोकर्यमे छी–
एहि जन-अरण्य मध्य चलैत
तकैत रहै छी चतुर्दिक जखन-तखन
चौंकैत-चकुआइत रहै छी जखन-तखन
आ ओकर सभक
पूर्व परिचित पदचापक
अधीरतासँ प्रतीक्षा करैत रहै छी, ई सोचैत

जे आखिर एहन कोन बिसंजोग भऽ गेलै
जे विराट सामूहिकताक ओ सपना
एना छहोछीत कोना भऽ गेलै।
आजुक एहि वैश्विक बाजारमे हमरा लेल
ई विचलन, ई विखण्डन
चिताक ताप सन लागि रहल अछि
आ हम खोजी नजरि लेने
चकुआइत ताकि रहल छी बाट.....
तेँ कहबामे कोनो हर्ज नहि
जे दिशाहीनताक विरुद्ध
ई हमर आत्म-मंथनक काल थिक।

पाँचम अध्याय

आइ हम अचम्भित छी, भयभीत सेहो
किएक तँ आश्चर्यजनक रूपसँ हम
किछु तेहन चित्र देखबा लेल बाध्य भेलहुँ अछि
जकर तेहन कोनो अपेक्षा नहि कएने रही–
हम देखलहुँ जे हमर किछु अनन्य संगी
अपन-अपन हाथमे
मल्टी-नेशनलक झालि लऽ लेलनि
तँ किछु भगवा धारण कऽ लेलनि

क्यो-क्यो , छिट फुट

लालबत्तीमे अपन-अपन रूप ताकऽ लगली
तँ अधिकांश, एकटा कऽ चौकठि अँगेजि
अपना-आपकेँ दादी-नानी बना लेलनि....
आ सभ जेना एक-दोसरसँ अनचिन्हार भऽ गेलहुँ!
की पौलहुँ, की गमौलहुँ, तकर हिसाब-बही जेना
कमला-कोसी सन कोनो-कोनो नदीमे
प्रवाहित भऽ गेल....दहा-भसिया गेल अनंत सागरमे....
किछु जे तैयो अपनाकेँ चिन्हार राखि सकल,
सेहो अपनेमे सहस्त्र दल भऽ गेल
दलदलमे फँसैत चलि गेल, अथवा
कोनो-कोनो राज्य, आकि देशक संसद मध्य,

नहि तँ कोनो-कोनो कल-करखानाक व्यवस्था संग
व्यवस्थित जीवन जीबऽ लागल....

वर्त्तमान अध्याय

ओना ई अध्याय पूर्ण नहि गेल अछि
तथापि जतऽ गामसँ
नगर-महानगर लेल फुटै छै रस्ता.
हम ठाढ़, अपन हेराएल-भुतिआएल
संगी सभकँ हियासि रहल छी, संगहि
जे बाटक प्रतीक्षामे अछि,
तकरो अपना दिस हकारि रहल छी...
हियासबाक आ हकारबाक ई क्रम अविराम जारी अछि ....
आ से,
एहन विपरीत परिवेशमे सहसा
हमरा अपन माँ मोन पड़ैए
आ हम ओकरे जकाँ साँस जारनिक अभावमे
खुहरी जोड़ि-जोड़ि
पुन:पुन: आगि पजारबाक व्योंत धरा रहल छी
हम तमाम विपरीतक बीच पिरीत ताकि रहल छी
वस्तुत:, ई तँ हमर उजरल खोंतामे
भगजोगनी अनबाक काल थिक
आ तैँ हम फेरसँ नेना बनि गेल छी
आ हमरा एकटा माँक बेगरताक
पुन:पुन: अनुभव भऽ रहल अछि ।

कुहेसक अन्हड़

इजोरिया रातिमे
पसरल अछि अन्हार
रजनीगंधाक गाछसँ
बहरा रहल अछि दुर्गंध
बाटपर
चलि रहल अछि थाकल डेग
बहुत दूरसँ प्राय:
चलल छै कुहेसक अन्हेड़,

जे छापि लेबऽ चाहैए जेना
कुमुदिनीक खिलखिल हँसीकेँ
हम एहि दूरीकेँ नापऽ चाहै छी–
अपन विचारक घोषणापत्रसँ
आ फेरसँ लिखऽ चाहै छी
पुनर्जागरणक सपना
आइ लोक सपना देखैए
बहुत नीक-नीक सपना देखैए
मुदा,
तकरा ताही नीक ढंगे
बिसरि सेहो जाइए
हम सपनाकेँ
बिसरऽ नहि चाहै छी
हम अपन अततिक संग
वर्त्तमानसँ लड़ैत
फेरसँ
भविष्यक कविता लिखऽ चाहै छी
हम अपन कवितामे
निगुर्ण नहि, सोहर आ पराती गाबऽ चाहै छी

रमण कुमार सिंह

गुमशुदगी रिपोर्ट

राजधानीक एहि रोशनीसँ
नहाएल
सड़कपर
एक
दिन हमर बेटीक हँसी
पता
नै कतऽ गुम भऽ गेलै
हमरा
गामक रामधन काकाक
बुढ़ौतीक लाठी
एहि
महानगरक भीड़मे
हेरा गेलै महामहिम जी
आ
अपन हाल की कही
गामसँ चलैत काल एगो उम्मीद
एगो सपना लऽ कऽ आयल छलहुँ
हम एहि महानगरमे
पता नहि राति-दिनक भागम-भाग
आ हलतलबीमे ओहो सपना हेरा गेल
हे महामहिम जी,
सुनै छिऐ राजधानीक पुलिस
बड़ड माहिर होइ छै
हमरासन अदना लोककेँ तँ बातो नै सुनतै
कने अहीं खोजबा दिअ ने
हमर बेटीक हँसी
रामधन काकाक बुढ़ौतीक लाठी
आ
हमर ऊ सपना जे लऽ कऽ आयल रही
हम
राजधानीमे...

मायानाथ झा[1]

मातृगिरा

बनब केवल अंगरेजिया बाबू,
की राखब मातृगिराओक किछु ज्ञान?
कण्ठ खखारि हम पूछि रहल छी,
बनि मलेच्छ की बिसरब अपन पहिचान?
भऽ रहल अछि युग परिवर्त्तन,
बदलि रहल अछि आइ संसार।
उलझि अहाँ ध्रुबीकरणक जालमे,
बिसरल जाइत छी मिथिलाक व्यबवहार।
प्रगतिक डोरि पकड़ि कऽ चलब,
बात तँ नीक अवश्ये थीक।
किन्तु निरादर जननी-भाषाक,
से तँ आखिर विडम्बने थीक।
देश-विदेश की गेलहुँ अहाँ,
माइयेक बोलीकेँ बिसरलहुँ।
अपना संग-संग धीयो-पुताकेँ,
ओहिसँ विमुख कयलहुँ।
लिखबा-पढ़बाक तँ कथे कोन,
बाजब तक छोड़ि देलहुँ।
रही जे निर्मम पितृ-मातृ लेल,
निज भाषाओ लेल निष्ठुर भेलहुँ।
घरक भाषामे गप्प-सप्प करब,
आइ हेठीक बात बुझाइत अछि।
चारि आखर अंगरेजी बाजी तँ,
ताहिमे बड़प्पन देखाइत अछि।
सपना भेलैक नेना-भुटकाक,
दादी आओर नानीक संग।

---

[1] जन्मस्थली भराम, मधुबनी। लेफ्टिनेंट कर्नल मायानाथ झा (सेवा निवृत), जन्म तिथि ०५.०५.१९४६ शैक्षणिक योग्यता- स्नातक (१९६६) व्यवसाय सेना डाक सेवामे बिभिन्न पदपर १९.०९.१९६९ सँ ३१.०५.२००६ धरि। अवकाश प्राप्तिक बाद लेखनोन्मुख। कृति जकर नारि चतुर होइ (कथा संग्रह मैथिलीमे), तब और अब (कविता संग्रह हिन्दीमे), अनूठी सूक्तियाँ (संकलन), Unique Utterances (Collection), श्रद्धा सुमन (कविता संग्रह मैथिलीमे, प्रेसमे)।

खिस्सो-पिहानी पाछुए रहलैक,
रंगि गेल ओ सभ टी.वी.क रंग।
माय-बापकेँ फुर्सति नहि छन्हि,
पाइयेक पाछू छथि बताह।
फूहड़ आ घृणित विनोद दूरदर्शनक,
बच्चा सभकेँ केलक घताह।
की निष्णात विद्वान मैथिलीक,
अंगरेजियोक उपासक नहि छलाह?
घरमे सभ दिन बाजि मैथिली,
की ओ आ.ए.एस. नहि भेलाह?
एहन मनीषीक नाम नहि गनाएब,
मात्र इंगित हम करैत छी।
अपन भाषाक महत्वकेँ बुझू,
सएहटा तँ हम कहैत छी।
सभ भाषा गरिमामय होइत अछि,
किंतु सर्वोपरि निज भाषा।
जँ पारंगत होयब ताहिमे,
सुदृढ़ होयत अभिलाषा।
भगवद् पूजा जेना करैत छी,
सभ दिन किछु समय बचाय।
तहिना पूजू माँ मैथिलीकेँ,
दिअ एकर पुनि मान बढ़ाय।
नहि अछि थोड़ पाठ्य सामग्री,
अछि भरल मैथिलियोक भण्डार।
भटकि गेल छी अहाँ मार्गसँ,
तैँ घटल अछि मोनक उद्गार।
केवल नाम पाबि अष्टम सूचीमे,
नहि होयत मैथिलीक उद्धार।
अछि प्रयोजन प्रबल प्रयोगक,
तखनहि सम्भव एकर विस्तार।
जँ पण्डित हैब मातृगिराक,
आनहु शीस नबाओत।
जड़ियेकेँ जँ त्यागि देब तँ,
के पुनि लाज बचाओत?

सच्चिदानन्द 'सौरभ'[1]

देखू नै....

ओ जनानी....
हमर भाउज थिक
से बूझलए सभकेँ
तैयो, कनफुसकी देखि
चोन्हराय छी, किऐ, एना?
देखनाइये-ए तँ देखू ने....
सिनेमा हॉलमे
पार्क आ होटलमे
स्कूल कॉलेजमे
आ मंदिर परिसरमे
देखू देखू ने
घरमे, बाहरमे....
गाम आ शहरमे
खेत खरिहानमे....
कोना कोना होइत रहै-ए
छौड़ा छौड़ीमे कनफुसकी
मुंसा मौगीमे मशखरी
आ नेना भुटकामे मुँहदुशी
ओना, हमरा बूझल-ए
ई सभ अहाँकेँ नीके लागत
किऐ तँ, अहुँ....
एहि युगक छी
बस हमही टा अहाँकेँ
सतयुगी बूझि पड़ै छी

[1] पिता का नाम- श्री रामानन्द झा, जन्म-तिथि- १०.०१.१९७२ शैक्षणिक योग्यता: एम.एस.सी. (भौतिकी) बी.एड., एल.एल.बी., स्थायी पता ग्राम+पो. सुखपुर, जिला सुपौल- ८५२१३०। रचना कार्य- कविता, कथा, लघुकथा। संपादन- अनियतकालीन मैथिली पत्रिका कोसीक संपादन एवं भारती मंडन पत्रिकाक सह संपादन।

भोरक आसमे

चारि दिनसँ कविजी!
आधे पेट खाइत छथि
दुइये पसेरी चाउर
आ तीनिये पसेरी चिकसमे
मास खपेबा लेल
साँझेसँ ओ
परतारैत रहै छथि
धीया पुताकेँ
सूतय लेल
आ घरनीसँ फूसि बाजि
ताकतक बदला
निन्नक गोली
खा लैत छथि कविजी!
भरिपोख सूतबा लेल
मुदा, तैयो कविजी
उठिये जाइत छथि
भुरूकबासँ पहिने
कविता लिखबा लेल
कविता!
जकरा हुनक घरनी
सौतिन कहि
गरियाबैत रहै छन्हि
कविता!
जकरा हुनक सम्बन्धी
डाइन कहि
लतियाबैत रहै छन्हि
तकरे सृजनमे
फरिच्छ धरि
अपस्याँत रहै छथि कविजी
सहज, सरस
आ चोखगर चोखगर
शब्द
हेरय लेल ओ....
काटय छथि अहोछिया
ठीक ओहिना

जेना कमलक पंखुरी मध्य
कैद भौंरा
अतुल रसपानसँ अफरिकेँ
औनाइत रहै-ए
भोरक आसमे.........

अन्हारक संग रहैत रहैत

चहुँ दिस पसरल अछि
घुप्प अन्हार
अन्हारमे
बाट हेरबा लेल
दऽ रहल छी हथोरिया
मुदा, नहि भेटय अछि
बाट
आ नहि भेटय अछि
अन्हारक ओर छोर
कतबो नोचै छी
अपन देह हाथ
वा पीटै छी कपार
रहै छी सदिखन
ओतय ठाढ़
जतय अछि अन्हारक
एक छत्र राज!
बुझि पड़ैए
हमर मोनक इजोत सेहो
भेटाय लागल-ए
हे अन्हार! अहाँ संग रहैत रहैत
हमर आत्मा सेहो
भऽ गेल अछि आन्हर
तखन नै ओकरा
देखि नहि पड़ैए
कर्ममार्ग
आ अपस्याँत अछि ओ
हेरबा लेल मुक्ति मार्ग!

अशोक दत्त

बाल गीत

छुनमुन-छुनमुन बौवा हम्मर
फुदकैत फुद्दी जेकाँ रहैए
कखनो मुस्की कखनो मटकी
कखनो दिदीकेँ चुप्पी कहैए, छुनमुन. . . . .
खुब हिलसगर बौवाक गात
चुन-चुन बजैए सभ बात
मिसरी सनकेँ बोली सूनि-सूनि
मोन जुड़ाइए मोन जुड़ाइए, छुनमुन. . . . .
थाहि-थाहि कऽ उठबए धाप
रूनझुन बाजए पायलक चाँप
कारी लट जे घूरमल-घूरमल
गोर गालकेँ चूमल करैए, छुनमुन. . . . . .
गोल-गोल पुआ सन गाल
चान जेकाँ चम्कै-ए भाल
हिरणी सनकेँ नयनक पुतली
सभक मनकेँ मोहल करैए, छुनमुन. . . . .
हाथमे धऽ कऽ हम्मर हाथ
स्कूल जएतै रटतै पाठ
हमरे सनकेँ बौवा हम्मर
हाथसँ कलम धरल करैए, छुनमुन. . . . .

बाल गीत

सुन-सुन-सुन-सुन एगो बात
चल रोपै छी ढ़ौवाक गाछ
लुच्चौ जेकाँ ढ़ौवा फड़तै
बढ़तै अपनो तैं दिन ठाठ
एक दिन ढ़ौवाक गाछी बढ़तै खूब झमटगर हएतै
घौर्छे-घौर्छे ढ़ौवा गाछमे फड़तै आ फल एतै
तोड़ि-तोड़ि करबै सभटा काज, सुन-सुन. . . . . . .

फुलबारीमे पोखरि खुनएबै सुन्दर घाट मढ़एबै
आम लताम जामुन संग मिठका बैरक गाछ रोपएबै
ताहिपर झुलब साथे-साथ, सुन-सुन. . . . .
बरबिघबा सन चौरमे अपनेसँ मेला लगबएबै
अजब-गजबकेँ खेल-तमाशा आ सर्कस बजबएबै
घुमएतै परी पकड़ि कऽ हाथ, सुन-सुन. . . . . .
किन कम्प्युटर सेहो अनबै, मास्टर आबि सिखए तैं
दुनिया भरिक ज्ञानसँ जे हमरो परिचित करबएतै
रहतै मोटरो गाड़ी पास, सुन-सुन. . . . .

बाल गीत (लोरी)

आगे निनियाँ आ-आ
बौवा लए निन ला-ला
देबौ तोरा नवका साड़ी
दौगल-दौगल आ-आ
बौवा हम्मर मिसरीक ढ़ेपा
तोरा माथा जूड़ा-खोंपा
खीर देबो तोरा भरि थारी
सुन्दर सन गीत गा-गा
आगे निनियाँ . . . .
मैना बनबए घरमे खोंता
सिरोलिया करए ओहिमे चोंचाँ
दाना आनय फोड़ि बखारी
सभ मिल बाजय खा-खा
आगे निनियाँ . . . .
चुनियाँ पढ़ए बड़का पोथा
सह-सह ढिल करै छै झोंटा
नम्हर केश ओकर बड़कारी
दौड़ कऽ ककही ला-ला
आगे निनियाँ . . . .

ओधि उपाड़

उपहास करैत इतिहासक
नितरा रहल अछि
सफलतापर,
सफलता
जे छैक
पानिक बुलबुल्लाा जेकाँ।
सन्हिआएल छै अदंक
कोँढ़मे
उड़ल छै नित्र
तकने घुरैछ सुरक्षा कवच
मुदा, उताहुल भेल अछि
मुँहमे जाबी लगा कऽ
मेहमे बान्हल बड़द जेकाँ
जोतबाक लेल,
छै दश-पाँच गोट
लगुआ-भगुआ
छै बन्दुक
ते फेकैए गुड़-चाउर
मने-मन
नित नवीन आडम्बरक।
नइँ छै चौवन्नी भरि जनाधार
तैयो नितरा रहल अछि,
सफलताक नाम दऽ
अतीतकेँ गुनैत
वंश बढ़बऽ मे उनमत्त।
बुझैत अछि ओ
करची पड़ने
दू-चारि गोट बाँस कटने
नइँ उपटै छै बाँस
तँ नितराइत अछि
बनल अछि ढीठ।
देश उएह अछि
परिवेश नव
देखैत छल पहिनहुँ

करूआइत छलै आँखि
आब बूझऽ लागल अछि
बच्चासँ बुढ़ धरि
नइँ होइत छै फूल बाँसमे
नइँ होइत छै सुगन्धो
नइँ लगैत छै फल
मुदा, पनपऽ नइँ दैत छै ककरो
अपना लगमे
मात्र बढ़बैत अछि
अपन साम्राज्य।
आब करची पड़लासँ नइँ
दू-चारि गोट बाँस कटलासँ नइँ
उपटाबऽ पड़त ओधि
जड़िसँ कोरि कऽ
तहन फुलएतै फूल
छिरिअएतै सुगन्धि
लगतै फल
मुस्किअएतै ठोर।

शीतल झा[1]

टी..ऽऽऽऽ..स

हमरोमे अहूमे एकटा टी..ऽऽ..स अछि,
नहि कहि ककर उन्नैस ककर बीस अछि।
किनका आसपर हम छाती तानि चलू,
हुनके तँ बिछुआएल निहुरल शीश अछि।
जीबाक जोगाड़ बड़ड कष्टप्रद अछि, बाउ रे,
पुजारीक हाथमे अमृत कहाँ विष अछि।
शांतिक शब्दसँ मोन आब उठि गेल,
भक्त रिक्त पेटसँ से मात्र रीस अछि।

[1] पिताक नाम स्व. लक्ष्मीकांत झा, माताक नाम स्व. दाइ रानी झा, जन्म स्थान सुगा-मधुकरही ५, ग्राम नरहिया,धनुषा, नेपाल।वर्तमान बसोबास जनक पुर ६, जानकीनगर पगला धर्मशाला, महाराज सागरसँ दक्षिण, जिला धनुषा, नेपाल।जन्म तिथि-२०१२/०१/०१ जूड़शीतल। शिक्षा बी.ए., बी.एड., बी.एल.।राजनीतिक संलग्नता नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी (एमाले), पद सलाहकार, के.क. नेकप्पा एमाले।रूचि आ प्रकाशन (i) संघीय संरचना आ मिथिला राज्य, मिथिलाक राजनीतिक इतिहास आ मिथिला (नेपालक सन्दर्भमे मात्र)। (ii) संस्कृति, राष्ट्र आ मधेशक सम्बन्धमे विभिन्न रचना। (iii) कविता (प्रकाशित विभिन्न पत्रिकामे)। (iv) सुगौली सन्धि आ मिथिला (अप्रकाशित), ‘‘सुगौली सन्धि’’मीन राज उपाध्याय नागरिक उड़डयन विभाग बाबरमहल।

शम्भु नाथ झा 'वत्स'[1]

मिथिलाक दशा

मिथिला मैथिल की भऽ गेलैए
परदेशी व्यवहार सनातन
पश्चातक रङ्ग रङ्गि गेलैए
मिथिला मैथिल की भऽ गेलैए
कतए गेलैए मण्डनक गरिमा
विद्यापतिक गीत।
पहिरब ओढ़ब डिस्को भऽ गेलैए
बिसरि गेलैए सभ रीति।
वेद मन्त्रक ध्वनि हता गेलैए
सुनि लिअ फिल्मी तान।
दिन राति डिस्को लहरीसँ
फाटि रहल अछि कान।
कत गेलैए ओ पाग दुपट्टा
चन्दन चर्चित भाल।
साँची धोती अंगपोछा आ
पावन रेशम शाल।
डिस्को पाछाँ देश बिका गेलैए
बिगड़ि गेलैए संस्कृति।
दुल्हा दुल्हिन सेहो बदललि
आयल केहेन नव रीति।

[1] पण्डित शम्भुनाथ झा ''वत्स'', योग्यता साहित्याचार्य, वेदविद् ज्योतिर्विद, अध्यापन कार्य १९८४ सँ १९९० धरि

संस्कृत महाविद्यालय, विराट सरोवर, फारबिसगंज (अररिया)। वर्तमानमे कार्य-कर्मकाण्ड सम्पादन।निवास स्थल- ग्राम बहोरा, थाना सरसी, जिला पूर्णियाँ (बिहार)।

मोनसँ पढू बढू अओ बाउ।

सीमा हीन क्षितिजमे बढ़ि कए
अपन लक्ष्य् कए पाउ।
मोनसँ पढू बढू अओ वाउ।
जीवन-कठिन तपस्या बढ़ि गेल।
बेरोजगारीक समस्या बढ़ि गेल।
मिटए क्लेश देशक जन-जन कऽ।
प्रतिभा एहन देखाउ।
मोनसँ पढू बढू अओ बाउ।
नेता ठगक भाषण पढ़ि गेल
कपट-कुटिल कुशासन बढ़ि गेल।
धन-लोलुप भ्रष्ट प्रशासन बढ़ि गेल।
धवल कीर्त्ति ध्वज वाहक बनि कए
राष्ट्रक अलख जगाउ।
मोनसँ पढू बढू अओ बाउ।
बिपत्तिसँ उबरब आस टूटि गेल।
नेता परसँ विश्वास उठि गेल।
प्रबल राष्ट्र इतिहास छूटि गेल।
क्षेत्रवाद सामंत कहरसँ
राष्ट्रकँ तुरत वचाउ।
मौनसँ पढू बढू अओ वाउ।
अनाचार कुशिक्षा बढ़ि गेल।
बिनु पढ़ाइ परीक्षा बढ़ि गेल।
लुटि-मारि बुभुक्षा बढ़ि गेल।
देशक अहाँ कर्णधार यौ
बिपदा दूरि भगाउ।
मोनसँ पढू बढू अओ वाउ।

मिथिला बचाउ

हे प्रभो! झटसँ बचाउ हमर मिथिला देशकँ
विपद् ग्रस्त संत्रस्त जनकँ
दूर करू दुःख क्लेशकँ
श्रृंखला परतंत्रताक
चिन्ह एखनो नहि छूटल।

शांतिक रोटी सेहो जे
आइ धरि नहि भेटि सकल।
जाति भाषा धर्ममे
भायसँ भाय अछि लड़ि रहल।
कतोक आगिक कुंडमे
धन जन भसम कए जाए रहल।
सदबुद्धि समता शांति आओर
विश्वास घटल जाए रहल।
आचार अनुशासन निअम
आदर्श छूटल जाए रहल।
परम्परा पावन पुरातन
पतन ओकर भए गेलैए
उपदेश गीता बुद्धक
संदेश सुक्ति कतए गेलैए
प्रार्थना भगवानसँ अछि
नेताकेँ सदबुद्धि दी।
एहेन गद्दीसँ ओकरा की
स्वर्गक ओ गद्दी दी।

बेरोजगारीक समस्या

अहीं कहू हम जीबैत छी?
पढ़ि लिखि घर बैसल छी
घरनीक बात सुनैत छी।
अहीं कहू हम जीबैत छी?
रोजी रोटीक बात नहि पूछब
महगीक बोझ ढुबैत छी।
दिन राति फेर काल्हि की खाएब
उहै टा गीत गबैत छी।
अहीं कहू हम जीबैत छी?
बेर बेर बहरायल वेकेंसी
आवेदन तँ करैत छी।
अंतर्वीक्षा दए फुटपाथपर
ऐखन धरि घुरैत छी।
अहीं कहू हम जीबैत छी?
पहिरन ओढ़न भए गेलैए गुदरी

फाटल धोती सीबैत छी।
घरनीक ताना सुनि से ने बुझू
विषक घूंट पीबैत छी।
अहीं कहू हम जीबैत छी?
हमर दुःख के सुनताह
हम ककरो कहबै की।
हम "शम्भु नाथ" दुःखक गाथा
गीत गाबि सुनबैत छी।
कतोक सुनाएब दुःखक खिस्सा
कोनो विधि दिन बितबैत छी
नहि कोनो काज अछि बैसल बैसल
किछुसँ किछु लिखैत छी।
अहीं कहू हम जीबैत छी।

डॉ. योगानन्द झा[1]

[1] पिताक नाम: स्व. रामलखन झा, माताक नाम: श्रीमती भाग्यवती देवी, पारिवारिक सदस्य: श्रीमती केवला झा,पत्नी; श्री मिलिन्द कुमार झा पुत्र, श्री धीरज कुमार झा पुत्र, सुश्री कीर्त्ति झा पुत्री।जन्म तिथि: ११ जनवरी १९५५; स्थायी पता: भगवती स्थान मार्ग, कबिलपुर, लहेरियासराय दरभंगा-८४६००१ (बिहार)।

शिक्षा: एम.ए. (मैथिली एवं हिन्दी), पी.एच.डी.।मातृभाषा: मैथिली, अन्य भाषा: हिन्दी, संस्कृत, अँग्रेजी, बंगला

एम.ए. प्रबन्ध: काष्ठ व्यावसायिक मैथिली शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्धक विषय: मैथिलीक प्रमुख पारम्परिक जातीय व्यवसाय (पी.एच.डी. हेतु) सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन। उत्तीर्ण: यू.जी.सी. राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा, १९९० कम्प्युटर अप्लीकेशन प्रमाण पत्र परीक्षा। DOEAC २००६

वृत्ति: अंकेक्षक, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड, पटना। सदस्य : भारती कला परिषद्, कबिलपुर। तुलसी मानस गोष्ठी, कबिलपुर, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, कर्णामृत, कर्णगोष्ठीक, कोलकाता, चेतना समिति, पटना, अखिल भारतीय साहित्यम परिषद्, नई दिल्ली, मिथिला परिषद, भागलपुर, मैथिली लेखक संघ, पटना, मैथिली भाषा परामर्शदातृ समिति, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली (१९९८-२००२); स्थापित: लक्ष्मी अभिनय (नाट्य संस्था), कबिलपुर, कीर्त्तिलता साहित्य साहित्य समिति (प्रकाशन संस्था)। प्रेरक: पं. श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' (मैथिली कवि), डा. रामदेव झा (मैथिली कथाकार एवं मनीषी), पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन' (मैथिली कवि-पत्रकार), डा. सुभद्र झा (विश्वविख्यात भाषा शास्त्री)। प्रतिबद्धता : माता, मातृभूमि, मातृभाषा। रंगमंचीय सक्रियता: भारती कला परिषद, कबिलपुर। लक्ष्मीक अभिनयम, कबिलपुर; संकल्प लोक, लहेरियासराय। रुचि: लोक संस्कृति एवं साहित्य, अध्यन, शोध-कार्य, कविता-कथा-निबन्ध-समालोचनादि। प्रथम रचना: वर्षा (कविता) १९६९

प्रथम प्रकाशित कृति: मिथिलाक डोम जाति ओ ओकर जातीय शब्दातवली, मिथिला सांस्कृतिक परिषद स्मारिका, बोकारो, १९८२; प्रकाशित कृति: लोकजीवन ओ लोक साहित्य (निबन्ध) १९८६, परिणीता (कथा-काव्यांश) १९८७, फकीर मोहन सेनापति (अनुवाद) २०००, आलेख सञ्चयन (निबन्ध) २००२, बिहारक लोककथा (अनुवाद) २००३, स्नेहलता (विनिबन्ध) २००६, मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष (निबन्ध) २००६, गहबरगीत (निबन्ध) २००७, लोक-साहित्य ओ शब्द-सम्पदा (निबन्ध) २००७, मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (शोघ ग्रन्थ) २००९; सम्पादित कृति: संकल्प स्मारिका ३,४,५ (वर्ष १९८५,८७ एवं ८९) युगदीप तुलसी २००४, अनमोल भजनावली २००५, मैथिली हनुमान चालीसा, २००७ पुरस्कार: पी.सी.राय चौधरी कृत 'फॉक टेल्स ऑफ बिहार'क मैथिली अनुवाद 'बिहारक लोककथा'पर साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा २००५ मे पुरस्कृत। सम्मान: मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर १९७०, बिहारी जनसेवा समिति, मुम्बइ १९८६, श्रीसुमन अभिनन्दन समिति, कबिलपुर १९९८, विद्यापति समिति, दुमका २०००, राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान, साहित्यकार संसद, समस्तीपुर २००३, २००५, २००७; सरस्वतीमभ्ययर्चना, भारती परिषद् प्रयाग २००४, चेतना समिति, पटना २००६, अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, दरभंगा शाखा २००६, बिहार स्टेट इलेक्ट्रिक सप्लाइ वर्कर्स यूनियन, मिथिला क्षेत्र २००८, सिद्धाश्रम, कला पीठ, सिमरिया घाट २००८, मिथिला विकास मंच, भागलपुर २००८, मिथिला सेवा संस्थान, खगड़िया २००९, प्रमुख साहित्यिक गतिविधि: राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठीमे सहभागिता, आकाशवाणी, दरभंगासँ वार्त्ता

घर

भीतेटा चहकल नहि सगरो
चारो धरि उजड़ल अछि
यैह हमर घरक थिक नकसा
हृदय हमर टूटल अछि

कहिया धरि आशापर जीबइ
कहिया धरि सपनामे
भाग्य-भरोसे निर्यात कते दिन
लड़ब-कटब अपनामे
एहन दशा सभ घरवासीक
जनु भाग्ये फूटल अछि
यैह हमर घरक थिक नकसा
हृदय हमर टूटल अछि

जकरा जेम्हरे अवसर भेटल
कयलक लूट-खसोट
अपन-अपन कऽ सभ अछि चिन्तित
सबहक मनमे खोट
चालनि जे बनि गेल स्वयं
से सुपहुकँ दूसल अछि
यैह हमर घरक थिक नकसा
हृदय हमर टूटल अछि

स्वार्थक मदमे सभ अछि मातल
अनकर की परवाहि

प्रसारित, साहित्य अकादेमी अनुवाद कार्यशालामे सहभागी १९९०, मैथिली कथा आन्दोलन 'सगर राति दीप जरय'मे सहभागी, कवि गोष्ठी एवं काव्य संध्यामे सहभागी, साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा प्रस्तावित यात्रा अनुदानक माध्यमसँ उड़िया साहित्य एवं संस्कृतिक परिचय; राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकामे शोध एवं अनुवाद कार्य प्रकाशित; अभिनन्दन ग्रन्थमे लेखकीय सहयोग आदि। अग्रिम प्रकाशन योजना: सुमनजीक स्वगदेश अमरजी: सम्पादक, मंगल-प्रभात, मैथिली गणकाव्य: श्री सीता राम विवाह पदावली, मैथिली लोक-संस्कारपरक गीत, वर्षा (कविता संग्रह), संतसेवीक बोधकथा (अनुवाद), सुख-दु:ख (अनुवाद), प्रतिशोध (नाटक), स्नेही वाटिका (सम्पादन), सीतावतरण (खण्ड काव्य), तीरन्दाज (अनुवाद), पगधूलि चरित (प्रवचन काव्य), डा. रामदेव झा ओ हुनक संजीवनी समालोचना।

कहिया धरि ई खतम भऽ सकत
दलित-पीड़ितक आहि
कुकुर-कटाउझ मचल दहोदिश
ओत्तहि सभ जूटल अछि
यैह हमर घरक थिक नकसा
हृदय हमर टूटल अछि

मन्दिर-मस्जिद रण-प्राङ्न अछि
धर्मक ककरा ध्यान
सबहि सुखी सभ रोगमुक्ता नहि
भारत कोना महान
सन्तति सभ एहि घरमे एखनो
अलस पड़ल सूतल अछि
यैह हमर घरक थिक नकसा
हृदय हमर टूटल अछि
केओ नृप होय हमे का हानी
कखनो ई संवाद
हमर जातिक लोक थिका ई
कखनो उठय विवाद
गमलक नहि मधु-ऋतु शिशिरोमे
अन्तर, कतहु कुशल अछि
यैह हमर घरक थिक नकसा
हृदय हमर टूटल अछि
कालक नहि लीला ई सभ थिक
ब्रहमक नहि थिक माया
ई करनी मानव-दानवक
भोग-वृत्तिक छाया
संघर्षक आह्वान करी तँ
कर्म कतहु रूसल अछि
यैह हमर घरक थिक नकसा
हृदय हमर टूटल अछि

ताकि रहल छी माटि राष्ट्रक
माटिक सोन्ह सुगन्ध
संस्कृति आ संस्कार अपन
पुनि परम्परित अनुबन्ध
स्वर्णमुकुट धरणीक कहिया

ककरोसँ झूसल अछि
यैह हमर घरक थिक नकसा
हृदय हमर टूटल अछि
पर-पड़ोसी फूट देखि घर
लुटबा लय तैयार
कखन करय के नहि जानी
जयचन्द सरिस व्यवहार
विश्व भरिक चोरा मुँह बओने
परिखा लग जूटल अछि
यैह हमर घरक थिक नकसा
हृदय हमर टूटल अछि

वीरेन्द्र मल्लिक

गतिशीलता

आब हम ओ नहि रहलहुँ
किछु आओर भऽ गेलहुँ
से की यौ?
ओ आने लोक कहत।

गंगेश गुंजन

राधा-१६म खेप

बुझायल त एतबे जे अयलौं माएक गर्भ मे
नौ मास अपनहि निर्माणक नरक सहैत,माइयो के सहबैत
प्रतिपल भरि जीवनक पीड़ा
माएक एक-एक साँस के दुर्घट करैत हम
अपनहि जन्म सँ कएल विकट पराभव ओकरा लेल।
ओ यद्यपि कहैत छैक- सन्तानक जन्म महासुख !
हम तं सन्तान, की बुझी तकरा कही की ?
...मुदा पुनः-पुनः माएक गर्भ मे के रखलक हमरा ?
भरिसक पिता...वैह हुनके राखल जे,
होइत गेल विकसित बनैत गेल रधिया !
एक दिन...सुनै छी एहि गामक धरती पर
......खसल चेहों-चेहों करैत, यैह झरकलही देह।
सेहो सुनै छी, माए तँ हर्षित किन्तु भेला बहुत सुख-चिन्तित पिता।
भेलियनि जे बेटी, ककर दोख यदि दोखे त ?
जेना देलनि हमरा माएक गर्भ तेना देने रहितथि कोनो बेटा ।
बाधा की ? तें अपन काज केर फल सँ असंतुष्ट
माय पर थोपल दोख किएक, कथीक ? ओना,
जे हो आबि त गेबे केलियनि मायक कोरा-
एहि छोटोछिन घर-असोरा-आङन मे,
बाड़ीक ओलक गाछ जकाँ अपनहि टोंटी सँ विकसित होइत,
सौंसे चतरल गेल हरियर गाछ समान। भ त गेवे कएलौं।
जेहने भेलौं आब एतेक वर्ख धरिक भ गेलौं
बेसी बेटी त ओहिनो ओले बुझल-कहल जाइए-कबकब, समाज ।

राधाक मन बड़े बौआइत छैक। एक क्षण एत, दोसरे क्षण नइं जानि कत ? मन
खौंझाइत बड़ छैक जे ओ एहन आ एहने भेलि कियेक ? अपने भेल कि बना
देल गेलि एना ?
की ? दुनू मे की ? बा एहू दुनू कारण सँ फराक किछु कारण ? बा एहि
दुनूक मिज्झर एकटा
तेसर परिणाम थिक ओ ? बड़ व्याकुल होइत अछि-
किये रूसल छथि कृष्ण ?
आ कि हमहीं छियनि रूसलि हुनका सँ ! की ?

के करओ पुरबा साही एकर-
यदि रुसले अछि त ककरा सँ के ?...
राधाक कंठ सुखाएल-
ओह,जल पीबितौं दू घोंट !
पियास आकुल घैलची सँ ढारऽ गेली-
घैल रिक्त, ढन-ढन करैत...

कीर्तिनारायण मिश्र

अकाल

सड़कपर हड्डी चिबबैत
छौंड़ा सभ
कुकूर आ पुलिसकेँ
डण्डा देखा रहल अछि
ऐंठल अंतड़ी वाली जनता
भूख-हड़तालक धमकी दऽ रहल अछि।
आ
बाँझ सरकार
विदेशक आश्वासनसँ
विवाह रचा रहल अछि
'लूप' लागल धरती
तथा निवीर्य्य अकाशक बीचमे
देशक नपुंसकता जोरसँ दहड़ि मारि रहलि अछि।
आ समय एहि सभसँ असम्पृक्त
नशामे मातल
मैदानमे जा कए सूति रहल अछि।

स्व. प्रशान्त

करू की वृद्ध अथबल छी

पूर्णियाँ कवि स्व. प्रशान्तक कविता

करू की वृद्ध अथबल छी
पित्त तँ चढ़ैत अछि बहुतो
करू की वृद्ध अथबल छी

सुदमिया माय जे आयल छलि
नैहरसँ महफापर चढ़ि कऽ
तनिका साइकिलपर चढ़ि देखि
सड़कक कातमे दुबकल छी
करू की वृद्ध अथबल छी

नवका पैसा सन बुधियार बनि
चमकैत अछि छौंड़ा!
पियरक्का दुअन्नीसँ अकार्य भेल
बैसल छी-
करू की वृद्ध अथबल छी

मोकामा पुल बनि गेने
सिमरिया घाटक स्टीमर जेकाँ
अकार्य भेल बैसल छी
करू की वृद्ध अथबल छी

पित्त तँ चढ़ैत अछि बहुतो
करू की वृद्ध अथबल छी
(स्मृतिपर आधारित)

काली नाथ ठाकुर[1]

सून मिथिलाञ्चल.....।

सून मिथिलाञ्चल,
जनु बूझि पड़ल
छथि रूसि रहल- धरती
सुखा कऽ भय गेल टाँट
पड़ती पराँट
फाटल दराड़ि-
के देखि देखि
अछि
कानि रहल
जन जीवन,
अन्नक अभाव
पेटक चिन्ता,
सर्वत्र व्याप्त
अछि- महगीसँ
जन जन तबाह
सभ जन कनैछ
छै धँसल आँखि ओ रुच्छ केश
भऽ गेल सुखा कऽ
काँट काँट
सटि पेट-पीठमे
एक भेल
तनपर माँसक
नहि छैक लेश।
छथि पूँजीपति बाबू भैया
नेता मुखिया
कर्ता-धर्ता
पालनकर्ता
साँसे गामक छथि
कर्णधार

---

1 जन्म- २४-०६-१९४६, आत्मज शिवनाथ ठाकुर प्रसिद्ध लोचन ठाकुर, ग्राम सर्वसीमा, मधुबनी, बिहार। JK सिंथेटिक्स लि० कानपुरमे १९७३ सँ १९९५ धरि कार्य कएलाक उपरान्त स्थ्यक प्रतिकूलतासँ स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लय सम्प्रति कानपुरमे सारस्वत साधनामे संलग्न।

के बाजि सकत?
कर तनि विरोध
देथिन उजाड़ि
दय दय
मुसकी
कसि व्यंगवाण,
अव्वल गरीबपर
चलनि रोऽऽब
बैसल दलानपर
रचल करै छथि षड्यन्त्र
सतत
निज धोधि बढेवाक हेतु
दू- चारि वा
दस बीस रुपैया कर्ज
देथि- आ सादा कागज
पर- औंठा निशान
लगवावथि बिहुँसैत
छथि रखैत
कजरौटी बगलहिमे
सदखनि
के कय सकैछ
हुनकर परतड़
बुधियारीमे
से बुझा दैत
छथि
अपनहि सभकें
हे भारत भूमिक पुत्र आबहु चेतह,
ई धर्मराज सभ
रक्त तोहर
रहतह चूसैत सदा
यदि नहि होयबह
जागरूक
लड़ह अपन अधिकार हेतु
लोकतन्त्रक रक्षा
भय सकैछ तोहरे बलपर
एवं लोक तन्त्रक रक्षहिसँ
बचतह तोहरो प्राण-
इज्जति मान॥

अरविन्द ठाकुर

गजल

कोना अजुका दिन ससरतै, राति कटतै हओ भजार
एक एकटा पल हमरा लेल सूनामीक प्रहार
बिसरि गेल छी मोन पछिला बेर कहिया खुश भेलहुँ
डाकिया आइयो ने आनलक अछि कोनो खुशखबरीक तार
ई महाजन, ऊ महाजन, नञि कतहु अछि रामबाण
बाण बेगरताक अछि भोंकल करेजक आर पार
यओ अन्हारक दास! आबहुँ संततिक हित कामनासँ
बजरगुम्मी तोड़ि, करू किछु आगि बारैक जोगार
पीड़ासँ लड़बाक लेल राखए पड़त निजपर भरोस
पीड़ हरए के लेल नित्तह नञि एताह कोनो औतार
आधा छिछा रहि जाइछ 'अरबिन' जीवनक सभटा गजल
ओझरल रदीफो काफिया आ माथ पर मिसरा सवार

२

कानिकए बड़ी काल नेना हारि कए चुप भए गेलै
लगैए एहि ठामक सभ कान दिल्ली भए गेलै
पागधारी मगन छथि अपनहि बनायल कूपमे
हाथ भरि नम्हर जखनकि टीक दिल्ली भए गेलै
पेट, बासन, मुँह, जेबी, लोक वेदक सभ सिंगार
गाम, घर, सीमान सभकेँ छुछ दिल्ली कए गेलै
ठेठ दिल्लीसँ चलल अछि प्रगतिक दाबा सूनामी
अनघोल दिल्लीमे भेलै जे देश दिल्ली भए गेलै
जे भेला औतार, पैगम्बर, मसीहा सन कनेको
सभकेँ पोसुआ बना 'अरबिन' दिल्ली लए गेलै।

३

मोनकेँ छः पाँच छोड़ू, गिरह राखब नीक नञि
हाथमे साबून लए कए फागु खेलब नीक नञि
आदम जकाँ जन्नतकेँ वर्जित फलपर नञि अहाँ लगाऊ
क्षण भरिक जे खेल, सदिखन सएह खेलब नीक नञि
शब्दक औजारसँ भड़काएब लोकक भावकेँ

खेल छै ई सहज किंतु ई खेल खेलब नीक नञि
'ढ़ाइ आखर प्रेम' पढ़ि पंडित भेला फक्कर कबीर
अहाँ एकरा खेल बूझि एकरासँ खेलब, नीक नञि
हे! मखौलक वस्तु नञि थिक एहि प्रकृतिक उपादान
माटि, पानि कि रौद, हवासँ अद्भुत खेलब नीक नञि
खन आजादी, खन किराँती, खन चुनाओक खेल बेल
पहिर खद्धर खेलैत अएलहुँ, आर खेलब नीक नञि
मृत्युकेँ खेलौर बूझि खेललहुँ सगर जिनगीक खेल
आब लगैछ जिनगीसँ 'अरबिन' एना खेलब नीक नञि।

४

की कही एहि बाढ़िमे डगरक कथा खिस्सा खराप
समाधि आरयमे खराप, ससुरारिमे बेसी खराप
बाढ़िमे छप्पर निपत्ता, भेटल तारपोलीन खराप
चाऊर खरबहे छलै आ दालि किछु बेसी खराप
बाढ़िमे भेटत कतए किछु नीक बोली कि वचन
मुखियाक बोली ओलसन, बी.डी.ओ. क मुँह खराप
डाग्डरक तँ कथे नञि, एहि बाढ़िमे औषधि खराब
एहि खरबहा हालमे धीया पूताक मोन खराप
चढ़ल बाढ़ि आ सूचना सम्वादक साधन खराप
हाकिम सभक वाहन खराप अछि, नाहक पेनी खराप
की घसै छी बाढ़िपर 'अरबिन', अहाँक माथा खराप
मतला तँ बकबासे जकाँ, मकता कने बेसी खराप

कुमार पवन[1]

नहि बिसरैछ

नहि बिसरैछ....नहि बिसरैछ
एको पलक लेल नहि बिसरैछ
जाड़क ओ ठिठुरैत कनकनायल भोर....

सघन कुहेसकेँ चीरैत
मध्यम गतिएँ आगाँ बढ़ैत
बिलमल छल मुजफ्फरपुर टीसनपर
अवध आसाम एक्सप्रेस
स्लीपरक कोच नम्बर सातमे
इक्का दुक्की लोक सभ
टायलेट दिस अबैत जाइत
बाकी यात्री सभ मारने गुबदी अलसाइत....
चाहबला बिस्कुटबला
अपन अपन समानक
सस्वर विज्ञापन करैत
कऽ रहल छल जड़ताकेँ भंग....
कि तखनहि ओ
चढ़ल छल बॉगीमे चुपचाप
प्रायः दस बर्खक दुब्बर पातर धुआ
कँचि आयल आँखि
बहैत सुड़सुड़ाइत नाक
मैल चिक्कट फाटल शर्टसँ
कहुना कऽ झँपने अपन देह
गर्दनिसँ ठेहुन धरि

---

1 वास्तविक नाम- डॉ. पवन कुमार झा, जन्मतिथि- २७/१२/१९५८; स्थायी पता- ग्राम+पत्रालय मुरैठा; भाया-कमतौल, जिला-दरभंगा, बिहार ८४७३०४; वर्त्तमान पता- पी. जी. टी. (हिन्दी), केन्द्रीय विद्यालय, कटिहार, (बिहार)- ८५४१०५; शिक्षा- एम. ए. (हिन्दी), बी. एड., पी. एच. .; आजीविका-केन्द्रीय विद्यालय संगठनमे पी. जी. टी. (हिन्दी)क रूपमे कार्यरत; लेखन–विगत शताब्दीक नवम् दशकक प्रारंभमे कविता लेखनसँ साहित्य कर्म प्रारंभ। प्रायः डेढ़ दशक धरि कविता, कथा, व्यंग्य आ आलोचनात्मक निबंधक विरल लेखन। एक दशकक मौनक बाद लेखनक दोसर पारी २००८ ई.मे प्रारंभ। शीघ्रहि कविता संग्रह, कथा-संग्रह आ व्यंग्य संग्रहक प्रकाशनक तैयारी।

मुलकल कठुआयल खाली खाली पएर....

निःशब्द लागल बहारय ओ
बॉगीमे छिड़िआयल
प्रयुक्त परित्यक्त पदार्थ सभ
खाली डिस्पोजेबुल कप
खोइया चिनिञा बादामक
सिगरेटक मिझायल शेषांश
सिट्ठी तमाकुलक
अँइठ कुइठ भरल कागजी प्लेट....

मारि कऽ ठेहुनियाँ निहुरैत
निचला बर्थ तर ढुकैत
चीज वस्तु सभकेँ
एम्हर ओम्हर घुसकबैत
एतऽ सँ ओतऽ धरि बॉगी भरि
बहारैत रहल....बहारैत रहल
खुजि कऽ ट्रेन अपन गतिसँ बढ़ैत रहल....

खतम कऽ काज
पसारि देने रहय ओ
अपन कठुआयल हाथ
एम्हर बॉगी भरि पसरल देखि गंदगी
रातिमे जे यात्री सभ भेल रहथि परेशान
तनि गेल छलनि एखन हुनके सभक चेहरा
देखि कऽ एहि अवांछित याचककेँ
क्यो असहज
देखि छौड़ाक घिनायल धुआ
प्रश्नाकुल क्यो जे
कोन लापरबाहक ई अछि संतान
देशक बेसम्हार जनसंख्याक प्रति चिंतित क्यो
विस्मित क्यो
आखिर विदाउट टिकट ई सभ चलैत अछि कोना
क्यो क्यो तँ एकदम स्पष्ट छलाह
चोरक गिरोहक तँ ई अछि एजेंट....

जाड़क ओहि कनकनायल भोरमे
कोच नम्बर सातक बोनाफाइड यात्री सभ
मसृण कम्बलक उष्णतामे सुटकल
करैत रहलाह धुरझाड़ विमर्श
जनसंख्या विस्फोटपर
असुरक्षित यात्रापर बाल मजदूरीपर
सरकारक असफलतापर
देशक दुर्दशापर
आ ओम्हर ओ
दस बर्खक गरजू अबोध मजदूर
सभ किछु सुनैत रहल
सुनियो कऽ टारैत रहल
ठोरपर ठोर सटौने
एक एक व्यक्ति लग जाइत रहल
अप्पन नान्हिटा खाली हाथ
बेर बेर पसारैत रहल....

नहि बिसरैछ....नहि बिसरैछ
एको पलक लेल नहि बिसरैछ
खजूर पातक बाढ़नि पकड़ने ओ
वाम हाथ
याचनामे पसरल ओ

खाली खाली दहिन हाथ
आ काँचीसँ भरल ओ चमकैत आँखि दून
नहि बिसरैछ....।

काल्हि तँ रवि छै

ओ आइ मुदित छलाह
दूनू बेकती कामकाजी
कहुना कऽ एक दोसरासँ राजी
बूढ़ छलथिन माय बाप
तीन तीन टा बाल बच्चा अध्ययनरत
पलखति नहि दम लेबाक एक दोसराक हाल पुछबाक
दगमगाइत सम्हरैत

कोसक कोस दौगैत
कण कणकेँ दुहैत
क्षण क्षण हकमैत
मुट्ठीमे बसात पकड़ैत
ठेहिआयल छलाह
मुदा, आइ मुदित छलाह

मुदित छलाह जे
सप्ताहक आइ छैक अंत
काल्हि तँ रवि छैक
रहब काल्हि निश्चिंत
काल्हि तँ रवि छैक....

जदपि ओ नीक जकाँ जनैत छलाह
राखल छनि तैयार कयल
काजक दीर्घ पुर्जी
काजक आगाँ अपन कोन मर्जी
बजौने छनि काल्हिए दर्जी
काल्हिए जुटयबाक छनि घरक खर्ची
कीनबाक छनि माय बापक लेल दबाइ
ट्यूटर बिनु अटकल छनि बेटाक पढ़ाइ
ठीक करयबाक छनि टी. बी.
कतोक दिनसँ पत्नी छथिन्ह परेशान
गैसक चूल्हि कऽ रहल छनि हरान
नोकरी करथु कि भुकभुकाइत चूल्हिसँ संघर्ष
सऽख तँ भइए गेलनि सुड्डाह
मुदा, तैयो ने कऽ सकैत छथि आह....

से ओ नीक जकाँ जनैत छलाह
जे पछिले अनेक रवि जकाँ
कल्हुको रवि आयल
जेना अबैत रहल अछि
आबि कऽ चलि जायत
जेना जाइत रहल अछि
औचके मोन
चलल छलनि प्रश्नोत्तर
की सरिपहुँ काल्हि रवि रहए?

की सरिपहुँ काल्हि रहब निफिक्रिर?
नहि!
जिनगी मे कोनो रवि कहाँ?
समय बीतैत अछि अविराम
जिनगीमे कतय अछि आराम?
तदपि पता नहि किएक
बना कऽ रखैत एकटा सुखद भ्रम
ओ आइ मुदित छलाह
चलू सप्ताहक आइ छैक अंत
काल्हि तँ रवि छैक
रहब काल्हि निश्चिंत
काल्हि तँ रवि छैक

श्री विद्यानन्द झा[1]

कोशीक ताण्डव

पूर्व मिथिला कोशी कातक चहुँदिशि करै किलोल।
अन्न-वस्त्रसँ वंचित भए बसथि केम्प धनजोर॥
नेना-भुटका ओ समरथुआ क्यो नहि रहल सरपोक।
पतिएँ पत्नी, पुत्र पौत्रसँ छिन्न-भिन्न चहुँओर।।
बिपदा मारल देह नचारी गेल अन्न-अन्न बेहाल।
जल बिचि बसि कऽ प्यास मरै अछि प्राण पाबि दुत्कार॥
नर ओ नर रिपु संग निभै किनको मुख नहि अपमान।
विधिना लिखेलन्हि अपर विधान हुनकर नहि परिमाण॥
कष्टक अन्त नहि कहुखन देखलहुँ कष्टहि बितय प्राण।
भूखक ज्वाला दग्ध करै अछि- स्नेह-प्रेम-सम्मान॥
पिता पुत्रसँ झपटि खाए छथि- रोटी-नोन महान।
जठरानल धधकल अछि सभतरि नहि बुझथि संतान॥
सर्व स्वांत कएलन्हि कोशी माता नहि किछु बाँचल जोर।
पूर्व मिथिला कोशी कातक चहुँ दिशि करए किलोल॥
एहि विचि देखलहुँ अद्भुत ''देखना'' ''मारिचक'' भरमार।
मौका पाबि लूटि रहल अछि सेवा भेल व्यापार॥
दुनियाँ दौड़ल बाँहि पसारि कऽ, बैसोलक घड़जोड़ि,
अन्न-वस्त्र ओ आलिङ्गन दए, कएलक भाव-विहोर॥
सचमे! दुनियाँ एखनहुँ बाँचल- सत्य भेल नहि थोड़।
श्रृष्टि विधाता रक्षा करता, नहि होउ कमजोर- नहि होउ कमजोर।

[1] पञ्जीकार (प्रसिद्ध मोहनजी) जन्म-०९.०४.१९५७,पण्डुआ, ततैल, ककरौड़(मधुबनी), रशाढ़य(पूर्णिया), शिवनगर (अररिया) आ' सम्प्रति पूर्णिया। पिता लब्ध धौत पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया|पितामह-स्व. श्री भिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष धरि १९७० ई.सँ १९७९ ई. धरि अध्ययन,३२ वर्षक वयससँ पञ्जी-प्रबंधक संवर्द्धन आऽ संरक्षणमे संलग्न। कृति- पञ्जी शाखा पुस्तकक लिप्यांतरण आऽ संवर्द्धन- ८०० पृष्ठसँ अधिक अंकन सहित। गुरु- पञ्जीकार मोदानन्द झा। गुरुक गुरु-पञ्जीकार भिखिया झा, पञ्जीकार निरसू झा प्रसिद्ध विश्वनाथ झा- सौराठ, पञ्जीकार लूटन झा, सौराठ। गुरुक शास्त्रार्थ परीक्षा- दरभंगा महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक यज्ञोपवीत संस्कारक अवसर पर महाराजाधिराज(दरभंगा) कामेश्वर सिंह द्वारा आयोजित परीक्षा-१९३७ ई. जाहिमे मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक म.म. डॉ. सर गंगानाथ झा छलाह।

१. केम्प- शिविर
२. धनजोर- सम्पन्न, धनी
३. सरपोक- खतरा मुक्त, चिन्तामुक्त
४. नर-रिपु- सर्प इत्यादि
५. मारिच- मायावी राक्षस
६. घड़जोड़ि- एक संग

दहेज दानव

पुत्र हुनक अभियन्ता छन्हि।
मनमे बहुत सेहन्ता छन्हि।
बेटी बापक टिक पकड़ि कऽ।
शोणित चूषक इच्छा छन्हि।

बिन दामक नहि बेटा बियाहब।
वरु कुमार रहि जाथि।
व्यापारी छी व्यापार करब।
वरु बेटे बिकि जाथि।

वरक बाप ओ ओढ़ङ्गल बैसल।
क्षण-क्षणमे फुचियाथि।
जे किछु मङ्गलनि से बड़ कम अछि।
कन्या दाता स्वयं बिकाथि।

कन्यादाता अरमान करथि।
भलमानुष भेटि जाथि।
माय बन्धु ओ कुटुम बेरागन।
द्वार-द्वार घुरियाथि।

की मांगी ओ की नहि मांगी।
एहिपर नहि किछु सोच-विचार।
जे फूरय ओ सभ किछु मांगी।
माँगक अन्त नहि, कतऽ उदार।

लोलूप जीव किछु नहि बूझय।
सभ बूझय- धन-पोषनिहार।

अनकर धनपर लूटि मचाबथि।
संसारक सब चोषनिहार।
कन्या दाता भए बेगर्तित।
अंट-शंट गछि लेथि।
मिथ्यालाप कखनहुँ नहि हितकर।
तकर करथि निर्लेख।

विवाह एक धर्म थिक विवाह एक कर्म थिक।
धर्म-कर्म राखि सकी समाजक ई मर्म थिक।
दहेज एक लोभ थिक दहेज एक रोग थिक।
लोभ-रोग छोड़ि सकी हमर ई धर्म थिक। हमर ई धर्म थिक...

/

मो. गुल हसन[1]

सभटा चौपट्ट भऽ गेल

बड़ मेहनतसँ खेती कएलहुँ
नीक-नीक धानक बीया लगेलहुँ
गोबर-छाउरकसँ खेत भरि हम
कादो कए हम धान लगेलहुँ
मुदा नहि जानि विधना कि लिखि देल....
की कहुँ भाय सभटा चौपट भऽ गेल।

धानक शान कहल नइ जाइ छल
हरियर कंचन धान लगै छल
तुलसी फूल-बासमतिसँ
गम-गम करैत हमर खेत भरल छल
मुदा, बाढ़िक चपेटमे सभ चल गेल
की कहुँ भाय सभटा चौपट भऽ गेल

[1] आई. कॉम, जन्म तिथि- ५. ०१. १९६४ ई., पिता- अब्दुल रशीद भरहुम, ग्राम+ पोस्ट- बेरमा, जिला- मधुबनी

कमला तँ मानि गेली
मुदा, कोशी बिगड़ल छल
आ भुतहीकँ तँ बाते नहि करु
जेना सोझहे ओ उलटल छल
नहरक पानि आ वर्षा मिलि
दुनू खेलल ऐहन खेल
की कहुँ भाय सभटा चौपट भऽ गेल

सरकारक अभियान चलल
नेता सभ केलनि पहल...
एक हजार रुपैआ आ एक क्वीन्टल अनाज
देव से सुनि मनमे राहत तँ जरुर भेटल,
मुदा हे, अढ़ाइये सए रुपैआ पचीसे किलो चाउर
एतनेपर ओहो ब्रेक लागि गेल
की कहुँ भाय सभटा चौपट भऽ गेल

लिखैत ई बात गुल हसन कहैए की कहुँ भाय.....
आब हमरा किछु नहि फुरैए...
किऐक तँ हैं
केलहा-धेलहा तँ सभटा पानिमे चल गेल
की कहुँ भाय सभटा चौपट भऽ गेल।

मनोज कुमार मंडल[1]

बहीन

जखन बहीन अहि घर जनम लेल,
लार-प्यार व स्नेहक बरखा केलहुँ
स्नेहक पुतला बना हम हृदयक मंदिरमे बैठाउल
जखन स्नेह यौवन छूलक
दुनियाँ कहैछ जाइछथि ई
हम पुछलहुँ की कहैत छी?
सबहक बहीन जाइ छाथि।

आँखिमे पानि व्यथित हृदयसँ
हम बाजल- ‘जो बहिन तू अपन घर,
जतए खुशीसँ भरल बाग होउ
दुखक छाँह तोरा नहि भेटउ
स्नेहक जतए राज होउ,
कहैत-कहैत आँखिसँ गिरल
पानिक दू गोट बून्न
लोक सहृदए कहलक- ‘भुलि जाओ अहाँ
हम पुछलहुँ की कहैत छी?
सबहक बहीन जाइ छथि।
महिना बीतल, बरखक बरख बीतल
हमहुँ जेना भुलि जैंका गलहुँ
नव बन्धनमे बान्हि हम
मायामे समाए गेलहुँ
जखन कहियो मन परल पुरने स्नेह उमैर परल,
स्नेहक मोटरी बानिह पहुँचलहुँ
लोग कहलक- ‘भुलि जाओ अहाँ
हम पुछलहुँ की कहैत छी?
सबहक बहीन जाइ छथि।

[1] पिता- श्री भगवान दत्त मंडल, ग्राम, पोस्ट बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी

डोली लागल बरात साजल छल,
सबहक आँखि नोरसँ भरल छल
पग भारी छल,
आगू डोली, पाछु बरात छल
हम पुछलहुँ केहन ई उत्सव?
सभ कहलक- भूहल जाओ अहाँ
हम.......

आमोद कुमार झा[1]

मैथिल नँइ छोटका

नइ हइ ककरो गरज
शहरे अउरमे करे हइ
बड़का बड़का पार्टी आ सम्मेलन
गाम अउरमे हमरा सुहूनकँ
नइ बुझइ हइ मैथिल..
हमरा अउरकँ बुझइ हइ '**छोटका**'
गिरहत अइयग एक दिन
बजलिऐक आ बइसे गेलिऐक..
खुर्सीयेपर फज्झति कऽ कऽ
उठा देने छऽल गऽ बभना
हमरा सुहून नइ बुझइ गमइ हिअइ
'**मैथिली**' हइ हमरा अउरक भाषा

[1] पिता: श्री दयानन्द झा, ग्राम : मोगलाहा, पोस्ट: मिसरौलिया, भाया: बाबूबरही, जिला : मधुबनी, जन्म : ०१/११/१९६८, शिक्षा: बी.ए.(मैथिली), एम.ए. (मैथिली), एन.इ.टी जुलाइ १९९६, बी.इ.टी।

सभ दिन बएह अउर बुझलकै
माने विद्यापति हइ ओकरे
अउरक बुझू दादा परदादा
ई युग हइ लोकक
कहबी हइ दस टके नइ नितराय
दस सगे नितराय
नइ करइ हइ कहियो
राजा लोरिकक समारोह
देवता सलहेसक फंगसन
कारिख पघियारक गाथा
कियो कहाँ याद करइ हइ
बंठा चमारकेँ..
करौक एकर परचार परसार
गाम घर चौराहा अउरपर
देखियौक ने छिनि लेतइक कियो
हमरा अउरक माइक भाषा
ककर बापक दिन हइ
सिर लेबइ आ सिर कटा देबइ।

गजेन्द्र ठाकुर

आकाश मध्य लिखल हमर लेख

कागजपर लिखल क्यो पढ़त
क्यो नहि
मुदा ओतए जे उठाओत आँखि
देखत अंगैठी-मोड़ करैत
उठैत भुजाक स्पर्शसँ करत अनुभव
जे विश्वक समाप्ति होएत
किछु लोक बचत
तखन करब कोन काज
ने कोनो काज बाँचत नहि
ने मशीन ने जंजाल
सुत्र चारू कात
ने लूरि खेती करबाक हमरा
कागत रंगबाक लेल रोशनाइ नहि
वादक सम्बल अर्थहीन
विकराल राति सोझाँ ठाढ़
गरजैत मेघ रौद्र
मेघमे विद्युत
वृत्रहन्ता इन्द्र चीरैत छथि मेघ
कवष ऐलूषक ऋक्
शूद्र कवि हमर
विद्युत् प्रकाशसँ प्रकाशित मेघक शक्तिपात्
शरीरक मध्य हजारक-हजार धार
रक्तक प्रवाहक साँपसन टेढ़-मेढ़ चालि
हमर मोन दौगि रहल
एहि अन्तर्मनक धारक बीच
ओहि बहिर्जगतक विद्युतसँ तीव्र
चतुष्पात् पुरुष वा ब्रह्म
मुदा एकपाद ई जगत्
अन्तर्मनक प्रचोदयिता
आसुरी वृत्र आ राक्षसी पणि
शारीरिक धार संचार तन्त्र

चलू समुद्र दिस हमर नाड़ीतंत्र आ एकर
लहरिमे डूमैत-उगैत
अपन भोगल यथार्थसँ बहार कएलहुँ मधु
आहुति देबा लेल ओहि समुद्रमे
आ तखने शरीरक नदी-धार
लहरिमे डुमैत करैत अछि आनन्दित
जागरित मोनसँ निकसैत वाणी
पीपड़क पातक नाड़ीतंत्र सन
इला-सरस्वती आ भारती छथि
विद्युत् बाल लेल भोजनक करैत सरंजाम
ज्योतिक हम साधक
सन्दीपनकूट हुअए लावण्यमय
सहस्त्रशाख विद्युत् हिरण्यमयी
सहस्त्रजित् अजस्त्र अन्तर्मुखी
आ
ऋतं बृहत्